शाइरी के नये दौर

चौथा दौर

वर्त्तमान युगीन ख्याति-प्राप्त तीन शाइरोंका
जीवन-परिचय और चुना हुआ श्रेष्ठ कलाम

१ अख़्तर शीरानी
२ अब्दुलहमीद अदम
३ एहसान दानिश

गोयलीय

ज्ञानपीठ-लोकोदय-ग्रन्थमाला—हिन्दी ग्रन्थाङ्क—११०

शायरी के नये दौर

चौथा दौर

भारतीय ज्ञानपीठ • काशी

ज्ञानपीठ-लोकोदय-ग्रन्थमाला
सम्पादक और नियामक
श्री लक्ष्मीचन्द्र जैन

प्रथम संस्करण
१९६० ई०
मूल्य ~~तीन रुपये~~

प्रकाशक
मन्त्री, भारतीय ज्ञानपीठ
दुर्गाकुण्ड रोड, वाराणसी

मुद्रक
बाबूलाल जैन फागुल्ल
सन्मति मुद्रणालय, वाराणसी

परमादरणीय महापण्डित राहुल सांकृत्यायनकी
पुनीत सेवामें

"है एक दरे - पीरे - मुग़ाँतक ही रसाई
हम बादः-परस्तोंका कहाँ और ठिकाना ?"

उठाये कुछ वरक़ लालेने, कुछ नर्गिसने, कुछ गुलने
चमनमें हर तरफ़ बिखरी हुई है दास्ताँ मेरी
उड़ाली क़ुमरियोंने, तूतियोंने, अन्दलीबोंने
चमनवालोंने मिलकर लूटली तर्ज़े - फ़ुग़ाँ मेरी

—इक़बाल

विषय-सूची

अख़्तर शीरानी

अदम

★ ये नज़्में शेरो-शाइरीके द्वितीय संस्करणके उक्त पृष्ठोंमें मुद्रित हो चुकी हैं। प्रस्तुत भागमें पुनः मुद्रित करना उचित नहीं समझा गया।

एहसान दानिश

* ये नज़्में शेरो-शाइरीके द्वितीय संस्करणके उक्त पृष्ठोंमें मुद्रित हो चुकी हैं। प्रस्तुत भागमें पुनः मुद्रित करना उचित नहीं समझा गया।

सहायक-ग्रन्थ-सूची

प्रस्तुत चौथे दौरमें शाइरोंका कलाम उनकी निम्नलिखित कृतियोंसे संकलित किया गया है—

अख़्तर शीरानी

कुलियाते-अख़्तर शीरानी—प्रकाशक, मकतबा अनोखा जासूस, कलाँ महल दिल्ली। १९५७ ई० में प्रकाशित। २० X ३० साइज़ १६ पेजी पृ० ६४८। इसमें अख़्तरके सात—१. सुबहे-बहार, २. अख़्तरिस्तान, ३. लालातूर, ४. तयूरे-आवारा, ५. शहनाज़, ६. शहरूद, ७. नग़मए-हरम ग्रन्थ संकलित हैं।

अदम

पेचो-ख़म—प्रकाशक, इदारा फ़रोग़े-उर्दू लाहौर। पृ० १९२, प्रकाशन-तिथि मुद्रित नहीं। ८८ पृष्ठोंमें नज़्में और १०४ पृष्ठोंमें ग़ज़लोंका चयन है।

बतीमे—प्रकाशक, आईनए-अदब लाहौर। मार्च १९५७ में प्रकाशित। पृष्ठ-संख्या १२८।

शहरे-फ़रियाद—प्रकाशक, मकतबामाहोल कराची। जनवरी १९५६ ई०। पृ० २०८।

गुलनार—प्रकाशक, आईनए-अदब लाहौर। प्रकाशन-तिथि मुद्रित नहीं, पृ० १२८।

क़सरे-शीरीं—प्रकाशक, मकतूबआते माहौल कराची। १९५६ ई० पृ० २०८।

शहरे-ख़ूबाँ—प्रकाशक, क़ौमी कुतुबख़ाना रावलपिण्डी। प्रकाशन-तिथि मुद्रित नहीं। पृ० १४३। क़तआतकी संख्या २८०।

ख़राबात—प्रकाशक, नया इदारा लाहौर। पृ० १९१, प्रकाशन-तिथि अङ्कित नहीं।

रम-आहू—प्रकाशक, नया इदारा दिल्ली। पृ० १७५, प्रथम संस्करण। प्रकाशन-तिथि अङ्कित नहीं।

इन आठ संकलनोंमें पेचोख़मके ८८ पृष्ठोंमें नज़्म और शहरे-ख़ूबाँके १४३ पृष्ठोंमें २८० क़ते हैं। शेष किताबोंके ११४६ पृष्ठोंमें ग़ज़लोंका संकलन है।

एहसान दानिश

नवाए-कारगर—प्रकाशक, मकतबा दानिश लाहौर। २० × ३० साइज़ १६ पेज़ी ३६० पृष्ठ। ३०४ पृष्ठोंमें नज़्म, १६ पृष्ठोंमें हिन्दी गीत और ४० पृष्ठोंमें ग़ज़लोंका संकलन है। प्रकाशन तिथि मुद्रित नहीं, सम्भवतः १९३५ ई० के लगभग प्रकाशित।

आतिशे ख़ामोश—प्रकाशक, मकतबा दानिश लाहौर। २० × ३० साइज़ १६ पेज़ी पृ० २००। १५० पृष्ठोंमें नज़्मों और ५० पृष्ठोंमें ग़ज़लोंका संकलन है।

मुक़ामात—प्रकाशक, मकतबा दानिश लाहौर। २० × ३० साइज़ आठ पेज़ी २२४ पृष्ठोंमें १७४ नज़्मों और ग़ज़लोंका संकलन है।

जादए-नौ—प्रकाशक, मकतबा दानिश लाहौर, २० × २६ साइज़ १६ पेज़ी पृ० १२८। १२८ क़तआतका संकलन। १९४० ई० में मुद्रित।

दर्दे-जिंदगी—प्रकाशक, दानिश बुकडिपो लाहौर। २० × ३० साइज़ १६ पेज़ी पृ० ३३६। नज़्मों, गीतों और क़तोंका संकलन। १९३४ ई० में मुद्रित।

एक नज़रमें

अ़ख़्तर शीरानी

अख़्तर शीरानीकी शाइरी, प्रेम और प्यारकी शाइरी है। वे उर्दूके ऐसे रोमानी शाइर हैं, जिनका रोम-रोम प्रेम और आसक्तिमें भीगा हुआ है। वे सूफ़ी शाइरोंकी तरह न तो ख़ुदासे इश्क़ फ़र्माते हैं, न वे वेश्याओंके कूचेको इश्क़े-हक़ीक़ीका ज़ीना समझते हैं। न वे किसी काल्पनिक प्रेयसीके काल्पनिक विरहमें आँसुओंके दरिया बहाते हैं, न वे किसी ऐसी अलभ्य हूरपर आसक्त होते हैं, जिसपर मनोभाव व्यक्त करना भी सम्भव नहीं और इकतर्फ़ा इश्क़में एड़ियाँ रगड़-रगड़कर मरनेके सिवा दूसरा उपाय नहीं। न वे पुराने शाइरोंकी तरह ऐसे बेवफ़ा ज़ालिम, हरजाई हबीबको दिल देनेकी ग़लती करते हैं, जो आशिक़के दिलकी मिट्टीके ढेले जितनी भी क़ीमत नहीं समझता। शराब पीता है, महफ़िलमें कभी इससे और कभी उससे आँख लड़ाता है, आशिक़ोंको धक्के देकर बाहर निकलवा देता है और ज़रूरत पड़नेपर धौल-धप्पा करनेमें भी नहीं चूकता।

अख़्तरका इश्क़ इकतर्फ़ा नहीं है। उनकी प्रेयसी भी अपने प्यारेको मन-वचन-कायसे चाहती है। वह भी 'अख़्तर'की तरह अपने सीनेमें प्रेम-विभोर हृदय रखती है। अख़्तरकी चाहतको अपने जीवनकी अमूल्य निधि समझती है, और अख़्तर अपनी प्रेयसीको विषय-वासनाका साधन न समझकर उसे निश्छल भावसे चाहते हैं। अपने हृदय-मन्दिरमें अभिषिक्त करके उसकी पूजा करते हैं। प्रेमको वे सामाजिक अपराध अथवा जीका जंजाल न समझकर मानवोचित, पवित्र और स्वाभाविक समझकर मुक्त कण्ठसे उसका बखान करते हैं।

लेकिन प्रेम और आसक्तिसे लबालब भरे होनेपर भी अख़्तरके जामे-शाइरीमें वह प्रेमसुरा नहीं, जिसे पीकर मन-मयूर नाच उठे और कुछ दिनोंके लिए सुध-बुध बिसार बैठे। न उनके यहाँ वह विरह-वेदना है, जिससे

हृदय तड़प उठे और आँखसे आँसू झरने लगें। उनकी प्रेम और विरहको शाइरी स्थायी प्रभाव नहीं छोड़ती। सम्भवतः इसका कारण यही है कि वे 'सलमा'के विछोहके बाद आपेमें न रह सके और उनके सुरासेवी साथियों-ने उन्हें कुमार्गरत कर दिया। वे प्रेमी न रहकर कामुक बन गये। काश 'अख़्तर'ने सलमाकी विरहाग्निमें धूनी रमाली होती। उनके रोम-रोमसे 'सलमा-सलमा'की ध्वनि प्रस्फुटित होती तो उनका कलाम भी आज अमर हुआ होता और राधा-कृष्ण, हीर-राँझाके समान न सही शरतबाबूके देव-दास और पारोकी तरह तो प्रसिद्ध हुए होते।

अब्दुलहमीद अदम

अदमने कभी इश्क़ नहीं किया। इसलिए उनके कलाममें वह आग नहीं, जो प्रेमी-प्रेमिकाओं-द्वारा प्रज्वलित होती है। न उनके यहाँ वह व्यथा और वेदना है, जो प्रेम-ज्वालामें झुलसनेपर होती है। न उनके यहाँ वह तड़प और बेचैनी है जो विरहीको तारे गिनवानेपर मजबूर करती है। अदम किसी चन्द्रमुखीके चकोर न होकर सुरा-प्रेमी हैं। सुरा ही उनकी प्रेयसी है, उसीसे आँखमिचौनी खेलते रहते हैं। उसीको पानेमें दिन-रात व्यस्त रहते हैं और उसीके नशेमें झूम-झूमकर शेर कहते हैं। अदम न राजनैतिक हैं, न मज़हबी और न किसी दल विशेषके प्रचारक। न वे अपनी शाइरीमें दार्शनिक पुट देते हैं, न लीडराना रंग भरते हैं, न कोई पैग़ाम उगलते हैं। सिर्फ़ दिल बहलावेके लिए शेर कहते हैं। स्वभावतः शाइराना दिलो-दमाग़ पाया है। इसलिए जो मनमें भाव उठते हैं, अनायास नौके-क़लमसे काग़ज़पर थिरकने लगते हैं।

एहसान दानिश

मैंने पन्द्रह वर्ष पूर्व शेरो-शाइरीके लिए लिखा था—"एहसान शोषित वर्गके पैग़म्बर कहलानेके अधिकारी हैं। वे उन्हींके लिए जीते हैं, उन्हींके

लिए सोचते हैं और उन्हींकी व्यथाओंको काग़ज़पर मूर्त्तिवान् रूप देते हैं। उनके यहाँ निरी कल्पना, कोरी भावुकता और उड़ान नहीं। उनका एक-एक अक्षर आपबीती और जगबीतीका सवाक चित्रपट है। उनका कलाम सुनते अथवा पढ़ते हुए प्रतीत होता है कि हम सब दृश्य और घटनाएँ अपनी आँखोंसे देख रहे हैं। उन्होंने जीवनके लक्ष्यतक पहुँचनेमें जिन कण्टकाकीर्ण और दुर्गम मार्गोंको तय किया है, उसीमें जो देखनेको मिला, उसे काग़ज़पर चित्रित कर दिया है। 'एहसान' अपने सीनेमें एक दहकती आग लिये फिरते हैं और उसी आगकी चमकमें जो देखते हैं, शाइराना दिलो-दमाग़से उसे चमका देते हैं।" 'एहसान' तफ़रीह्-के लिए या दमाग़ी ऐय्याशीके लिए शेर नहीं कहते। उनका कहना है कि "मैं मुशाअ़रेमें शोर-और-शग़फ़ (प्रशंसात्मक आवाज़ें या तल्लीनता) की हवाई और हंगामी दादो-तहसीन (वाह-वाह) से ख़ुश नहीं होता, बल्कि हाज़रीन (उपस्थित समूह) की आँखोंमें आँसुओंकी झिलमिलाहट और लबोंपर मुहरे-ख़ामोशी (संलग्नता) देखकर अपनी नज़्मको कामयाब समझता हूँ।" और यह कामयाबी क्या उन्हें सोफ़ेपर बैठकर सोनेके क़लम-से लिखनेमें नसीब हुई? बक़ौल किसीके—

हल करता है इफ़लासके उक़्दे वह सुख़नवर
जो हाथमें थामे हुए सोनेका क़लम है[1]

एहसानकी कामयाबीका राज़ उक्त शेरमें नहीं, अपितु हज़रत 'असर' लखनवीके इस शेरमें निहाँ है—

हमने रो-रोके रात काटी हैं
आँसुओंमें यह रंग तब आया

२६ जनवरी १९६० ई०]

---

१. अर्थाभावकी समस्याएँ वह शाइर सुलझा रहा है, जिसके हाथमें सोनेका क़लम है!

शाइरीके नये दौर

•



कलाम जिसका है, मैगज़े - हाफ़िज़ो - ख़ैय्याम
यहाँ वह 'अख़्तर' - ख़ानाख़राब है साक़ी !

अख़्तर शीरानी

'अख़्तर' शीरानीके पूर्वज टौंक रियासतके निवासी थे। वहींपर आपका ४ मई १९०५ ई० में जन्म हुआ। आपका जन्मका नाम दाऊदख़ाँ था और अफ़ग़ानोंके 'शीरानी' क़बीलेसे सम्बन्धित थे। होश सँभालनेपर आपने 'अख़्तर' तख़ल्लुस और शीरानी वंशज होनेके कारण अपनेको अख़्तर शीरानी लिखना पसन्द किया और इस नामसे आपने ख्याति पाई। आपके पिता हाफ़िज़ महमूदख़ाँ शीरानी फ़ारसी साहित्य और इतिहासके बहुत बड़े विद्वान् थे और फ़ारसी पिंगल-शास्त्रके भारतमें सर्वोच्च अधिकारी थे। हाफ़िज़जी १९१४ ई० में अपनी शिक्षा पूर्ण करके विलायतसे भारत वापिस आये तो आपने अख़्तरके लिए एक फ़ारसी-विद्वान्, एक व्यायाम-मास्टर और एक ख़ुशख़तनवीस-को नियुक्त किया।

परिचय

सन् १९२० में रियासत टौंकसे हाफ़िज़जी किसी कारणसे निर्वासित किये गये तो आप सपरिवार लाहौर चले गये, अख़्तर भी साथ थे। वहाँ हाफ़िज़जी प्रारम्भमें ओरियण्टल कालेज़के और बादमें पंजाब यूनिवर्सिटीके प्रोफ़ेसर रहे। अख़्तरने १९२२ ई० में मुंशी फ़ाज़िलकी परीक्षा पास की। आपके पिताकी उत्कट अभिलाषा थी कि 'अख़्तर' उच्च-से-उच्च शिक्षा प्राप्त करें, किन्तु अख़्तरकी शाइरीके शौक़ने यह क्रम चलने नहीं दिया।

अख़्तरने अपने अध्यवसायसे अरबी और अंग्रेज़ीका भी थोड़ा-बहुत अभ्यास कर लिया था, किन्तु व्यवस्थित रूपसे कालेजमें शिक्षा प्राप्त न कर सके। यूँ तो आपका बचपनसे ही शाइरीकी तरफ़ रुझान था, किन्तु लाहौरके वातावरणने उसे और भी हवा दी। १९२४ ई०में जब कि आप १९ वर्षके भी न हो पाये थे। आपकी पहली नज़्म 'जोगन' उर्दू-पत्रिकामें प्रकाशित हुई तो

शाइरीका शौक़

उर्दू-अदीबोंका ध्यान बरबस आपकी तरफ़ आकर्षित हो गया, और अपने-अपने पत्र-पत्रिकाओंके लिए नज़्में भेज देनेके लिए सम्पादकोंके तक़ाज़ोंका ताँता लग गया। जिस पहली नज़्मसे आपको ख्याति मिली उसके ५० में-से १४ शेर बतौर नमूना यहाँ दिये जा रहे हैं—

देखो! वह कोई जोगन जंगलमें गा रही है

....

देखो! वह कोई जोगन जंगलमें गा रही है,
मौसीक़-ए-हज़ींके[1] दरिया बहा रही है

....

हर लरज़िशे-सबामें[2] तूफ़ाँ उमड़ रहे हैं,
किस दुःख भरी अदासे तानें लगा रही है,
अठखेलियोंका सिन है, हँस बोलनेका दिन है,
लेकिन न जाने क्यों वह आँसू बहा रही है,

....

है एक सितार उसके आग़ोशे-नाज़नींमें[3]
दो नाज़ुक उँगलियोंसे जिसको बजा रही है,

....

जंगलके जानवर कुछ बैठे हैं उसके आगे
रो-रोके जिनको अपनी बिपता सुना रही है
ख़ूँख़्वार शेर भी हैं वहशी ग़ज़ाल[4] भी हैं,
लेकिन वह सबके दिलपर सिक्का जमा रही है,
कुछ साँप झूमते हैं रह-रहके मस्त होकर
इक मौजे-वज्द[5] उनकी रग-रग पै छा रही है,

---

१. व्यथापूर्ण संगीतके, २. हवाके कम्पनमें, ३. सुकुमार गोदमें, ४. उन्मत्त हिरण, ५. बेहोशीकी-सी लहर।

ताऊस[1] नाचते हैं, यूँ बेक़रार होकर
गोया हर-एक परमें बिजली समा रही है,
ऐसा समाँ बँधा है, ग़मगीं नवाइयोंसे[2]
रो-रोके जैसे फ़ितरत[3] तूफ़ाँ उठा रही है,
यह मोहनी बनी है किसके लगनमें जोगन ?
यह सैले-दर्द[4] किसके ग़ममें बहा रही है ?
हाँ शायद इसकी नन्ही मासूम आत्मामें
हरकी प्रेम-अग्नी लौके लगा रही है
हर बनमें, हर नगरमें, हर घरमें, हर डगरमें,
फिर-फिरके अपने मनकी चिन्ता मिटा रही है,
या हरकी जुस्तजूमें, पीतमकी आर्ज़ूमें
काशीसे आ रही है, मथुराको जा रही है,
या जगकी आफ़तोंसे तंग आके बनमें जाकर
परमात्माको अपना दुखड़ा सुना रही है,
देखो ! वह कोई जोगन जंगलमें गा रही है,

मित्रों और प्रशंसकोंका समूह

'जोगन' नज़्म प्रकाशित होते ही 'अख़्तर'की शाइरीका स्रोत फूट निकला। भारतके प्रायः सभी अच्छे-अच्छे उर्दू-पत्रोंमें आपकी नज़्में प्रकाशित होने लगीं और आपके मित्रों एवं प्रशंसकोंकी संख्या भी उत्तरोत्तर बढ़ती गई। अख़्तरकी रोमानी नज़्मोंने सबसे अधिक कॉलेजके युवक-युवतियोंको प्रभावित किया। लाहौरके वे युवक और युवतियाँ जिन्हें शाइरी और साहित्यसे दिलचस्पी थी, आपके यहाँ आने-जाने लगे। शाइरों, लेखकों

१. मोर, २. ग़मगीन गानेसे, दुःखपूर्ण संगीतसे ३. प्रकृति, ४. व्यथा का दरिया।

और साहित्यिकोंमें—नून-मीम राशिद, अहमदनदीम क़ासिमी, मिर्ज़ाअदीब, अलीरज़ा, सरदार करीमनवाज़, मुहम्मद जाफ़िरी, दिलबरहसन मसरूर, उमर फ़ारूक़ी, मुस्तफ़ाहुसैन, आशिक़ बटालवी, अज़ीमक़ुरेशी—जैसे सैकड़ों उदीयमान युवक अख़्तरकी साहित्यिक मित्रमण्डलीमें सम्मिलित होते गये। शाइरे-इनक़िलाब जोश मलीहाबादी और हज़रते-जिगर जब भी लाहौर आते अख़्तरके यहाँ ठहरते। आपने शाइरीके अतिरिक्त पत्र-सम्पादन-कलामें भी बहुत ख्याति पाई। आपके पत्रोंमें लिखने वाले—हसरत मोहानी, ताजवर नजीबाबादी, बाबाए-उर्दू अब्दुलहक़, आग़ाहश्र काश्मीरी, ख़ुशीमुहम्मद-नाज़िर, अब्दुलरहमान चुग़ताई, तसद्दुक़हुसैन ख़ालिद, मजाज़ आदि अनेक प्रतिष्ठित लेखक और शाइर थे। शाइराओं और लेखिकाओंमें—कनीज़ फात्मा हया, अदा बदायूनी, आइशाबेगम शमीम, नसरी न ख़ानम, आम्ना तमीम रज़ियाख़ातून रअना, शकीला अख़्तर, ज़ोहराबेगम, विशेप उल्लेखनीय हैं! अख़्तरकी मित्रमण्डलीमें केवल अदीब और शाइर ही नहीं थे, बल्कि पनवाड़ी, हलवाईसे लेकर उच्चवर्ग तकके सभी श्रेणीके व्यक्ति उसमें सम्मिलित थे। कुछ आपकी शाइरीसे, कुछ अदबसे, कुछ मेहमाँनवाज़ीसे, कुछ ख़र्चीले स्वभावसे और कुछ आपके मदिरा-पानसे आकर्षित होकर आपके यहाँ आते थे। यूँ तो भारतके इस कोनेसे उस कोनेतक आपके इष्ट-मित्र और प्रशंसक भरे पड़े थे। उनके पत्रोंका अम्बार लगा रहता था। अकेले लाहौरमें ही सैकड़ों बेशुमार ऐसे व्यक्ति थे, जो आपकी किसी-न-किसी ख़ूबीकी वजहसे आपके यहाँ आते-जाते रहते थे।

अख़्तरने शुरू-शुरूमें 'हिमायूँ'के सम्पादकीय विभागमें कार्य किया। फिर काफ़ी अर्सेतक 'सहेली' मासिक पत्रके सम्पादक रहे। मौलाना

पत्र-सम्पादन

'ताजवर' नजीबाबादीने 'शाहकार' प्रकाशित किया तो उसके सम्पादनमें भी आपने सहयोग दिया। मौलाना चराग़हसन 'हसरत'के 'शीराज़ा' पत्रका सम्पादन भी आपने किया। अख़्तरने १९२५में स्वयं अपना 'बहारिस्तान' पत्र जारी किया। इसके बन्द होनेपर १९२८ ई० में 'ख़यालिस्तान' निकाला और

१९३१ ई० में 'रोमान' पत्र जारी किया। लेकिन 'अख़्तर' द्वारा प्रकाशित सभी पत्र कुछ अर्से चलकर बन्द होते रहे। स्वयं अच्छे अदीब और पत्रकार होते हुए, एवं भारतके ख्यातिप्राप्त शाइरों और लेखकोंका सहयोग प्राप्त करनेपर भी व्यापारिक-सूझ-बूझ न रहनेके कारण 'अख़्तर' पत्र-पत्रिकाओंको स्थायी रूप न दे सके। बावजूद कई बार पत्र बन्द किये जाने पर भी, अख़्तरने उमंगमें आकर जब भी नवीन पत्र निकाला, अपनी लोकप्रियताके कारण बहुत जल्द ग्राहक जुटा लेते थे। लेकिन अख़्तरकी बेपर्वाही, फ़िज़ूलख़र्ची और व्यापारिक अनुभवहीनता पत्रोंको बन्द करनेके लिए बाध्य करती रहीं।

संगीत और चित्रकलाकी रुचि

अख़्तरको शाइरी और अदबके अतिरिक्त शास्त्रीय संगीतसे बहुत गहरा लगाव था। संगीतकी महफ़िलोंमें अक्सर शामिल होते रहते थे। चित्रकलामें बहुत रुचि रखते थे। सुन्दर लिपिकारोंको पसन्द करते थे, स्वयं भी बहुत ख़ूबसूरत अक्षर बनाते थे। प्रारम्भसे वर्तमान तककी फ़ारसी शाइरीका बहुत गहरा अध्ययन था। फ़ारसी शाइरीके हाफ़िज़, उर्दूके मीर और ग़ालिबके परिस्तार थे।

उदार और फ़िज़ूल ख़र्च

'अख़्तर'के निजी हालात लिखते हुए आपके अन्तरङ्ग मित्र हकीम नैय्यर वास्ती लिखते हैं—"न उनकी रात उनकी रात थी, न उनका दिन उनका दिन था।...हर छोटा-बड़ा उनका दोस्त था। हर एकसे बेतकल्लुफ़ीसे मिलते थे। उन्होंने घर और घरके हालातसे कभी ताल्लुक़ नहीं रक्खा। वालिद साहब नाराज़ थे और इसलिए वालिद (पिता) के डरसे वालिदा (माता) उनसे छिपकर मिलतीं और समझातीं, लेकिन मामला समझाने-बुझानेसे हल नहीं होता था। उन्होंने ख़ुद बीवीकी ज़रूरियाते मईशत (पत्नीके जीवन-निर्वाह, भरण-पोषण) की जानिब कभी तवज्जह नहीं की। हाफ़िज़ साहब (अख़्तरके पिता) उनकी बीवीका अपनी बेटीकी तरह ख़्याल रखते थे। लेकिन मरनेसे पहले अख़्तर जब

लाहौरमें मेरे यहाँ मुक़ीम थे[१]। अक्सर बीवी-बच्चोंकी याद करते और याद करते-करते कभी रो पड़ते थे। एक दिन बीवीकी वफ़ादारी और अपनी बेवफ़ाइयोंको इस क़द्र याद किया कि रोते-रोते हिचकी बँध गई। मरनेसे पहले अपनी बेगमकी यादमें यह 'पैमाने-वफ़ा' सॉनेट लिखा—

यह क्या कहा कि तुम्हें दिलसे मैं भुला दूँगा
तुम्हारी याद मुझे भूलकर न आयेगी
यह बेरुख़ी मेरी तुमको बहुत रुलायेगी
कि नक़्शे-महरो-वफ़ा दिलसे मैं मिटा दूँगा

यह क्या कहा कि कहीं और दिल लगा लूँगा
दयारे-ग़ैरमें[२] याद आयेगी न घरकी मुझे
न शर्म होगी कुछ इन दीदाहाए-तरकी[३] मुझे
कि अपने सीनेमें, मैं औरको बसा लूँगा

यह क्या कहा कि करूँगा न अब मैं याद तुम्हें
तुम्हारे रूए - निगारींको[४] भूल जाऊँगा
तुम्हारे हुस्ने - बहारींको भूल जाऊँगा
न रख सकूँगा हमेशाकी तरह शाद तुम्हें

ब-रब्बे काबा[५], न भूलूँगा मैं कहीं तुमको
हर - एक ज़र्रेमें पायेगी यह जबीं[६] तुमको

---

१. हर वक़्तकी मैनोशी और फ़िज़ूल ख़र्चीकी वजहसे जब अपना घर-बार छोड़ना पड़ा था, २. दूसरोंके संसर्गमें, ३. अश्रुपूर्ण नेत्रोंकी, ४. सुन्दर मुखको, ५. ख़ुदा और काबा साक्षी हैं कि मैं कभी नहीं भूलूँगा, ६. यह मस्तक तुम्हें अणु-अणुमें व्याप्त समझकर सिज्दा करेगा।

"आम लोगोंके साथ अख़्तरका सलूक निहायत मुशफ़िक़ाना बल्कि अज़ीज़ाना (मित्रों और स्वजनों जैसा) होता था। नाई, पनवाड़ी और ताँगेवाले अक्सर उनके यार बने रहते थे। बाज़ दफ़ा एक ताँगा चार-चार दिन तक उनकी अर्दलीमे रहता था।....एक दिन देहलीके रेडियो स्टेशन पर सुबहके वक़्त एक दोस्तसे मिलने गये। शाम तक ताँगा बाहर खड़ा रहा। शामको रुखसत करते वक़्त दोस्तने पूछा कि भला यह दिन भर ताँगेको क्यों खड़ा रक्खा? फ़रमाने लगे—'कोचवान ग़रीब और शरीफ़ आदमी हैं, मैंने सोचा उसका भला हो जाये।'

"मुहल्लेका पनवाड़ी उनका दोस्त था, जिसका बिल महीने भरके बाद अदा होता था। पान बेहद खाते थे। सिगरेटका दौर भी बड़े ज़ोरसे जारी रहता था। ख़ुसूसन उन दिनोंमें जबकि शराब छोड़ दी जाती थी। अमूमन सिगरेटसे सिगरेट सुलगाते थे। दो-तीन मर्त्तबा ऐसा इत्तफ़ाक़ हुआ कि सिगरेट हाथोंमें लिये सो गये या नशेमें ग़ाफ़िल हो गये। बिस्तर-से धुआँ उठने लगा तो मुलाज़िम चिल्लाया। वालिदा आईं और उन्होंने अख़्तरको बिस्तरसे जुदा किया।"[1]

अख़्तर ज़रूरतसे ज़्यादा ख़र्चीले थे। उनके पास पैसा ठहर नहीं सकता था। जवाहरात और चमकीले नगोंका उन्हें अन्तर मालूम ही नहीं था। स्वार्थी और हितैषी सभी तरहके व्यक्ति उनके मित्र थे। कौन उन्हें विनाशके पथपर लिये जा रहा है और कौन उनकी विनाश-लीलाको देख-देखकर हलकान हुआ जा रहा है? ऐसे खरे-खोटोंकी पहचानकी कसौटी उनके पास नहीं थी। पासमें आये हुए पैसेको बहुत बेरहमी और बेपरवाहीसे फेंकते थे। अपने-पराये ज़रूरतमन्द-ग़ैरज़रूरतमन्दका ख़्याल किये बिना ही पैसेको दोनों हाथोंसे लुटाते थे। एक मर्त्तबा किसी प्रकाशकसे ७०० रु० प्राप्त हुए तो घर पहुँचते-पहुँचते जेबमें सिर्फ़ ५ रु० बाक़ी बचे थे। शेष रास्तेमें न जाने किन-किनको बाँट दिये। एकबार लखनऊ जाते

---

१. नक़ूश शख़्सियात नं० २ पृ० ८८७।

हुए उनकी जेबमें २०० रु० थे। अमृतसरके कुछ यारोंको इल्म हुआ तो उन्होंने स्टेशनपर आपको घेर लिया और बतौर दो रोज़के लिए उधार माँगकर चलते बने और अख़्तरकी सादगीका यह आलम कि उनके वादे-पर यक़ीन किये हुए अमृतसरके होटलमें ठहरे हुए हैं कि रुपया वापिस आये तो लखनऊ रवाना हों। हकीम नैय्यर वास्ती लिखते हैं कि "अख़्तर बेहद हमदर्द इंसान थे। जहाँ किसीको तकलीफ़में देखते, तिलमिला उठते थे और अक्सर रो पड़ते थे। औरत ज़ातकी मुसीबत तो वे देख ही नहीं सकते थे। एक मर्त्तबा वे अनारकलीमें ताँगेमें सवार थे कि एक औरत भीख माँगने आ खड़ी हुई। मुझसे फ़रमाने लगे—'कि जो कुछ है इसे फ़ौरन दे दो, मैं औरतकी तौहीन बर्दाश्त नहीं कर सकता।'

"शर्मोहयाका यह आलम था कि चन्द हमपियाला-ओ-हमनिवाला लोगोंके सिवाय जब किसीको आते देखते, शराबकी बोतलको इधर-उधर छिपानेकी कोशिश करते और रफ़ीक़ुल क़ल्ब (नर्म दिल) इस क़द्र थे कि एक मर्त्तबा रास्तेमें सड़कपर चन्द मुर्झाई हुई कलियाँ पड़ीं नज़र आईं तो वहीं बैठकर देरतक उन्हें देखते और रोते रहे।"

बाह्यसंसारके लिए 'अख़्तर' जितने सहृदय, मधुर, मिलनसार और कामके थे। उतने ही अपने कुटुम्बके प्रति असहिष्णु, निर्लिप्त चिन्तामुक्त और उत्तरदायित्वहीन थे। इकलौती सन्तान होनेके कारण माता-पिताको आपसे बेहद मुहब्बत थी। आपके पिता आपको बहुत बड़ा आदमी देखनेकी तमन्ना रखते थे। उन्होंने आपकी शिक्षा-दीक्षापर काफ़ी व्यय किया, किन्तु उनकी अभिलाषा पूर्ण न हो सकी। फिर उन्होंने कई बार प्रयास किया कि 'अख़्तर' किसी कामसे लग जायें, लेकिन हकीम नैय्यर साहबके कथनानुसार—"अख़्तर हमेशा इस राहसे दामन बचाते रहे। आपके वालिद जब इस्लामिया कॉलेज लाहौरकी प्रोफ़ेसरी छोड़कर ओरियण्टल कॉलेजमें तशरीफ़ ले गये तो अख़्तरसे कहा गया कि इस्लामिया कॉलेजमें अपने वालिदकी जगह क़ूबूल कर लें। लेकिन आपने यह कहकर इन्कार कर दिया कि 'लड़कोंका

घरेलू-सम्बन्ध

पढ़ाना मेरे वसका रोग नहीं।' फिर अख़्तरको १९३५ ई० में हैदराबादमें एक ओहदा पेश किया गया, लेकिन आपने वहाँ जानेसे भी इन्कार कर दिया। दरअस्ल आप किसी क़िस्मकी पाबन्दी अपने ज़िम्मे नहीं लेना चाहते थे।''

हर वक़्त आवारा और ख़ुदग़र्ज़ लोगोंका जमघट, मदिरा-पान, शेरो-शाइरी, फ़िज़ूलख़र्ची और घरेलू कामोंसे बेपरवाहीने इतना तूल पकड़ा कि 'अख़्तर' सिवाय रोमानी नज़्म कहने और नशेमें धुत्त रहनेके किसी कामके नहीं रहे। इससे उनके वालिदके हृदयको बहुत आघात पहुँचा, उनके सब स्वप्न विलीन हो गये। हकीम नैय्यर वास्तीके कथनानुसार ''अख़्तरकी घरकी ज़िन्दगी बेहद तल्ख़ हो गई थी, और सूरत यह हो गई थी कि घर उनसे तंग था और वे घरसे बेज़ार। बारहा ऐसा हुआ कि वे घरबार छोड़ कर दोस्तोंके यहाँ इक़ामतगुज़ीं हो गये (रहने लगे) और इस मक़सदके लिए अक्सर मेरे ग़रीबकदेको शर्फ़-इन्तख़्वाब बख़्शा। लेकिन फिर किसीने घर वालोंसे सुलह करा दी और वे घर चले गये। अक्सर उनका मामूल यह था कि रात गये घर लौटते थे, और बारहा ऐसा हुआ कि उनके वालिदने ग़ुस्सेमें आकर मकानके अन्दरसे ज़ीनेके दरवाज़ेको क़ुफ़्ल (ताला) लगा दिया। अख़्तर आते और इस दरवाज़ेके बाहर सीढ़ियोंपर बैठे रहते। माँकी ममताके ज़ेरेअसर उनकी वालिदा जब यह मंज़र देखतीं तो कमरेके अन्दर किवाड़के पास अपने इकलौते बेटेके क़रीब आकर बैठ जातीं। दोनों रातभर बैठे बातें करते रहते और अक्सर इस तरह सर्दियोंकी सारी रात आँखोंमें गुज़र जाती, जब सुबह होती तो दरवाज़ा खुलता। इस सिल्सिले-में एक क़ाबिले-ज़िक्र लतीफ़ा यह है कि वे अपने घरपर रहते या कहीं और, उनकी यह आदत थी कि जहाँ भी रहते, ख़्वाह दिनभर कहीं हों रातको किसी न किसी वक़्त अपने ठिकानेपर ज़रूर पहुँचते थे। यानी मस्त-ओ-लाईक़ुल (नशेमें चूर-बेसुध) रहनेके बावजूद इस क़द्र बाख़बर और मोहतात (सावधान-सतर्क) ज़रूर थे कि रातको अपना ठिकाना नहीं भूलते थे। चुनाँचे बारहा ऐसा हुआ कि वे मेरे मकानपर क़यामके

ज़मानेमें दिनभर ग़ायब रहते और रातको दो बजे तशरीफ़ लाते थे। इन तमाम उमूर (हालात) के बावजूद 'अख़्तर' अपने वालिद मोहरिम (आदरणीय पिता) का बेहद एहतराम (अदब, सम्मान) करते थे। वे तमाम ताज़ीरात (दण्ड) सहते और कभी हर्फ़े-शिकायत ज़बानपर न लाते। मैंने देखा कि जब भी वे अपने वालिद मोहतरिमका नाम लेते तो बहुत एहतरामसे लेते और अक्सर उनकी ख़ूबियों और ख़ुसूसियतोंका ज़िक्र करते। आमलोगोंको अख़्तरकी इस मुहब्बतका अन्दाज़ा उस वक़्त हुआ, जब टौंकमें उनका इन्तक़ाल हुआ और लोग जनाज़ा लेकर चलने लगे तो इस रिन्देख़राबात (सुरासेवी) ने रास्तेमें जनाज़ेको रोककर पट्टी पकड़ कर कुछ इस अन्दाज़में सदाए-नाला-ओ-शेवन बुलन्द की (रुदन-चीत्कार किया) कि शहरका हर छोटा-बड़ा इस मंज़रको देखकर ज़ारोक़तार रो रहा था''।[1]

शराब और शाइरीका चोली-दामनका रिश्ता है। बल्कि शराबको शाइरीका प्राण कहा जाय तो अधिक उपयुक्त होगा। शराबके माध्यमसे उर्दू-फ़ारसी-शाइरोंने बहुत महत्त्वपूर्ण उल्लेख किये हैं। दार्शनिकता और अध्यात्मवादकी छटा बखेर दी है, किन्तु बहुत-से शाइर वज़ू करते-करते शराबके हौज़में डूब भी गये हैं। शराबपर लिखते-कहते जिसने भी इसे मुँह लगाया, यह उसके मुँहमें जानेके बजाय उसे ख़ुद निगल गई है। ग़ालिब-जैसा महान् शाइर मैनोशीकी बदौलत जीते जी क़र्ज़दार रहा, सिसक-सिसककर जिन्दग़ी बसर की और आख़िर जेल भी काटनी पड़ी। दुर्गासहाय मरूर और रतननाथ शरसार-जैसे प्रतिभाशाली शाइर भरी जवानीमें शराबकी नज़र हो गये। मण्टो और मजाज़का जो हश्र हुआ पढ़कर कलेजा मुँहको आता है। 'जिगर' अपना दामन बचाकर भाग निकले तो इस ६९ वर्षकी आयुमें भी बचे हुए हैं। फ़िराक़-जैसा शाइर पीकर जब बहकता है तो ग़रीबपर तरस आने

मदिरा-पान

१. नक़ूश शख़्सियात नं० २ पृ० ८९२।

लगता है। जोश मलीहाबादी भी पीते हैं, मगर इस सावधानीके साथ कि कहीं शराब उन्हें न पी जाये। आप अनिश्चित समयमें कभी नहीं पीते। सूर्यास्तके बाद अँधेरा होनेपर नियत मात्रामें पीते हैं। उनके हमप्याले और हमनिवाले सरदार दीवानसिंह मफ़्तूँ सम्पादक रियासतका दावा है कि "जोश मुक़र्रर वक़्तसे पहले और मुक़र्रर मिक़दारसे ज़्यादा नहीं पीते, चाहे उनको पिलानेवाली मुल्ककी मलिका या फ़िल्म-एक्ट्रेस ही क्यों न हो। जिसका नतीजा यह है कि जोशका चेहरा टमाटरकी तरह सुर्ख़ो-सफ़ेद है।"

१९४३ ई० की गर्मियोंमें शामके सात बजेके क़रीब अख़्तर और मजाज़ रियासतके एडीटर सरदार दीवानसिंह 'मफ़्तूँ'के यहाँ पहुँचे तो उन्होंने अपने इन दोनों दोस्तोंके लिए विस्कीकी एक बोतल मँगवा दी। यह दोनों पीते रहे और सरदार साहब अपने कार्यालयमें रातके १० बजे तक व्यस्त रहे। रातके १० बजे तक भी यह दोनों मैनोशी करते रहे तो सरदार साहब नौकरको यह हिदायत देकर कि ये पीनेके बाद जब जायें तो दरवाज़ा बन्द करके सो जाना, सोने चले गये। आदतके अनुसार काम करनेके लिए सुबह चार बजे सरदार साहब दफ़्तर पहुँचे तो देखा कि दोनों हज़रत ड्राइंग रूममें पंखेके नीचे बैठे हुए शराबसे शौक़ फ़र्मा रहे हैं। सरदार साहबने हैरान होकर पूछा—"आपलोग अब किस वक़्त तशरीफ़ लाये हैं" तो मजाज़ने जवाब दिया—"गया कौन कम्बख़्त था, यह तो तमाम रातका अखण्ड कीर्तन था। (यानी रातभर पीते रहे) जवाब सुनकर सरदार साहबने फ़र्माया—यह न कहो रातभर अखण्ड कीर्तन रहा, बल्कि यह कहो कि रातभर मौतको आवाज़ देते रहे।"[1]

अख़्तरके अन्तरंग मित्र हकीम नैय्यर वास्ती साहब लिखते हैं–"अख़्तर-से मेरी मुलाक़ात १९२७ ई० में हुई है। उस वक़्त अख़्तर शराबके ख़ूगर (अभ्यस्त) हो चुके थे। उनकी ज़बानी मालूम हुआ कि लाहौर पहुँचनेके बाद उन्हें उनके मख़सूस (खास) क़िस्मके दोस्तोंने शराबके ज़ाइक़ेसे

१. रियासत दिल्ली ३० नवम्बर १९५९ ई० पृ० १—२।

आश्ना (परिचित) कराया। बादमें जब ताजवर नजीबाबादीने लाहौरमें 'मरकज़े-उर्दू' 'हल्क़ए अरबाबे-इल्मो-अदब'के नामसे क़ायम किया तो यहाँ हिन्दके दीगर मशाहीर शेरो-अदब (प्रसिद्ध शाइर और विद्वानों) के साथ-साथ हज़रत जिगर मुरादाबादी भी कुछ मुद्दतके लिए क़याम पज़ीर हुए (ठहरे) तो अख़्तरने इस सिलसिले (मदिरा-पान) में इस पीरे-मुग़ाकी बेत की (सुराव्यसनमें शिष्यत्व स्वीकार किया)। अख़्तरका बयान है कि शाइरीमें अल्लामा ताजवरका शागिर्द हुआ और शराबमें हज़रते जिगरका।''''रफ़्ता-रफ़्ता अख़्तर इस हद तक शराबमें बह गये थे कि उनके जिस्ममें पानीकी जगह शराब रहने लगी। शराब—हरवक़्त और हर लमहा शराब। आख़िरमें शराबकी बदौलत उनका गोश्त हड्डियोंसे जुदा हो गया। जिगर जलके कबाब हो गया और शराबने उनकी ज़िन्दगीके बखिये उधेड़ दिये।

''अख़्तरकी बादाकशी आम शराबियोंकी तरह न थी, उनकी आदत यह थी कि जब वे आग़ाज़ (प्रारम्भ) करते तो बेतहाशा पीते, अक्सर स्वदेशी पीते और आख़िरमें सूरत यह थी कि पानी मिलाना शर्क (अधर्म) समझते थे। जब दौर शुरू होता तो अमूमन दो-दो हफ़्ते जारी रहता और लुत्फ़ यह था कि इस मुद्दतमें ग़िज़ा (खुराक) क़तई तर्क कर दी जाती थी। उसके बाद खुमार और उसके साथ क़ै, उबकाइयों, बेचैनी, और घबराहटका ज़माना आता, तब दो-चार दिनके लिए नाग़ा करते और फिर दौर शुरू हो जाता था।

''बार-हा मुझसे न पीनेका वादा करके जाते, लेकिन इसके बावजूद मैं देखता कि पिये होते और झूमते हुए तशरीफ़ लाते। पूछता कि 'हज़रत यह क्या हुआ ?' फ़र्माते—'इस दफ़ा आख़िरी बार हिमाक़त हो गई'। कई बार सख़्त कोशिश की गई कि उन्हें मजबूर करके शराबसे बाज़ रखा जाये, लेकिन जब कभी दो-चार दिनका नाग़ा हुआ, इस अस्नामें कहीं न-कहींसे कोई हममशरब (मदिरा-पानका साथी) टपक पड़ा। जो उनकी तौबाके टुकड़ोंको चन्द रोज़ भी सलामत नहीं रहने देता था।

शराबके बारेमें वे अपने खास दोस्तोंकी जेबोंको अपनी जेब समझते थे और हुस्ने-तलब (माँगनेका सुन्दर ढंग) कुछ ऐसा लतीफ़ और शाइराना होता था कि फ़र्माइश पूरा किये बग़ैर रहा नहीं जाता था। एक मर्त्तबा सर्दियोंके मौसममें धूपमें बैठा हुआ मैं मतब कर रहा था कि दो मशहूर बलानोश शाइर दोस्तोंको हमराह लेकर आ गये।

एक साहबने फ़र्माया—'धूपमें अपने मरीज़ोंको दवा देते हैं'
दूसरे साहब बोले—'और शाइर कोई आये तो पिला देते हैं'
और आपने फ़र्माया—'अहले-दिल ऐसे मसीहाको दुआ देते हैं।'

"इसके बाद उन शाइरोंके सामने फ़र्माइश शुरू की और बोतलके पैसे लेकर चलते हुए। शराबके लिए रक़म तलब करते हुए अक्सर यह फ़र्माया जाता था कि 'बस आख़िरी मौक़ा है। इसके बाद इसको मुँह नहीं लगाऊँगा'। लेकिन यह काफ़िर हमेशा मुँह लगी रही।"[1]

अख़्तरकी शाइरी उनकी प्रेयसी 'सलमा' के इश्क़में सराबोर है। उर्दूके अन्य बहुत-से शाइरोंकी तरह आपने अपनी माशूक़ाके लिए 'वह' 'ज़ालिम' 'बेवफ़ा'' 'तुर्की हूर' आदि जैसे फ़र्ज़ी नाम इस्तेमाल नहीं किये और न फ़र्ज़ी इश्क़में आहो-नाले किये। बल्कि जिस कुमारी लड़कीसे इश्क़ किया, उसको उन्होंने 'सलमा' नामसे स्मरण किया। अपनी प्रेयसी बदनाम न हो, इसी पवित्र भावनासे आपने अपनी नज़्मोंमें उसका वास्तविक नाम न देकर 'सलमा' नज़्म किया। अख़्तरकी नज़्मोंमें 'सलमा' जिस तरह छाई हुई है, स्वाभाविक था कि अख़्तरके बेशुमार प्रशंसकों—विशेषकर युवक-युवतियोंमें वास्तविक सलमाके जाननेकी उत्सुकता बलवती हो, किन्तु अख़्तरने मृत्यु-पर्यन्त एक भद्र महिलाके भेदको भेद ही बना रहने दिया। सलमा भी अपना नाम उजागर होनेसे भय खाती थी। जब उसे सन्देह हुआ कि

अख़्तरकी शाइरी

---

१. नक़ूश शख़्सियात नं० २ पृ० ८९२—९३।

अख़्तर कहीं प्रेमावेशमें संकेत न कर दे, तभी पत्र-द्वारा उन्हें चेतावनी दी। इस चेतावनीका उल्लेख अख़्तरने ग़ज़लके ९ अशआ़रमें किया है। जिसके तीन शेर ये हैं—

शेरमें ज़िक्र किसीका दिले-नाकाम न कर
उसने लिक्खा है कि "तू यूँ हमें बदनाम न कर"
हश्रमें[1] मिलनेकी उम्मीद थी, वह भी न रही
वह यह कहती हैं कि नाहक़ तमए-ख़ाम[2] न कर
ग़ैरते-हुस्नको मंज़ूर नहीं रुसवाई
ज़ब्त ऐ इश्क़ ! इस अफ़सानेको यूँ आम न कर

सलमाँसे अख़्तरका प्रेम-सम्बन्ध १९२६ ई० में हुआ। उसका पहला पत्र मिलनेपर अख़्तरको जो प्रसन्नता हुई, उसे आपने यूँ व्यक्त किया है—

ले आये इन्क़िलाबे-सिपिहरे-बरीं[3] कहाँ ?
अल्लाह हम कहाँ, वह सुरैया जबीं[4] कहाँ ?
दर है न आस्ताँ है न हरम है न बुतकदा
यारब ! मचल पड़ी है हमारी जबीं कहाँ ?
सूरजकी सबसे पहली किरन ख़ुशनुमा सही
लेकिन तेरी नज़रकी तरह दिलनशीं कहाँ ?
दामन कशे-नज़र है किसीका हरीमे-नाज़
दुनियामें आगई यह बहिश्ते-बरीं कहाँ ?
ज़ाहिद ! तेरी बहिश्तमें हूरें सही मगर
हम जिसको चाहते हैं वह ज़ोहरा ज़बीं कहाँ ?

१. प्रलय के बाद, २. व्यर्थ इच्छा, ३. आकाशके स्वर्गमें, ४. चन्द्र-मुखी।

और जब सलमाने अपने यहाँ आनेका निमंत्रण दिया तो अख़्तरने उस उल्लासमें 'आजकी रात' शीर्षकसे यह नज़्म कही—

कितनी शादाब[1] है दुनियाकी फ़ज़ा[2] आजकी रात ?
कितनी सरशार[3] है गुलशनकी हवा आजकी रात ?
कितनी फ़ैयाज़[4] है, रहमतकी घटा आजकी रात ?
किस क़दर ख़ुश है ख़ुदाईसे[5] ख़ुदा आजकी रात ?
कि नज़र आयेगी वह माहे-लक़ा[6] आजकी रात।

क्यों न गुलज़ारमें[7] इठलाती फिरे मौजे-नसीम[8]
क्यों न हर फूल हो लबरेज़े-बहारे-तसनीम[9]
क्यों न आमादए-अफ़लाक हो परवाज़े-शमीम[10]
क्यों न हर ज़र्रा[11] बने जल्वागहे-तूरे-कलीम[12]
कि उन्हें देखेंगे हम जल्वानुमा आजकी रात

आज क्या बात है दुनियाके नज़ारे-ख़ुश हैं,
बाग़में फूल, सरे-चर्ख़[13] सितारे, ख़ुश हैं,
एक बेनाम-सी सर मस्तीके मारे ख़ुश हैं,
एक मैं ख़ुश नहीं, जितने भी हैं, सारे ख़ुश हैं,
है ख़ुशी चार तरफ़ नग़मासरा[14] आजकी रात !

---

१. हरी-भरी, प्रफुल्ल, २. बहार, वातावरण, ३. मस्तीभरी, नशीली, ४. उदार, ५. सृष्टिसे, ६. चन्द्रमुखी, ७. उद्यानमें, ८. वायुकी लहरें, ९. जन्नतके चश्मेकी बहारोंसे ओत-प्रोत, १०. सुगन्धकी उड़ान आकाशमें उड़नेके लिए क्यों नहीं उद्यत हो, ११. अणु, १२. तूर पर्वतका जल्वा, १३. आकाशमें, १४. गीत गाती हुई।

ग़ायबाना[1] जो हमें नामें[2] लिखा करती थी !
दूरसे हमपै दिल अपना जो फ़िदा[3] करती थी
दादे-अशआर[4] जो गुमनाम दिया करती थी
होके बे-पर्दा जो पर्देमें रहा करती थी
सामने होगी वही शोख़ अदा[5] आजकी रात !

दास्ताने - दिले - बे - ताब[6] सुनायेंगे उन्हें
आप रोयेंगे गले मिलके रुलायेंगे उन्हें
ख़ुद ही फिर रोनेपै हँस देंगे, हँसायेंगे उन्हें
और जुरअत की तो सीनेसे लगायेंगे उन्हें
नित नये जज़्बोंकी है नश्वो-नमा[7] आजकी रात !

दिलकी रग-रगमें है बेताब मुहब्बत उसकी
आँखके पर्देपै लहराती है सूरत उसकी
ख़िलवते-रूहमें[8] आबाद है, उल्फ़त उसकी
मेरे जज़्बातपै तारी[9] है, लताफ़त उसकी
और कुछ याद नहीं इसके सिवा आजकी रात !

१. छिप-छिपकर, गुप्तरूपसे, २. पत्र, ३. न्योछावर, ४. नज़्मकी दाद, ५. चंचल स्वभाववाली, ६. दिलकी बेचैनियोंकी कहानी, ७. दिलके अरमान पूर्ण करनेकी रात, ८. आत्माके कोनेमें ९. भावोंमें विद्यमान ।

निकहते - हुस्न[१] हो दामाने - हवामें रक़्साँ[२]
जज़्बए - इश्क़[३] हो रंगीन फ़िज़ाँमें[४] रक़्साँ
कैफ़ो-सरमस्ती[५] हो मंज़रकी अदामें[६] रक़्साँ
नूर-ही-नूर[७] हो, यूँ अर्ज़ों-समामें[८] रक़्साँ
कि ख़ुदाईमें[९] उतर आये ख़ुदा आजकी रात !

वाक़िफ़े - दर्दे - दिले - राज़[१०] करेंगे उनको
ग़मे - उल्फ़तसे ख़बरदार करेंगे उनको
महरमे - जज़्बए - असरार[११] करेंगे उनको !
गोदमें लेंगे उन्हें प्यार करेंगे उनको
दिलकी रग-रगसे यह आती है सदा आजकी रात !

लेकिन इज़हारे - ख़यालात करेंगे क्योंकर ?
शर्म आती है मुलाक़ात करेंगे क्योंकर ?
बात करनी है मगर बात करेंगे क्योंकर ?
ख़त्म यह ख़्वाब की - सी रात करेंगे क्योंकर ?
आह ! यह आजकी, यह ख़्वाबनुमा आजकी रात !

ऐ दिल ! ऐसा न हो कुछ बात बनाये न बने
हाले-दिल जो भी सुनाना है, सुनाये न बने

१. सौन्दर्य्यकी गन्ध, २. वायुमें नृत्य करे, ३. प्रेमकी अभिलाषा, ४. बहारमें, ५. नशा-मस्ती, ६. दृश्योंके हाव-भावमें, ७. प्रकाश, ८. पृथ्वी-आकाशमें, ९. सृष्टिमें, १०. दिलके भेदोंसे परिचित, ११. भेदोंसे परिचित ।

पास आयें तो मगर पास बिठाये न बने
शर्मके मारे उन्हें हाथ लगाये न बने
कि तसव्वुरसे भी आती है हया आजकी रात !

यूँ तो हर तरह अदब मद्दे-नज़र[१] रखना है,
हसरते-दिलका[२] लिहाज़ आज, मगर रखना है,
बे-ख़ुदी देख तुझे मेरी ख़बर रखना है,
नाज़नीं क़दमोंपै यूँ नाज़से सर रखना है,
कि तड़प उट्ठे दिले-अर्ज़ो-समा[३] आजकी रात !

हममें कुछ जुरअते-गोयाई[४] भी होगी कि नहीं
हिम्मते-नासियह फ़साई[५] भी होगी कि नहीं
शर्मसे दूर शिकेबाई[६] भी होगी कि नहीं
यूसुफ़े-दिलसे "ज़ुलेख़ाई" भी होगी कि नहीं
आजकी रात ! उफ़! ओ मेरे ख़ुदा ! आजकी रात !!

पहली बार मुलाक़ात हो जानेके बाद दोबारा देखनेकी इच्छा आपने इस तरह व्यक्त की—

तुम्हें सितारोंने भी बार-बार देखा है
शरीर चाँदने बे - इख़्तियार देखा है
कभी चमनमें गई हो तो मस्त फूलोंने
निगाहे-शौक़में आईना बार देखा है

१. अदबका ध्यान, २. दिलकी इच्छाओंका, ३. पृथ्वी-आकाशका हृदय, ४. कहनेकी शक्ति, ५. मस्तकको क़दमोंमें रखनेकी हिम्मत, ६. सन्तोषीपन ।

सुनेहरी धूपकी किरनोंने बामपर तुमको
बखेरे गैसुए-मुश्कीं बहार देखा है
ग़रज़ मुज़ाहिरे-फ़ितरतने हर तरह तुमको
हज़ार बार नहीं, लाख बार देखा है
मगर मिरी निगहे-शौक़को शिकायत है
कि उसने तुमको फ़क़त एक बार देखा है
दिखा दो एक झलक और बस निगाहोंको
दोबारा देखनेकी है हविस निगाहोंको

अख़्तरको विरह-वेदना जब असह्य हो उठी, तब आपने 'वक़्तकी क़द्र' शीर्षक १६ बन्दकी नज़्म सलमाको लिखी, जिसके ५ बन्द यहाँ दिये जा रहे हैं—

बहार बीतने वाली है आ भी जा सलमा !

बहार बीतने वाली है आ भी जा सलमा !
चमनकी गोदमें आकर समा भी जा सलमा !
कली-कलीमें बहारें बसा भी जा सलमा !
मुझे जुनूँका सबक़ फिर पढ़ा भी जा सलमा !
बहार बीतने वाली है आ भी जा सलमा !

किसे ख़बर है क़यामतमें हम मिलें-न-मिलें
फ़ज़ाए-रौज़ए-जन्नतमें[1] हम मिलें-न-मिलें
कशा-कशे-अब्दीयतमें[2] हम मिलें-न-मिलें
कशा-कशे-अब्दीयत भुला भी जा सलमा
बहार बीतने वाली है आ भी जा सलमा !

१. जन्नतकी बहारोंमें; २. सदैव जीनेकी धकापेलमें ।

गँवा न सोगमें[1] अपने शबाबकी[2] रातें
नज़र न आयेंगी फिर माहताबकी रातें[3]
यह निकहतोंका हुजूम[4] और यह ख़्वाबकी रातें
फ़ज़ामें[5] ख़्वाबे-हसीं[6] बनके छा भी जा सलमा !
बहार बीतनेवाली है आ भी जा सलमा !

ख़बर ले जल्द कि उम्रे-अज़ीज़[7] फ़ानी है,[8]
सराये-दहरकी[9] हर चीज़ आनी-जानी है,
बरंगे-अब्रे - रवाँ फ़स्ले-नौजवानी है,[10]
छलकने वाला है, साग़र पिला भी जा सलमा !
बहार बीतनेवाली है आ भी जा सलमा !

बता तू क्या यह नज़ारे उजड़ न जायेंगे ?
यह नद्दियाँ यह किनारे उजड़ न जायेंगे ?
यह चाँद और यह सितारे उजड़ न जायेंगे !
सितारा वार शुआएँ लुटा भी जा सलमा !
बहार बीतने वाली है आ भी जा सलमा !

---

१. शोकमें, २. जवानीकी, ३. चाँदनी रातें, ४. सुगन्धियोंकी भीड़, ५. बहारोंमें, वातावरणमें, ६. सुन्दर स्वप्न, ७. प्यारी उम्र, ८. नश्वर, ९. संसाररूपी मुसाफ़िरखानेकी, १०. नौजवानीका मौसम बादलोंकी तरह क्षणिक है ।

और जब सलमाने एक रोज़ आनेका वादा कर लिया तो अख़्तरने फ़र्ते-मसर्रतसे झूम-झूमकर यह 'इन्तज़ार' नज़्म कही—

सुना है मेरी सलमा रातको आयेगी वादीमें[१] !
बहारो-कैफ़की[२] बदली उतर आयेगी वादीमें
सरूरो-नूरका कौसर[३] छिड़क जायेगी वादीमें
नसीमे-बादाए-मंज़रको[४] महकायेगी वादीमें
शबाबे-हुस्नकी-बिजली-सी लहरायेगी वादीमें
सुना है मेरी सलमा रातको आयेगी वादीमें !

अभीसे जाऊँ और वादीके नज़्ज़ारोंसे कह आऊँ
बिछादें फ़र्शे-गुल[५] वादीमें गुलज़ारोंसे[६] कह आऊँ
छिड़क दें मस्तियाँ, फूलोंकी महकारोंसे कह आऊँ
कि सलमा मेरी सलमा नूर[७] बरसायेगी वादीमें !
सुना है मेरी सलमा रातको आयेगी वादीमें !

सुना है मेरी सलमा रातको वादीमें आयेगी !
बराए-सैर[८] इस फूलोंकी आबादीमें आयेगी !
ग़ज़ाले-दश्त[९] बनकर रंगे-आज़ादीमें आयेगी !
और आकर नाज़की बस्ती बसा जायेगी वादीमें
सुना है मेरी सलमा रातको आयेगी वादीमें !

---

१. पर्वतकी गुफ़ामें, घाटीमें, २. बहार और मस्तीकी ३. उन्मत्त करनेवाली मदिरा, ४. नशीली हवाको, ५. फूलोंकी चादर, ६. उद्यानोंसे, ७. प्रकाश-सौन्दर्य्य, ८. सैरके लिए, ९. जंगली हिरनी ।

बहारे-वादिए-रंगींको[1] यह मुज़्दः[2] सुना आऊँ !
ज़मींको निकहते-गुलहाए-रअ़नासे[3] बसा आऊँ !
और उसपर नाज़नीं कलियोंका इक बिस्तर बिछा आऊँ
कि वह नाज़ुक बदन है, और थक जायेगी वादीमें
सुना है मेरी सलमा रातको आयेगी वादीमें !

ज़मींपर भेज दे आज ऐ बहिश्त अपनी बहारोंको
बिछादे ख़ाकपर ऐ आसमाँ अपने सितारोंको
ख़रामो-रक़्सका[4] दे हुक्म फ़ितरत[5] अब्र पारोंको[6]
वह बेख़ुद[7] चाँदकी नज़रोंसे घबरायेगी वादीमें
सुना है मेरी सलमा रातको आयेगी वादीमें !

मेरे आग़ोशमें[8] होगा वह जिस्मे-मरमरीं[9] उसका
वह उसके काकुले-मुश्कीं[10] वह रूए-नाज़नीं[11] उसका
वह रुख़सारे-हसीं[12] उसके, वह हुस्ने यासमीं[13] उसका
वह जिससे शौक़की दुनियाको महकायेगी वादीमें
सुना है मेरी सलमा रातको आयेगी वादीमें

१. हरी-भरी घाटियोंकी बहारको, २. खुशख़बरी, ३. फूलकी सुगन्ध और सौन्दर्य्यसे, ४. नज़ाकत भरी चाल और नृत्य करनेका, ५. प्रकृति, ६. बादलोंको, ७. तन्मय, ८. गोदमें, ९. धवल शरीर, १०. सुगन्धित जुल्फ़ें, ११. कोमलगात, १२. सुन्दर कपोल, १३. चमेली जैसा सौन्दर्य ।

तमन्ना-ओ-हयाकी[1] कश-म-कश क्योंकर मिटाऊँगा
मैं उसके यासमीं पैकरको[2] कैसे गुदगुदाऊँगा
और उसके लाले-लबसे[3] किस तरह रंगत चुराऊँगा
वह फूलों और सितारोंसे भी शर्मायेगी वादीमें
सुना है मेरी सलमा रातको आयेगी वादीमें

इस मुलाक़ातमें स्मृति स्वरूप सलमाने अख़्तरको अँगूठी भेंट की तो आपने 'अँगूठी' शीर्षकसे १४ शेरकी नज़्म कही, जिसके ६ शेर इस प्रकार हैं—

छिपाऊँ क्यों न दिलमें ख़ातिमे-गौहर-निगार[4] उसकी
यही ले-देके मेरे पास है इक यादगार उसकी

क़लमके साथ मेरे हाथमें हर वक़्त रहती है,
और उसके दस्ते-रंगींके फ़साने[5] मुझसे कहती है,

इसे मालूम है, वह किस तरह मग़मूम[6] रहती थी
किसीके ग़ममें लुत्फ़े ज़ीस्तसे महरूम[7] रहती थी

मेरा ख़त पढ़के वह किस नाज़से मसरूर[8] होती थी
फिर अपनी बेबसीपर[9] किस तरह रंजूर[10] होती थी

वह जब दिल थाम लेती थी हुजूमे-ग़मसे[11] घबराकर
तो यह करती थी उसकी ग़म-गुसारी[12] दिलके पास आकर

---

१. अभिलाषा और शर्म, २. सुगन्धित जिस्मको, ३. लाल होठोंसे, ४. मोतीसे सुशोभित अँगूठी, ५. मेंहदी लगे हाथोंकी कहानी, ६. रंजीदा, ७. जीवन-आनन्दसे वंचित, ८. आनन्दित, ख़ुशी, ९. मजबूरीपर, १०. रंजीदा, ११. दुःखोंके समूहसे, १२. समवेदना प्रकट करती थी।

इसे मालूम है जो दर्द था उस पाक सीनेमें
बसी हैं, उसके दिलकी धड़कनें इसके नगीनेमें

उक्त मुलाक़ातोंकी यादमें अख़्तरने बहुत लिखा है। इस तरहकी सिर्फ़ दो नज़्में यहाँ दी जा रही हैं—

गुज़री हुई रातें

न भूलेगा तेरा रातोंको शरमाते हुए आना
रसीली अँखड़ियोंसे नींद बरसाते हुए आना
रुख़े-रोशनके जल्वोंसे सहरका नूर बनबनकर[1]
अँधेरी रातके पर्दोंको सरकाते हुए आना
रुपेहली चाँदनीमें अपनी मस्ताना ख़रामीसे[2]
बहारो-ख़्वाबके साये-से बरसाते हुए आना
मुहब्बतके फ़रिश्तेकी तरह ख़ामोश रातोंमें
फ़ज़ाको निकहते-गेसूसे[3] महकाते हुए आना
तेरे पाज़ेबकी झनकारका आहिस्ता-आहिस्ता
वह धीमी-धीमी लैमें गीत बरसाते हुए आना
तेरे अब रेशमी मलबूसका[4] सर-सरके झोंकोंसे
सहाबे-रंगो-बूकी[5] तरह लहराते हुए आना

१. प्रेयसीके कपोलोंकी चमक ऐसी थी कि अँधेरी रातमें मिलनको चलती थी तो सूर्योदय जैसे प्रकाशका आभास होता था, २. चालसे, ३. जुल्फ़ोंकी सुगन्धसे वातावरणको, ४. परिधानका, ५. रंगीन एवं सुगन्धित घटाओंकी।

बदन अपना चुरा लेना, कभी नज़रें झुका लेना
हम-आग़ोशीके अन्देशेसे[1] घबराते हुए आना
शबे-तारीकके[2] ख़ामोश नज़्ज़ारोंकी बस्तीको
शराबो-नूरकी मौजोंसे[3] नहलाते हुए आना
निगाहोंमें हया[4], आँखोंमें मस्ती, चालमें लग़ज़िश[5]
मुसव्वरके[6] क़लमके ख़्वाब बरसाते हुए आना
हवाओंका महक उठना, फ़ज़ाओंका[7] बहक उठना
वह महकाते हुए आना, वह बहकाते हुए आना
महलके पासबाँ ख़्वाबीदा[8] शमएँ ख़्वाब दरदीदा[9]
और ऐ मलका! तेरे सायेका शर्माते हुए आना

शबहाए-रफ़्ता

[६ मेंसे ५]

आह ओ सलमा! वह रातें याद आती हैं मुझे,
वह मुलाक़ातें, वह बातें याद आती हैं मुझे
हुस्नो-उल्फ़तकी वह बातें याद आती हैं मुझे
आह! वोह रातें, वोह रातें याद आती हैं मुझे

---

१. अंकमें भरे जानेके भयसे, २. अँधेरी रातके, ३. मस्ती और सौन्दर्यकी लहरोंसे, ४. लाज, ५. थिरकन, ६. चित्रकारकी कूचीके स्वप्न, ७. बहारोंका, ८. सन्तरी सोये हुए, ९. दीपक बुझे हुए।

जब तुम्हारी यादमें दीवाना-सा रहता था मैं,
जब सकूनो-सब्रसे[1] बेगाना-सा[2] रहता था मैं
बे-पिये मदहोश-सा मस्ताना-सा रहता था मैं
आह वोह रातें, वोह रातें याद आती हैं मुझे

जब तुम्हारी जुस्तजू[3], बेताब रखती थी मुझे
जब तुम्हारी आर्ज़ू बेख़्वाब[4] रखती थी मुझे
मिस्ल मौजे-शोलओ-सीमाब[5] रखती थी मुझे
आह ! वोह रातें, वोह रातें याद आती हैं मुझे

मुन्तज़िर[6] मेरी जब अपने बाग़में रहती थीं तुम
हर कलीसे अपने दिलकी दास्ताँ[7] कहती थीं तुम
नाज़नीं[8] होकर भी नाज़े-आशिक़ी[9] सहती थीं तुम
आह वोह रातें, वोह रातें याद आती हैं मुझे

सर्दियोंकी चाँदनी शबनमसे[10] कुम्हलाती थी जब
शबनम आके चारसू[11] मोती-से बरसाती थी जब
बाग़पर इक धुँधली-धुँधली मस्ती छा जाती थी जब
आह वोह रातें, वोह रातें याद आती हैं मुझे

---

१. चैन और सन्तोषसे, २. वंचित-सा, अनभिज्ञ-सा, ३. तलाश, ४. उनींदा, ५. आग और पारेकी लहरके समान, ६. इन्तज़ारमें, ७. बात, कहानी, ८. प्रियतमा होते हुए भी, ९. आशिक़के नखरे, १०. ओससे, ११. चारों तरफ।

एक बार सलमा बीमार हुई तो अख़्तरने यह मन्ज़ूम ख़त लिखा—

तन्दुरुस्तीका गिला क्यों है, शिकायत क्या है,
मेरी बीमार बता तू तेरी हालत क्या है,
रो दिये जब भी सुनी दर्द भरी कोई ख़बर
दर्द ही दर्द है, या रब कि तबीयत क्या है,
इश्क़ बीमारी है और कितनी हसीं बीमारी
क्या ख़बर बे-ख़बरोंको कि यह लज़्ज़त क्या है,
उनकी सेहतकी ख़बर आयगी जल्द आयेगी !
दिले-नादाँ तुझे आख़िरको यह वहशत क्या है,
सारी दुनियाके मरीज़ोंको शफ़ा दे यारब !
आज अहसास[1] हुआ है कि अलालत[2] क्या है,
सामने हों तो फ़िदा कर दें दिलो-जाँ उनपर
हम नहीं जानते 'अख़्तर' कि अयादत[3] क्या है

नैय्यरवास्तीके कथनानुसार अख़्तर-सलमाका यह इश्क़का सिलसिला ५-६ साल जारी रहा। "लेकिन आपको इस बारेमें यह सुनकर हैरत होगी कि यह तमाम दौर जिसी आलूदगीसे क़तई मुबर्रा (यौन-सम्बन्ध रहित) रहा। मुझे अख़्तरने ज़ाती तौरपर इन हालातसे ख़ुद आगाह (सूचित) किया और ख़ुद अख़्तरकी तहरीरोंसे भी यह बात वाज़ह (स्पष्ट) है। अख़्तर अपने उस मजमूए-मकातिब (पत्रोंके संग्रह) में जो आज भी दोस्तों-के पास है। एक मक्तूबमें सलमाको अपनी मुलाक़ातका वक़्त याद दिलाते हुए लिखते हैं—"क्या आप मेरी मुहब्बतकी मासूमियत, मलकूती और मुक़द्दसहैसियत (निश्छलता, भद्रता और पवित्रता) की दाद न देंगी !" जवाबमें सलमाने लिखा—"आप इन्सान नहीं, देवता हैं, और आपकी

१. ज्ञान, भान, २. बीमारी, ३. बीमारकी मिज़ाजपुर्सी।

इसी शानने मुझे ख़रीद लिया है।" अख़्तरने अपने पवित्र प्रेमका संकेत 'आह वोह रातें' नज़्ममें १८ अशआरमें किया है, जिसके ६ शेर ये हैं—

अगर तुमको वह भूली बिसरी बातें याद आजायें
और आग़ाज़े-मुहब्बतकी[1] वे रातें याद आजायें
तो उन रातोंकी रंगीं दास्तानोंकी क़सम तुमको
और अपनी पाक दोशीज़ा[2] जवानीकी क़सम तुमको
क़सम उस पाकबाज़ीकी जो थी बाहम ख़यालोंमें[3]
क़सम उस बेनियाज़ीकी[4] जो थी बाहम सवालोंमें
क़सम उस चाक दामानीकी जो मजबूरे-वहशत थी[5]
क़सम उस पाकदामानीकी जो मग़रूरे-इफ़्फ़त थी[6]

क़सम उन आँसुओंकी जो बहाये थे कभी तुमने
वोह सैय्यारे[7] जो आँखोंसे गिराये थे कभी तुमने
फ़क़त इतना बता दो, क्या वोह बातें फिर न आयेंगी ?
वोह रातें ! आह वोह रातें ! वोह रातें फिर न आयेंगी ?

अख़्तर-सलमाके पत्र-व्यवहारसे विदित होता है कि यदि ठीक-ठीक ढगसे प्रयास किया होता तो दोनों विवाहके पवित्र बन्धनमें बँध सकते थे। लेकिन किन्हीं कारणोंसे ऐसा न हो सका। आख़िर १९३२ ई०में सलमाकी शादी अन्यत्र हो गई और सदैवको यह सम्बन्ध-विच्छेद हो गया। इस सदैवके विच्छेदसे जो अख़्तरको व्यथा पहुँची, वह उन्होंने ग़ज़लके १० अशआरमें व्यक्त की है, जिसके ५ शेर ये हैं—

१. इश्क़के शुरूके दिन, २. पवित्र कौमार्यकी, ३. परस्पर विचारोंमें, ४. आकांक्षा रहित प्रेमकी, वासनारहित प्रेमकी, ५. वह पवित्र गिरेबान जो प्रेमोन्मादमें फाड़ा गया था, ६. सतीत्वका अभिमान, सदाचरणका गर्व, ७. तारे।

दिलो-दमाग़को रो लूँगा आह कर लूँगा
तुम्हारे इश्क़में सब कुछ तबाह कर लूँगा
अगर मुझे न मिलीं तुम, तुम्हारे सरकी क़सम
मैं अपनी सारी जवानी तबाह कर लूँगा
जो तुमसे कर दिया महरूम[१] आसमाँने मुझे
मैं अपनी ज़िन्दगी सर्फ़े - गुनाह[२] कर लूँगा
रक़ीबसे[३] भी मिलूँगा तुम्हारे हुक्मपै मैं
जो अब तलक न किया था, अब आह कर लूँगा
किसी हसीनके मासूम इश्क़में 'अख़्तर'!
जवानी क्या है मैं सब कुछ तबाह कर लूँगा

और अख़्तरने इसके बाद सचमुच अपनी जिन्दगी बर्बाद कर ली। सलमाकी शादीसे पूर्व अख़्तरको सलमाका रिश्ता अन्यत्र होनेका आभास हुआ तो आपने 'प्यारी चली जाओगी क्या' ७ बन्दकी नज़्म सलमाको भेजी, जिसके ३ बन्द इस प्रकार हैं—

मुझको तड़पता छोड़कर प्यारी चली जाओगी क्या?
मेरी निगाहे-शौक़को फ़ुरक़तमें[४] तरसाओगी क्या?
उफ़! हश्रतक यह चाँद-सी सूरत न दिखलाओगी क्या?
और फिर नहीं आओगी क्या?
प्यारी चली जाओगी क्या?

१. वंचित, २. गुनाहोंमें ग़र्क़, ३. प्रतिद्वन्द्वीसे, ४. विरहमें।

क्या यह वफ़ा है ? बेवफ़ा ! ऐसी वफ़ा होती है क्या ?
दुनियामें रस्मे-वाअ़दा अब यूँही अदा होती है क्या ?
यह है वफ़ा तो वह जो इक शै है, वफ़ा होती है क्या ?
दिलमें न शर्माओगी क्या ?
प्यारी ! चली जाओगी क्या ?

तुम जिसकी क़िस्मतमें हो, वह फ़रख़न्दा अख़्तर कौन है ?
कह दो तुम्हारे इश्क़में वह मेरा हमसर कौन है ?
वह मेरा दुश्मन लेकिन अब मेरा मुक़द्दर कौन है ?
मुझको न बतलाओगी क्या ?
प्यारी ! चली जाओगी क्या ?

एक बार सलमा अपने पतिके साथ लाहौरमें नूरजहाँके मज़ारपर आई। अख़्तरने छिपकर जो देखा, उसे १२ बन्दोंमें नज़्म किया है। जिसके ९ बन्द ये हैं—

फ़ज़ाए-ग़ममें[1] मसर्रत-सी[2] झिलमिलाई है,
ख़िज़ाँकी शाम पै[3] सुबहे-बहार छाई है,
मज़ारे-नूर जहाँपर वह शोख़[4] आई है !
गुमाँ[5] है ख़ुल्द[6]से हूरे-जनाँ[7] निकल आई
'नक़ाबे-गुलसे शमीमे-निहाँ[8] निकल आई
कि अपनी क़ब्रसे नूरे-जहाँ निकल आई

१. ग़मके वातावरणमें, २. ख़ुशी-सो, ३. पतझड़की सन्ध्यापर, ४. चंचल, ५. यक़ीन, ६. बहिश्तसे, ७. जन्नतकी हूर, ८. फूलके अन्त-रंगमें छिपी हुई सुगन्ध।

अँधेरे मक़बरेमें ग़मसे यूँ परेशाँ है,
फ़ज़ाकी[१] गोदमें गोया कि शमअ-गिरयाँ[२] है
शबे-सियाहमें[३] सैय्यारा अश्के-अफ़शाँ[४] हैं

तिलाई हाथ[५] उठे किसके फ़ातिहाके लिए
फ़ज़ाएँ होगई बेताब इल्तजाके[६] लिए
ख़ुदाई[७] काँप उठी जज़्बए-दुआके[८] लिए

यह रंग देखकर रंजूर[९] हो रहा हूँ मैं,
शराबे-दर्दसे मख़मूर[१०] हो रहा हूँ मैं,
बयाने-हाल पै मजबूर होरहा हूँ मैं,

गुदाज़[११] दिलमें, जुनूँ[१२] सरमें, लब पै शेवन भी
वह शेवन आह कि रो दे वह चश्मे-पुरफ़न[१४] भी
मगर मैं क्या करूँ है साथ शेर अफ़गन[१५] भी

इलाही गर उसे नूरे-जहाँ बनाना था
मेरे नसीबको यूँ कामगाँ बनाना था
मुझे भी ख़ुसरवे-हिन्दोस्ताँ[१६] बनाना था

१. वातावरणकी, २. रोती हुई दीपशिखा, ३. अँधेरी रातमें, ४. नक्षत्र आँसू बहाता हुआ, ५. सुनेहरी हाथ, ६. दुआके, ७. सृष्टि, ८. दुआकी भावनाको देखकर, ९. ग़मगीन, १०. मस्त, ११. व्यथा, १२. उन्माद, १३. नाले, मातमी फ़रियाद, १४. धोका देनेवाली आँखें, १५. नूरजहाँका पहला व्याहता पति (यहाँ भाव यह है कि सलमा रूपी नूरजहाँका पति भी साथ है), १६. हिन्दका जहाँगीर बादशाह ।

कि एक दिन यही नूरे-जहाँ मेरी होती
जो आज ग़ैरकी है, दिलसिताँ[१] मेरी होती
यह ग़मज़दा बद्दिले-शादमाँ[२] मेरी होती
यह किसने चुपके-से तुरबतकी सिम्त[3] इशारा किया
बताके हुस्नका अंजाम[४] दिल दो पारा[५] किया
और अपना राज़े-ग़मे-इश्क़ अश्कारा[६] किया

सलमाकी शादी हो जानेपर भी अख़्तर उसे जीवन-पर्यन्त नहीं भूले। उसपर अनेक नज़्में कहीं। हम यहाँ केवल ३ नज़्मोंके कुछ अंश दे रहे हैं—

एतराफ़े-मुहब्बत

[११ बन्दमें से ४]

लो आओ कि राज़े-पिन्हाको[७] रुसवाए-हिकायत[८] करता हूँ!
दामाने-ज़बाने ख़ामुशीको लबरेज़े शिकायत[९] करता हूँ!
घबराके हजूमे-ग़मसे[१०] आज, अफ़शाए-हक़ीक़त[११] करता हूँ!
इज़हार की[१२] जुरअत करता हूँ
मैं तुमसे मुहब्बत करता हूँ

१. हृदय-वाटिका २. दुःखी होनेके एवज़ सुखी होती, ३. क़ब्रकी तरफ़, ४. परिणाम, ५. पारा-पारा, छिन्न-भिन्न ६. इश्क़के ग़मका भेद इशारोंमें प्रकट, ७. छिपे हुए भेदको, ८. बदनाम कहानी, प्रकट, ९. शिकायतोंसे ओत-प्रोत, १०. दुःखोंसे, ११. वास्तविकता प्रकट, १२. प्रकट करनेकी, उजागर करनेकी।

मुद्दतसे मुहब्बत करता था, सौ जानसे तुमपर मरता था !
रातोंको मैं रोता रहता था, रातोंको मैं आहें भरता था !
हाँ रातोंको आहें भरता था, पर तुमसे जो कहते डरता था !
आज उसकी जसारत[1] करता हूँ,
मैं तुमसे मुहब्बत करता हूँ,

तुम चाँदसे बढ़कर रोशन हो, ज़ुहराकी[2] क़सम, तारोंकी क़सम,
तुम फूलसे बढ़कर रंगी हो, फ़ितरतके चमन ज़ारोंकी[3] क़सम
तुम सबसे हसीं हो दुनियाकी, दुनियाके नज़्ज़ारोंकी क़सम
दुनिया से भी नफ़रत करता हूँ।
मैं तुमसे मुहब्बत करता हूँ !

जब रातकी बेकस तनहाईमें[4] आपको तन्हा[5] पाता हूँ !
मैं बरबते-दिलसे[6] सोज़ो-गुदाज़े-इश्क़के नग़मे[7] गाता हूँ !
इतना तो बता दो तुम भी मुझे, क्या मैं भी कभी याद आता हूँ !
बतलाओ कि मिन्नत करता हूँ !
मैं तुमसे मुहब्बत करता हूँ !

१. हिम्मत, साहस, २. शुक्र नक्षत्र, ३. प्रकृतिके हरे-भरे उद्यानोंकी, ४. निरीह एकान्तमें, ५. अकेला, ६. दिलके साजसे, हृदय-वाद्यसे, ७. व्यथापूर्ण प्रेम-संगीत।

मुझे ले चल

[१० में-से ४]

जहाँ रंगीं बहिश्तें[1] खेलती हैं सब्ज़ाज़ारोंमें[2] !
जहाँ हूरोंकी ज़ुल्फ़ें झूमती हैं शाख़सारोंमें
जहाँ परियोंके नग़मे[3] गूँजते हैं कोहसारोंमें[4]
जवानीकी बहारें तैरती हैं, आबशारोंमें[5]
मेरी सलमा ! मुझे ले चल तू उन रंगीं बहारोंमें

वोह मस्ताना बहारें जिन पै कुर्बां अर्ज़े-जन्नत[6] है
जहाँ हर ज़र्रा[7] इक गह्वारए-मौजे लताफ़त[8] है
जहाँ रंगत ही रंगत है, जहाँ निकहत[9] ही निकहत है
मुहब्बत हुक्मराँ[10] है जिनके पाकीज़ा दयारोंमें[11] ।
मेरी सलमा ! मुझे ले चल तू उन रंगीं बहारोंमें

जहाँ शामो-सहर[12] नीली घटाएँ घिरके आती हैं !
उफ़क़की[13] गोदमें नीलमकी परियाँ मुसकराती हैं !
फ़ज़ाओंमें[14] बहारें ही बहारें लहलहाती हैं,
जहाँ फ़ितरत[15] मचलती है, लहकते अब्र पारोंमें[16] !
मेरी सलमा ! मुझे ले चल तू उन रंगीं बहारोंमें

---

१. जन्नतें, २. हरे-भरे मैदानोंमें, ३. गीत, ४. पर्वतोंमें, ५. झरनोंमें, ६. जन्नत न्योछावर, ७. अणु, कण, ८. आनन्दकी लहरोंका पालना, ९. सुगन्ध, १०. हाकिम ११. पवित्र स्थानोंमें, १२. प्रातःकाल, १३. आकाशकी, १४. वातावरणमें, १५. प्रकृति, १६. बादलोंके टुकड़ोंमें ।

जहाँ आबाद यह नापाक शहरिस्ताँ[1] नहीं होते
फ़िसादी फित्ना-परवर[2] और ज़लील[3] इंसाँ नहीं होते
यह इंसाँ, हाँ यह हैवाँ बदतर अज़ शैताँ[4] नहीं होते
फ़िसादो-शर[5] जहाँ सोते हैं, ख़्वाबोंके मज़ारोंमें !
मेरी सलमा ! मुझे ले चल तू उन रंगीं बहारोंमें

ऐ इश्क़ हमें बरबाद न कर

[१५ में-से ५]

बेदर्द ! ज़रा इंसाफ़ तो कर, इस उम्रमें और मग़मूम[6] है वोह
फूलोंकी तरह नाज़ुक है अभी तारोंकी तरह मासूम[7] है वोह
यह हुस्न, सितम ! यह रंज, ग़ज़ब ! मजबूर हूँ मैं ! मज़लूम[8] है वोह
मज़लूम पै यूँ बेदाद[9] न कर
ऐ इश्क़ ! हमें बरबाद न कर

ऐ इश्क़ ! ख़ुदारा देख कहीं, वह शोख़ हज़ीं[10] बदनाम न हो,
वह माहलक़ा[11] बदनाम न हो वह ज़ुहरा जबीं बदनाम न हो,
नामूसका[12] उसके पास[13] रहे, वह पर्दानशीं बदनाम न हो,
उस पर्दा नशींको याद न कर
ऐ इश्क़ ! हमें बरबाद न कर

१. अपवित्र शहरी, २. उत्पाती, ३. नीच, पतित, ४. हैवानों और शैतानोंसे भी बुरे, ५. झगड़े-उत्पात, ६. ग़मगीन, ७. निर्दोष, ८. अत्याचार पीड़ित, ९. ज़ुल्म, १०. दुःखी ११. चन्द्रमुखी, १२. इज़्ज़त-का, १३. ध्यान, मर्यादा ।

उस जाने-हयाका बस नहीं कुछ, बेबस है पराये बसमें है,
बेदर्द दिलोंको क्या है ख़बर जो प्यार यहाँ आपसमें है,
है बेबसी ज़हर, और प्यार है रस, यह ज़हर छिपा इस रसमें है,
कहती है हया फ़रियाद न कर
ऐ इश्क़ ! हमें बर्बाद न कर

जी चाहता है इक-दूसरेको यूँ आठ पहर हम याद करें,
आँखोंमें बसायें ख़्वाबोंको और दिलमें ख़याल आबाद करें
ख़िलवतमें[1] भी हो जल्वतका[2] समाँ, वहदतको[3] दुईसे शाद[4] करें
यह आरज़ुएँ ईजाद न कर
ऐ इश्क़ ! हमें बरबाद न कर

दुनियाका तमाशा देख लिया ग़मगीन-सी है, बेताब-सी है,
उम्मीद यहाँ इक वहम-सी है, तस्कीन यहाँ इक ख़्वाब-सी है
दुनियामें ख़ुशीका नाम नहीं, दुनियामें ख़ुशी नायाब-सी[5] है
दुनियामें ख़ुशीको याद न कर
ऐ इश्क़ ! हमें बरबाद न कर

सलमाका अन्यत्र विवाह होजानेपर अख़्तरका इश्क़ पाक इश्क़ नहीं रहा। उनके जीवनमें फिर अनेक प्रेयसियाँ आई और सभीके पीछे वे भौंरा बने मँडराते रहे। दिन-रात नशेमें धुत रहने और कूचए-हुस्नके चक्कर लगानेकी ख़बर जब सलमाके कानों तक पहुँची तो उसे भी 'देवदास'की 'पारो'की तरह व्यथा पहुँची। उसने एक पत्र लिखकर अख़्तरके इस पतनपर

१. एकान्तमें, २. मिलनका, ३. इकाईको, अकेलेपनको, ४. दोके अस्तित्वसे ख़ुश, ५. अप्राप्य-सी।

उपालम्भ दिया तो 'अख़्तर'ने उसपर विचार करनेके बजाय 'शिकस्ते-तिलस्म' शीर्षक यह नज़्म लिखकर भेज दी—

उदूकी[1] हो चुकीं जब तुम तो दावा क्यों है ? इफ़्फ़तका[2]
किसीका हो रहे कोई तो फिर इफ़्फ़त[3] कहाँ बाक़ी ?
मुहब्बतकी लताफ़त[4], जिस्मकी इस्मत[5] कहाँ बाक़ी ?
मेरी गुस्ताख़ियोंसे फिर यह शिकवा[6] क्यों है इफ़्फ़तका[7] ?
तुम्हें मुझसे मुहब्बत थी, मुझे तुमसे मुहब्बत थी ?
मैं सौ जाँसे तुम्हारी इफ़्फ़तोंकी क़द्र करता था !
तुम्हारी अज़मतोंकी, इस्मतोंकी[8] क़द्र करता था
तुम्हारी रूहमें[9] और जिस्ममें जब तक लताफ़त[10] थी ।
मगर अब जब उदूकी होके, तुम उन सबको खो बैठीं ।
तुम्हारा जिस्म झूटा हो चुका, अफ़कार[11] भी झूटे
तुम्हारे होंट झूटे हो चुके और प्यार भी झूटे
तुम अपने हाथ अपनी इफ़्फ़तोंसे[12] हाथ धो बैठीं
तो फिर मुझको, मुझीको शौक़ क्यों हो पारसाईका
तुम्हें भी चाहिए था पास[13] मेरी नारसाईका[14]

हकीम नैय्यर वास्ती लिखते हैं कि "अख़्तर जब आस्माने-शेरो-अदबपर चमके और सलमाकी यादमें उनके नग़मोंसे फ़ज़ाए-अर्ज गूँजी तो उससे सबसे ज़्यादा कालिजोंका माहौल मुतास्सिर (वातावरण प्रभावित)

१. प्रतिद्वन्द्वीकी, २. सतीत्वका, ३. कौमार्य्य, शील, ४. कोमलता, ५. पाकदामनो, पवित्रता, ६. शिकायत, ७. सदाचारका, ८. पवित्राचरणकी, ९. आत्मामें, १०. पवित्रता, ११. चिन्ताएँ, १२. सदाचरणोंसे, १३. लिहाज, १४. असफलताका ।

हुआ। जिनमें तुलबा (विद्यार्थियों) की तरह तालबातका अंसर (विद्यार्थिनीयोंका दल) भी शामिल था। इनके अलावा मुल्ककी उन अदबनवाज़ खवानीन (साहित्य-प्रेमी महिलाओं) ने अख़्तरके कलामको ख़ुशआमदेद (स्वागतम्) कहा। जिनमें-से अक्सर बड़े मुमताज और आला घरानोंकी चश्मो-चराग़ (प्रतिष्ठित और उच्च वंशीय नेत्रोंकी पुतली और ज्योति) थीं। बाज़ खवातीन (युवतियाँ) अख़्तरको यूँ ही शौक़िया ख़त लिखती थीं। बाज़ अपने कलाममें इस्लाह (संशोधन) के लिए ख़तूत लिखतीं, और मुमकिन है उनमें-से बाज़को अख़्तरसे कुछ दिली लगाव भी रहा हो। लेकिन अक्सरकी हालत यह थी कि अख़्तरकी नज़्मोंमें हुस्न और नुसवानियत (सौन्दर्य्य और स्त्रीत्व) के लिए उसके एहसासात और बेपनाह तूफ़ानी जज़्बातको देखकर उसकी क़द्रदाँ और उसके हुनरकी दिलदादा थीं। बाज़का मामूल था कि उसकी नज़्मोंमें सलमाकी कहानियाँ पढ़-पढ़कर उसको ख़तूत लिखतीं और तक़रीबन छेड़ती थीं। जो ख़्वातीन उससे अपने कलमामें इस्लाह लेतीं, अकसर उसके कमाले-फ़नकी सताइश (प्रशंसा) कर देतीं और यह अख़्तरकी सादगीए-तमन्ना (भोलापन या अज्ञानता) थी कि वे उन सब बातोंको इश्क़ो-मुहब्बतकी कार फ़र्माइयोंका नतीजा (अपने प्रेमके प्रभावका परिणाम) समझते थे। वर्ना हक़ीक़त यह है कि सलमाके बाद उन परिस्तारानें-अख़्तर (प्रशंसकों) में-से तक़रीबन सबका ताल्लुक़ अख़्तरसे ज़्यादा अख़्तरके आर्टसे था।" सलमासे सम्बन्ध न रहनेके बाद अख़्तरकी जो मनःस्थिति रही और जिन युवतियोंसे प्रेम-सम्बन्ध हुआ, उसकी कुछ झलक 'मेरी दास्ताने-हयात'से मिलती है।

[२३ में-से १२]

सितारोंकी कहानी कहिए, ख़्वाबोंका बयाँ लिखिए
वोह कहती हैं कि अपनी जिन्दगीकी दास्ताँ लिखिए

हमारी ज़िन्दगी, नैरंगिए-आलमका मंज़र है
कभी आरामे-दिल कहिए, कभी आज़ारे-जाँ लिखिए
चमनमें बर्गे-गुलपर क़तरए-शबनम जो लरज़ाँ है
उसे पेशे-नज़र रखिए, हमारी दास्ताँ लिखिए
कभी हर साँसको इक निकहते-आबे-बक़ा कहिए
कभी हर लमहेको पैग़ामे-मर्गे-नागहाँ लिखिए
कभी फूलोंकी सेजोंको हमारा दर्दे-सर कहिए
कभी जंगलके काँटोंको हमारा आशियाँ लिखिए
कभी हर लमहए-ग़मको ख़ुलासा कहिए दोज़ख़का
कभी हर फ़ुर्सते-रंगींको उम्रे-जाविदाँ लिखिए
कभी 'सलमा'के रोमाने-हसींके तज़करे कीजे
कभी 'उज़रा'के अफ़सानेको इश्क़े-रायगाँ लिखिए
कभी 'नसरीं'की उल्फ़तको गलेका हार कह लीजे
कभी 'रेहाना'की बददीतियोंको हर्ज़ेजाँ लिखिए
कभी 'परवीं'की मर्गे-आशिक़ीपर फ़ातिहा पढ़िए
कभी 'शम्सा'के ज़हरआलूद होंटोंका बयाँ लिखिए
कभी हुस्ने-'सुरैया'को हमारा आईना कहिए
कभी 'नाहीद'के दिलको हमारा आशियाँ लिखिए
कभी 'शीरीं'के मस्ताना तबस्सुमका बयाँ कीजे
कभी 'लैली'के ख़ूनीं आँसुओंकी दास्ताँ लिखिए
ग़रज़ 'अख़्तर' की सारी ज़िन्दगीका यह ख़ुलासा है,
कि फूलोंकी कहानी कहिए, शोलोंका बयाँ लिखिए

यूँ तो अख़्तरने कितनी ही प्रेयसियोंके सम्बन्धमें लिखा है, लेकिन यहाँ केवल दो नज़्म रेहाना और उज़रापर दी जा रही है—

जहाँ रेहाना रहती थी

[२२ बन्दोंमें-से ७]

यही वादी[1] है वह हमदम[2] ! जहाँ रेहाना रहती थी !
वह इस वादीकी शहज़ादी थी और शाहाना रहती थी !
कँवलका फूल थी संसारसे बेगाना[3] रहती थी !
नज़रसे दूर, मिस्ले - निकहते - मस्ताना[4] रहती थी !
यही वादी है वह हमदम ! जहाँ रेहाना रहती थी !

यह फूलोंकी हसीं आबादियाँ, काशाना[5] थीं उसका
वह इक बुत[6] थी यह सारी वादियाँ बुतख़ाना[7] थीं उसका
वह इस फ़िरदौसे-वज़्दो-रक़्समें[8] मस्ताना रहती थी
यही वादी है वह हमदम ! जहाँ रेहाना रहती थी

तबाहीकी हवा इस ख़ाके-रंगीं तक न आई थी
यह वह ख़ित्ता था जिसमें नौ बहारोंकी ख़ुदाई थी
वह इस ख़ित्तेमें मिस्ले - सब्ज़ए - बेगाना रहती थी
यही वादी है वह हमदम ! जहाँ रेहाना रहती थी !

१. घाटी, २. मित्र, ३. अलिप्त, ४. मस्ती भरी सुगन्धकी तरह, ५. स्थान, ६. प्रियतमा, ७. मन्दिर, प्रियामन्दिर, ८. तल्लीनता और नृत्य-की जन्नतमें ।

फ़िज़ाएँ गूँजती हैं अब भी उन वहशी तरानोंसे[1]
सुनो, आवाज़-सी आती है उन ख़ाकी चटानोंसे
कि जिनमें वह बरंगे-नग़मए-बेगाना रहती थी
यही वादी है वह हमदम! जहाँ रेहाना रहती थी।

मेरे हमदम! जनूने-शौक़का इज़हार करने दे
मुझे इस दश्तकी इक-इक कलीसे प्यार करने दे
जहाँ इक दिन, वह मिस्ले-ग़ुंचए-मस्ताना रहती थी
यही वादी है वह हमदम! जहाँ रेहाना रहती थी!

गुदाजे-इश्क़से लबरेज़[2] था क़ल्बे-हज़ीं[3] उसका
मगर आइना-दारे-शर्म था रूए-हसीं[4] उसका
ख़मोशीमें छुपाये नग़मए-मस्ताना रहती थी
यही वादी है वह हमदम! जहाँ रेहाना रहती थी!

यहीं हमरंगे-गुलहाए-हसीं[5] रहती थी रेहाना
मिसाले-हूरे-फ़िरदौसे-बरीं[6] रहती थी रेहाना
यहीं रेहाना रहती थी, यहीं रहती थी रेहाना
यही वादी है वह हमदम! जहाँ रेहाना रहती थी!

---

१. देहाती गीतोंसे, मस्त संगीतसे, २. व्यथापूर्ण प्रेमसे भरा हुआ, ३. दुःखी हृदय, ४. सुन्दर मुख लज्जाशील था, ५. सुन्दर फूल जैसी, ६. जन्नतकी हूर जैसी।

एक हादसा

[२७ में-से ११]

[चन्द लमहे उज़राके साथ]

कोई महजबीं[१] जल्वा दिखला गई
मेरे घर पै शामे-बहार आ गई
तसव्वुरकी[२] नेरंगियाँ क्या कहूँ
जिधर देखिए फूल बरसा गई
महकता है अब तक शबिस्ताँ[३] मेरा
फ़ज़ा[४] में बहारें-सी फैला गई
निगाहोंमें मोती बिखरने लगे
ख़यालोंमें तारे-से बरसा गई

बदन जैसे कलियोंका मासूम ख़्वाब[५]
कमर, या कोई शाख़ लहरा गई
घटाओंने देखीं न वह बिजलियाँ
जो नीची निगाहोंसे दिखला गई
वह शीरीं-तकल्लुम[६], वह रंगीं सदा[७]
बहिश्तोंकी मौसीक़ी[८] शर्मा गई

१. चन्द्रमुखी, २. चिन्तनकी, ३. शयनकक्ष, ४. वातावरणमें, ५. कोमल-मधुर स्वप्न, ६. मधुर वार्तालाप, ७. आवाज़, ८. जन्नतकी गायन कला।

सुनाई ग़ज़ल उसने इस नाज़से
कि ख़ुद शेरकी देवी लहरा गई
समाअतको[1] बुलबुलका धोका हुआ
कि नाहीद बरबत बकफ़[2] आ गई

महक बनके दम भरको ठहरी, मगर
मेरी ज़िन्दगी भरको महका गई
मेरी हसरते - बोसाको[3], नाज़से
"बुरी बात है" कह के बहला गई

अब अख़्तरका आलम यह था कि जिस किसी हसीन औरतको देखते, टकटकी बाँध देते, उसका पीछा करते। एक बार किसी सिन्धी शोख़ छोकरीने गँड़ेरिया खाकर छिलके प्लेटफ़ार्मपर फेंके तो उन्हें आप समेटकर रूमालमें घर ले आये। कोई हसीन ख़त आता तो उसे झूम झूमकर कई रोज पढ़ते और गुनगुनाते—

मिट चले मेरी उमींदोंकी तरह हर्फ़ मगर
आज तक तेरे ख़तोंसे तेरी ख़ुशबू न गई

निम्न ५ दुर्घटनाओंने अख़्तरको इतनी अधिक व्यथा पहुँचाई कि आप स्वयं अपनी मृत्युकी कामना करने लगे—१. सलमाका विरह, २. उनके छोटे बच्चेकी मृत्यु, ३. पत्नीकी आत्महत्या, ४. पिताकी मृत्यु, ५. जवान दामादका नदीमें डूब जाना। इन दुर्घटनाओंके अतिरिक्त घरवालोंकी नाराज़गीने, दोस्तोंकी बेवफ़ाईने, दिन-रातकी मैनोशीने 'अख़्तर' को हिला दिया।

१. श्रवण-शक्तिको, २. वाद्य हाथमें लिये हुए, ३. चुम्बनकी अभिलाषाको।

मुसीबतोंमें अख्तर जितने ग़र्क़ होते गये, उतने ही अधिक आप शराबमें डूबते गये। दहकती हुई आगको पानीसे बुझानेके बदले पेटरोलसे बुझाते रहे।

भारत-विभाजनसे पूर्व आपके पिता रिटायर होकर लाहौरसे सपरिवार टौंक चले गये थे, अख़्तर भी साथ गये, परन्तु आपका मन वहाँ न लगा और अकेले लाहौर वापिस चले आये, और अपने अन्तरङ्ग मित्र हकीम नैय्यर वास्तीके यहाँ रहने लगे। नैय्यर वास्तीके कथनानुसार—"इस बार भी अख़्तरके बसर औक़ातका आलम वही था। यानी रात-दिन पीना। दिनको अक्सर ग़ायब रहना, आधी रातको आना, खुद जागना, दूसरोंको जगाना। कभी-कभी नशेकी कैफ़ियतमें सलमाके मुहल्लेकी गलियोंकी ख़ाक छानकर वापिस आते।...एक रोज़ हालत ज़्यादा ख़राब हो गई तो मेयोहस्पतालमें दाखिल कराया। अचानक एक दिन तबीयत ज़्यादा बिगड़ गई और ४३ सालकी उम्रमें ९ सितम्बर १९४८ ई० की दोपहरको ज़िन्दगीकी दुश्वार गुज़ार राहोंका सफ़र ख़त्म किया।

मैं मैकदेकी राहसे होकर गुज़र गया
वर्ना सफ़र हयातका बेहद तवील था

११ सितम्बरको आपका ताबूत हस्पतालसे नैय्यर मंज़िल लाया गया और वहाँसे दफ़नानेके लिए गोरिस्तान ले जाया जा रहा था कि अख़्तरकी भूलनेवालीको अख़्तर याद आया। रास्तेमें एक बुर्क़ा-पोश ख़ातून (महिला) ने ताबूतको रुकवाकर उसका आख़िरी दीदार किया—और इसके बाद इल्मो-अदबकी यह अज़ीम दौलत हमेशाके लिए सुपुर्दे-ख़ाक कर दी गई[1]।"

अख़्तरने जहाँ रोमानी शाइरीके दरिया बहाये हैं, वहाँ प्रेरणाप्रद विप्लवी और वीरतापूर्ण नज़्में भी काफ़ी कही हैं। उनमें-से केवल—बढ़े

१. नक़्श शख़्सियात नं० २ पृ० ८९९-९००।

चलो, साक़ी तलवार उठा, निज़ामे-रंगीं, मैदाँकी आरज़ू और पाँवके ज़ख़्मी होनेपर, शीर्षक नज़्मोंके उपयोगी अंश यहाँ दिये जा रहे हैं—

बढ़े चलो

[१६ बन्दोंमें-से ६]

[एक जंगी तराना]

सुनो-सुनो कि वक़्तका कुछ और ही पयाम[1] है,
उठो-उठो कि ख़तरेमें वतनका नंगो-नाम है
बढ़ो-बढ़ो कि ग़ाज़ियोंको बढ़ने ही-से काम है,
बरंगे-जहलमो-जमन[2], बढ़े चलो, बढ़े चलो
दिलावराने-तेग़ज़न, बढ़े चलो, बढ़े चलो
बहादुराने-सफ़शिकन[3], बढ़े चलो, बढ़े चलो

रुको नहीं जो दश्तो-रीगज़ार[4] आयें सामने
बचो नहीं जो सैलो-जूएबार[5] आयें सामने
हटो नहीं जो बहरो-कोहसार[6] आयें सामने
हो राह कितनी ही कठिन बढ़े चलो, बढ़े चलो,
दिलावराने-तेग़ज़न, बढ़े चलो, बढ़े चलो
बहादुराने-सफ़शिकन, बढ़े चलो, बढ़े चलो

---

१. सन्देश, २. जेहलम और यमुना दरियाओंकी तरह, ३. शत्रुओंकी पंक्तियोंको भेदनेवाले, ४. जंगल और रेगिस्तान, ५. बहते हुए दरिया, ६. नदी-पर्वत ।

बजा[१] कि राह पुरख़तर है, और अँधेरी रात है,
मगर तुम्हारी पासबाँ[२] ख़ुदाकी पाक ज़ात है,
उसीके इख़्तियारमें हयात और ममात[३] है,
करो न फ़िक्रे-जानोतन बढ़े चलो, बढ़े चलो,
दिलावराने-तेग़ज़न, बढ़े चलो, बढ़े चलो
बहादुराने-सफ़शिकन, बढ़े चलो, बढ़े चलो

उठाओ तेग़े-बेअमाँ[४], वतनके पाक नामपर
लुटादो उम्रे–नौजवाँ, वतनके पाक नामपर
निसार कर दो अपनी जाँ वतनके पाक नामपर
सदाएँ देता है वतन बढ़े चलो, बढ़े चलो
दिलावराने-तेग़ज़न, बढ़े चलो, बढ़े चलो
बहादुराने-सफ़शिकन, बढ़े चलो, बढ़े चलो

तुम्हारे दम क़दम ही-से है शानो-शौक़ते-वतन
तुम्हारी तेग़े-तेज़ है निशाने ग़ैरते-वतन
तुम्हीं हो इज़्ज़ते-वतन, तुम्हीं हो अज़मते-वतन
बढ़ाये अज़मते-वतन, बढ़े चलो, बढ़े चलो
दिलावराने तेग़ज़न, बढ़े चलो, बढ़े चलो
बहादुराने-सफ़शिकन, बढ़े चलो, बढ़े चलो

१. यह माना कि, २. रक्षक, ३. ज़िन्दगी और मौत, ४. शरण न देने वाली, लिहाज न करनेवाली ।

सिपाहियाना ज़िन्दगी जो क़िस्मते-सईद[१] है,
तो रज़्मगहकी[२] मौत भी सिपाहियाना ईद है,
जिया तो-फ़ख़्रे-क़ौम है, मरा तो वह शहीद है,
सरोंसे बाँधकर कफ़न बढ़े चलो, बढ़े चलो,
दिलावराने-तेग़ज़न, बढ़े चलो, बढ़े चलो
बहादुराने-सफ़शिकन, बढ़े चलो, बढ़े चलो

साक़ी उठ ! तलवार उठा

[२१ में-से ३]

दुश्मन है क़रीब और ख़तरेमें है माहलक़ाए-आज़ादी[३]
दिल मेरा निसारे-आज़ादी[४], जाँ मेरी फ़िदाए[५]-आज़ादी
उठ जल्द कि ग़ासिब[६] छीन न लें हाथोंसे लिवाए-आज़ादी[७]
वह हल-हलए—यलग़ार[८] उठा
उठ साक़ी ! उठ तलवार उठा

ग़ैरत[९] कि उदूके नरग़ोमें[१०] है ख़ाके-वतन बुस्ताने-वतन
नापाक क़दमसे ग़ैरोंके आलूदा न हो, मैदाने-वतन
यह उम्रे-जवाँ गुलकारे-वतन यह इश्क़े-हुसेन क़ुरबाने-वतन
फिर वलवलए-पैकार उठा
उठ साक़ी ! उठ तलवार उठा

---

१. मुबारक क़िस्मत, शुभभाग्य, २. रण-क्षेत्रकी, ३. स्वतंत्रतारूपी चन्द्रमुखी, ४. आज़ादीपर न्योछावर, ५. क़ुर्बान ६. शत्रु, अधिकार छीननेवाला ७. स्वतंत्रताकी पताका, ८. आक्रमणकी बागडोर, ९. शर्मकी बात है, १०. शत्रु समूहमें ।

वोह देख वतनकी सरहद पर दुश्मनके असाकर[1] छाने लगे
मौजोंकी तरह बिल खाने लगे, तूफ़ाँकी तरह लहराने लगे
दामाने-उफ़क़से तैयारे[2] आग और धुँआँ बरसाने लगे
या अब्र सरे-कुहसार[3] उठा
उठ साक़ी ! उठ तलवार उठा

निज़ामे-रंगीं

[२१ में-से १०]

उठा जाम साक़ी ! जहाँको बदल दें
निज़ामे - ज़मीनो - ज़माँको[4] बदल दें !
पिलादे कुछ ऐसी कि ठोकर लगाकर !
ज़मीं ही नहीं आसमाँको बदल दें
इमारत है बोसीदा[5] साग़र हैं कुहना[6]
ज़रूरत है दैर - मुग़ाँको[7] बदल दें

ज़रूरत है इक साक़िए - नौजवाँ की
है मौक़ा कि पीरे - मुग़ाँको बदल दें

१. सैनिक, २. आकाशसे वायुयान, ३. पानी बरसानेवाली घटाएँ, ४. पृथ्वी-आकाशकी व्यवस्थाको, ५. जीर्ण-शीर्ण, ६. पुराने, ७. मदिरालयके स्वामीको ।

वही एक मंज़र[1] है सदियोंसे[2] तारी[3]
तिलस्मे - महो - कहकशाँको[4] बदल दें

है अम्नो - अमाँ[5] मौत इंसानियतकी !
फ़ना - ज़ारे[6] - अम्नो-अमाँको बदल दें

हुकूमतकी बुनियाद[7] है ख़ुदगिरीपर[8]
हम इस ख़ुदगिरीके जहाँको बदल दें !

है गुमराह रहबर[9] शबे-तार[10] सरपर
चलें हम रहे - कारवाँको[11] बदल दें

....

हमारे दहनमें[12] ज़बाँ ग़ैरकी[13] है !
बनें ग़ैर और उस ज़बाँको बदल दें

मुहब्बत ख़ुशीका तराना है कह दो
कि उश्शाक़[14] तर्ज़े-फ़ुग़ाँको[15] बदल दें

१. दृश्य, २. युगोंसे, ३. छाया हुआ । ४. चन्द्र और आकाशगंगाको, ५. शान्ति-सुरक्षा, सुख-चैन, ६. तबाही लाने वाले, ७. नींव, ८. स्वार्थपर, ९. पथ-प्रदर्शक भूला १०. अँधेरी रात, ११. यात्री दलके मार्गको, १२. मुँहमें १३. विदेशी भाषा, १४. आशिक़ लोग १५. आहो-नाला करनेका ढंग ।

मैदांकी आर्ज़ू

[८ मैं-से २]

गुलकी है आर्ज़ू[1] न गुलिसिताँकी[2] आर्ज़ू
सीनेमें हश्र ख़ेज़[3] है, मैदाँकी आर्ज़ू[4]
मर्दोंको मुतरिबो-मै-ओ-मीनासे[5] काम क्या
है तीरो - तेग़ो - ख़ंजरे - बुर्राकी आर्ज़ू

पाँव ज़ख़्मी होनेपर

यारब ! अव्वल तो मेरे ज़ख़्म न आया होता
शिद्दते - दर्दने[6] इतना न सताया होता !
या यह सूरत थी मुनासिब कि मेरा क़ल्बे-रक़ीक़[7]
दर्दे - एहसाससे[8] तूने न बनाया होता
गर यह मुमकिन न था यारब ! तो मेरे सीनेमें
मेरा दिल अपना न नहीं, बल्कि पराया होता !
यह भी मुश्किल था इलाही तो मेरे पाँवका ज़ख़्म
साथ तैमूरकी[9] तक़दीर भी लाया होता

---

१. फूलोंकी इच्छा, २. उद्यानकी, ३. उमंगें उठ रही हैं, ४. रणक्षेत्रमें जानेकी इच्छाएँ, ५. शराब और मदिरा-पात्रसे। ६. दर्दकी बेचैनीने, ७. तुच्छ हृदय, ८. दर्दकी वेदनासे परिचित ९. तैमूर बादशाह लँगड़ा था, उस जैसा भाग्य दिया होता।

यह भी उम्मीदसे बढ़कर है तो मेरे माबूद !
'बायरिन' ही का - सा हासिल मुझे पाया होता
और अगर ज़ख़्म ही आना था बहर रंग तो यह
मुल्कके वास्ते मैदानमें आया होता

आगेके पृष्ठोंमें अख़्तरकी भिन्न-भिन्न प्रकारकी नज़्में दी जा रही हैं—

अंजामे-हस्ती

[४२ में-से २६]

बहिश्तज़ार - नज़र[१] इक हसीन मंज़र[२] है,
और उसकी गोदमें इक हूरे-माह पैकर[३] है,
बहारे - शामका इक मुस्तक़िल नज़ारा[४] है,
सिपेहरे - हुस्नका टूटा हुआ सितारा[५] है,
ग़रज़ वह कुछ भी है इक नौजवान औरत है,
कमाले-सनअ़तो-फ़ितरतकी जान[६] औरत है,
वह इस तरब कहदे[७] सैर करने आई थी,
बहरे-गुलकी कशिश[८] घरसे खींच लाई थी !
निगाहें कर रही थीं, जज़्ब[९] कैफ़े-मंज़रको[१०] ।
कि उसने देख लिया ।एक कासए-सरको[११]

---

१. स्वर्ग तुल्य, २ सुन्दर दृश्य, ३. चन्दमुखी, ४. स्थायी दृश्य, ५. सौन्दर्यरूपी आकाशका टूटा हुआ नक्षत्र, ६. कला और प्रकृतिकी जान, ७. आनन्दपूर्ण स्थानमें, ८. उद्यानकी शोभा देखनेकी रुचि, ९. आत्मसात्, १०. दृश्यकी मस्तीको, ११. मृतक खोपड़ीको ।

झिजकके रह गई नेरंगे-आरज़ू[1] होकर
ठिठकके रह गई आहंगे-जुस्तजू[2] होकर
और अब खड़ी हुई हसरतसे देखती है उसे
अजीब दीदए - इबरतसे[3] देखती है उसे

इधर हवाए - नवाज़ेर शोर करती है,
उधर वह दिलमें कुछ इस तरह ग़ौर करती है
कि यह न जाने किस इंसानका कासए-सर[4] है
इलाही किस क़दर अन्दोहनाक मंज़र[5] है !

पड़ा है ख़ाकपर नामो-निशाँ कुछ भी नहीं
अज़ीज़, दोस्त, मकाँ, जिस्म, जाँ कुछ भी नहीं
शबाबो - हुस्न[6] पै होगा कभी ग़रूर[7] उसे
शराबे-ऐशका होगा कभी सरूर[8] उसे

कभी हमारी तरह यह भी नाज़नीं होगा
हसीन होगा और इतना कि महजबीं[9] होगा
मचलता होगा इन्हीं गालोंपर शबाब कभी
उबलती होगी इन्हीं आँखोंमें शराब कभी

मगर अब इसमें वह पहली-सी कोई बात नहीं
जहाँमें आह ! किसी चीज़को सबात[10] नहीं

१. कामनाओंके तिलिस्ममें खोकर, २. खोजके प्रयासमें, ३. आश्चर्यचकित होकर नसीहत भरी नज़रोंसे, ४. खोपड़ी, ५. भयानक दृश्य, ६. यौवन और रूपपर, ७. अभिमान, ८. नशा, ९. चन्द्रमा जैसा मुख, १०. स्थायित्व ।

नसीब थे कभी ज़र्रीन पैरहन[1] इसको
मिला न बादे-फ़ना[2] एक गज़ कफ़न इसको
सितम नसीबका[3] कोई मज़ार[4] भी तो नहीं
मिटा है इतना कि बाक़ी ग़ुबार भी तो नहीं
मेरा भी एक दिन ऐसा ही हाल होना है
मुझे भी इसकी तरह पायमाल होना है
यह जिस्म जिसमें शबाब[5] आज लहलहाता है
यह जिस्म जिसको हिजाब आज गुदगुदाता है
यह आँख जिनमें जवाँ मस्तियाँ झलकती हैं
यह होंट जिनमें शराबें पड़ीं झलकती हैं
यह हुस्न आज जो इस तरह जगमगाता है
जो सारी बस्तीमें इक आग-सी लगाता है
लिबास जिससे यह गुल वादियाँ महक जायें
यह बाल जिनसे कुल आबादियाँ बहक जायें
ख़ुदा ही जाने कि कल इनका हाल क्या होगा ?
मुझे ख़बर नहीं मेरा मआल क्या होगा ?
जफ़ाए-मर्गसे[6] महफ़ूज़[7] अगर ख़ुदा कर दे
मुझे फ़ना - गहे-हस्तीमें[8] लाफ़ना[9] कर दे
वह हुस्न बख़्श दे जिसको कभी ज़वाल[10] न हो
वह जिस्म बख़्श दे जिसका कभी यह हाल न हो

---

१. सुनेहरी कामके वस्त्र, २. मृत्युके बाद, ३. अभागेका, ४. क़ब्र, ५. यौवन, ६. मृत्युके ज़ुल्मसे, ७. सुरक्षित, ८. असार संसारमें, ९. अमर, १०. पतन।

मगर मुहाल[१] है यह आज़ू[९] ज़मानेमें
फ़क़त फ़ना[२] ही की बातें हैं, इस फ़सानेमें
कहाँ नहीं है फ़ना, हाँ, कहाँ नहीं मिलती ?
किसीको ज़िन्दगीए-जाविदाँ[३] नहीं मिलती
ज़माना क्या है, तख़ैय्युलका[४] कारख़ाना है,
मुसव्विराने-फ़नाका[५] निगारखाना[६] है

यहाँके रंज, यहाँकी[७] मसरतें फ़ानी[८]
यहाँके हुस्न, यहाँकी मुहब्बतें फ़ानी

अजलके[९] हाथमें इन्सान इक खिलौना है
जिसे किसी-न-किसी दिन तबाह होना है

एक शाइराकी शादीपर !

[२६ मै-मे १३]

जिसको दावा था कि वह "दुनियामें सिर्फ़ शाइराना ज़िन्दगी गुज़ारने आई है।"

ऐ कि था उंस[१०] तुझे इश्क़के अफ़सानोंसे[११] !
ज़िन्दगानी तेरी आबाद थी रोमानोंसे[१२] !

१. असम्भव, कठिन, २. मिटनेकी, मृत्युकी, ३. अमर ज़िन्दगी, ४. कल्पनाओंका, ५. मृत्युके कलाकारोंका, ६. चित्र-संग्रहालय। ७. खुशियाँ, ८. नाशवान, अस्थायी, ९. मृत्युके, १०. लगाव, अनुराग, ११. मुहब्बत सम्बन्धी बातोंसे, १२. चाहतकी बातोंसे, इश्क़से।

शेरकी गोदमें पलती थी जवानी तेरी !
तेरे शेरोंसे उबलती थी जवानी तेरी !
रश्के-फ़िरदौस[1] था हर हुस्न भरा ख़्वाब तेरा !
एक पामाल[2] खिलौना था यह महताब[3] तेरा !

शिरकते-ग़ैरसे[4] बेगाना[5] थे नग़मे[6] तेरे !
इस्मते-हूरका[7] अफ़साना थे नग़मे तेरे !

ग़ायब अज़ चश्म[8] थी जन्नतकी बहारोंकी तरह !
दस्ते-इन्सानसे[9] थी महफ़ूज़[10] सितारोंकी तरह !
सुहबते-ग़ैरसे घबराती थी तनहाई तेरी !
आइनेसे भी तो शर्माती थी तनहाई तेरी !

मौजे-कौसरका[11] छलकता हुआ पैमाना थी !
ग़ैर होंटोंके तसव्वुरसे[12] भी बेगाना[13] थी !
अब गवारा[14] हुई क्यों ग़ैरकी सुहबत[15] तुझको ?
क्यों पसन्द आ गई ना ! जिन्सकी शिरकत[16] तुझको ?

हविस आलूदा[17] हुई पाक जवानी तेरी !
ग़ैरकी रात है अब, और कहानी तेरी !

१. जन्नतके लिए ईर्ष्या योग्य, २, गया बीता, टूटा हुआ, ३. चन्द्रमा, ४. पुरुष-संसर्गसे, ५. अनभिज्ञ, ६. गीत, सुहबत, ७. देवाङ्गनाओंके शीलका, ८. नेत्रोंसे छिपी हुई, ९. मानव-करोंसे, १०. सुरक्षित, ११. जन्नतमें बहनेवाली मदिरा-नहरकी लहरका, १२. ख़यालसे, १३. अपरिचित, १४. रुचिकर, १५. पुरुष संगति, १६. शारीरिक संसर्ग, १७. काम-विभोर ।

तीरगी हिर्सकी[१] हूरोंको भी बहका ही गई !
तेरे बिस्तरपै भी आख़िरको शिकन[२] आ ही गई !
अब नहीं तुझमें वह हूरोंकी-सी इफ़्फ़त[३] बाक़ी !
हूर थी तुझमें गई, रह गई औरत बाक़ी !
हाँ वह औरत जिसे बच्चोंका फ़साना कहिए !
बरबते-नफ़्सका[४] इक फ़ुहश तराना[५] कहिए !
सोगवार[६] अपनी जवाँ मौतका होने दे मुझे
मुसकरा तू, मगर इस हालपै रोने दे मुझे

नन्हा मेहमान

[२५ में-से १७]

सारे घरमें नौ-बहारे-ज़िन्दगी[७] लाया है तू
मेरे नन्हे मेहमाँ ! किस देशसे आया है तू ?
किस बहिस्ते-हुस्नमें अब तक था काशाना[८] तेरा
मेरे उजड़े बाग़में क्योंकर हुआ आना तेरा ?
किस ज़बाँमें चुपके-चुपके गुफ़्तगू[९] करता है तू !
कौन जाने किस तरहकी हा-ओ-हू करता है तू ?
मेरी बीवीकी तेरे रुख़सारमें[१०] रंगत है क्यों !
अजनबी महमान होकर इसका हमसूरत[११] है क्यों !

१. लालसाकी अँधेरी, २. सलवट, ३. सतीत्व, पवित्रता, ४. ऐन्द्रियिक वाद्यका, ५. अश्लील गीत, ६. शोकाकुल, ७. जीवनमें नई बहारें, ८. निवास-स्थान, ९. वार्त्तालाप, १०. कपोलमें, ११. समान शक्लवाला ।

दो दिलोंकी इल्तजा[१] तामीर होकर आ गई
दो निगाहोंकी यही तसवीर होकर आ गई
गर्चे पासे-मेहमानी-ओ-मुरव्वत है मुझे !
अजनबी मेहमान ! लेकिन इक शिकायत है मुझे !
तूने आकर मेरी बीवीकी मुहब्बत छीन ली !
उसका दिल छीना, मेरे दिलकी मसर्रत[२] छीन ली
मेरे घरमें मेहमाँ होकर तू रहज़न[3] बन गया
उसका आशिक़ हो गया और मेरा दुश्मन बन गया
अब वह पहलेकी तरह मुझपर फ़िदा[४] होती नहीं
मुझसे रहती है जुदा, तुझसे जुदा होती नहीं
उफ़ ! यह कैसा इन्क़िलाबे-आसमानी हो गया
उसका मेरे पास आना इक कहानी हो गया !
इश्क़का पहला-सा अब इज़हार वह करती नहीं
मुझसे पहलेकी तरह अब प्यार वह करती नहीं
तेरा आना था कि उसने बेवफ़ाई सीख ली
एक घरमें रहके भी मुझसे जुदाई सीख ली
तेरे इश्क़े-सहरज़ामें[५] मुब्तला[६] रहने लगी
साथ रहकर भी मेरे मुझसे जुदा रहने लगी
मेरा बिस्तर था जो इक दिन तेरा बिस्तर हो गया
जो मुक़द्दर था मेरा, तेरा मुक़द्दर हो गया

१. इच्छाएँ, २. ख़ुशी, ३. लुटेरा, ४. अनुरक्त, ५. प्रेमवशीकरणमें, ६. रत ।

तूने आकर ग़ासिबाना[1] क़ब्ज़ा घरपर कर लिया
घर पै क़ब्ज़ा क्या किया, हर दिल मुसख़्ख़र[2] कर लिया
नौकरोंको भी नहीं है मेरी राहतका[3] ख़याल
सबके दिलमें मौज़्ज़न[4] है तेरी ख़िदमतका ख़याल
तूने आते ही बहारे-ज़िन्दगानी लूट ली
मेरी तिफ़्ली[5] छीन ली, मेरी जवानी लूट ली

ना-रज़ामन्दीकी शादी

बग़ैर मर्ज़ीकी शादी भी क्या क़यामत है
यह उम्र भरके लिए इक मुहीब[6] लानत है,
है इसका ग़मकद: - हिन्दमें रिवाज बहुत
बग़ैर माँगे मिला करते हैं यह ताज बहुत
यह शादी वोह है, जिसे वालिदैन[7] करते हैं,
अदा समझके इसे फ़र्ज़े-ऐन करते हैं!
यह कुछ ज़रूर नहीं जानिबैन[8] राज़ी हों
यह शर्त है कि फ़क़त वालिदैन राज़ी हों,
कहो अब इन ज़नो-शौहरका[9] हाल क्या होगा
इस इज़्दवाजका[10] आख़िर मआल[11] क्या होगा ?

१. अधिकार छीननेवालोंकी तरह, २. अधिकारमें, बसमें, ३. सुख-सुविधाका, ४. प्रवाहित ५. बाल्यावस्था, ६. भयानक, ७. माता-पिता, ८. दोनो पक्ष, दूल्हा-दुल्हन, ९. पत्नी-पतिका, १०. शादीका, ११. परिणाम ।

तमाम उम्र रहीने-अलम[1] हुई कि नहीं!
तमाम ज़िन्दगी अब सर्फ़े-ग़म हुई कि नहीं?
यह शादी आह जहन्नुमका राज[2] कहिए इसे
सरीरे-ऐशपै काँटोंका ताज कहिए इसे
यह शादी क्या है फ़क़त तल्ख़ियोंका मख़ज़न[3] है,
जवाँ दिलोंकी जवाँ हसरतोंका मदफ़न[4] है,
क़दीम दौरे-जहालतका[5] इक शुआर[6] है यह
कि वालिदैनका नाजाइज़ इख़्तियार है यह
हसीन आर्ज़ूओंका[7] यह ज़िबहख़ाना[8] है,
सरूदे-दर्दका[9] इक दोज़ख़ी तराना[10] है,
जवाँ दिलोंको यह शादी तबाह करती है
शगुफ़्ता होंटोंको[11] मसरूफ़े-आह[12] करती है
सरूदे-ज़हर[13] है यह नूरे-तीराफ़ाम[14] है यह!
निशाते-तल्ख़[15] है यह, इशरते-हराम[16] है यह!
गुलूए-ऐशमें[17] इक लानतोंका हार है यह
सवादे-हिन्दमें[18] शैताँकी यादगार है यह
यह बादा[19] वोह है कि जिसमें मिला हुआ है ज़हर
यह शहद वह है कि जिसमें छुपा हुआ है ज़हर

---

१. दुःखोंसे पूर्ण, २. नरकका राज्य, ३. दुःखों-कड़ुआहटोंका स्थल, ४. इच्छाओंकी समाधि, ५. मूर्खताके पुराने युगका, ६. रिवाज ७. सुन्दर स्वप्नोंका, ८. वधस्थल, ९. दर्दके वाद्ययत्रका, १०. नारकीय गीत, ११. हँसते हुए ओठोंको, १२. आहोंमें परिणत, १३. विषका नशा, १४. अँधेरा प्रकाश. १५. कड़वा सुख, १६. सुख वैभव रहित, १७. सुख-चैनके गलेमें, १८. कृष्णवर्ण भारतमें, १९. शराब।

जवान रूहोंकी ख़ामोश क़त्लगाह है यह
ख़ुदाके नामपै सबसे बड़ा गुनाह है यह

मदरसेकी लड़कियोंकी दुआ !

बच्चोंके लिए

यारब ! यही दुआ है, तुझसे सदा हमारी
हिम्मत बढ़ा हमारी, क़िस्मत बना हमारी
तालीममें कुछ ऐसी, हम सब करें तरक़्क़ी
ग़ैरोंकी इन्तहा[1] भी हो इब्तदा[2] हमारी
नफ़रत बुराईसे हो, उल्फ़त भलाईसे हो
रग़बत[3] सफ़ाईसे हो, यह है दुआ हमारी
कहना बड़ोंका मानें, अच्छा बड़ोंको मानें
सब अपने जीमें ठानें, यह है रज़ा[4] हमारी
तेरे करमका साया[5] हरदम हो सर पै छाया
तेरी मदद ख़ुदाया ! हो रहनुमा[6] हमारी
हर इल्मके ख़ज़ाने पायें नये-पुराने
इस तरहसे ठिकाने मेहनत लगा हमारी
पढ़-लिखके नाम पायें, कुछ काम कर दिखायें
तेरे हुज़ूरमें है, यह इल्तजा[7] हमारी

१. चरमसीमा, अन्तिम शिक्षा, २. प्रारम्भिक, ३. लगाव, ४. इच्छा, ५. कृपा की छाया, ६. पथप्रदर्शक, ७. प्रार्थना।

एक अज़ीज़ाकी शादीपर !

ससुराल जाते हुए दुआ

उम्मीद दिलमें, निगाहोंमें नूर[१] बनके रहो
हरीमे-रूहमें[२], रूहे-सुरूर[३] बनके रहो
बहिश्ते-ज़ारे-मईशतमें[४] हूर बनके रहो

तुम्हें नसीब हों कुल रहमतें ख़ुदाईकी !
ख़ुदाकी रहमतें और राहतें ख़ुदाईकी
निगाहे-दहरमें[५] रंगे-ग़रूर[६] बनके रहो

हमारे दिलकी दुआको क़ुबूल होना था
तुम इक कली थीं जिसे खिलके फूल होना था
जहाँ रहो गुल, नूरो-सरूर बनके रहो

हयाते-नौकी[७] यह ज़रीं फ़िज़ा[८] मुबारक हो
उरूजे-ज़िन्दगीकी[९] इब्तदा[१०] मुबारक हो
कमाल अज़्र्ए-शमए-तूर[११] बनके रहो

१. प्रकाश, रोशनी, २. हृदयमन्दिरमें, आत्मारूपी काबेमें, ३. प्रसन्न हृदय, ४. ज़िन्दगीकी जन्नतमें, ५. दुनियाकी नज़रोंमें, ६. स्वाभिमानी, ७. नवजीवनकी, ८. सुनहरी बहार, ९. जीवनके उत्थानकी, विकासकी, १०. शुरूआत, ११. तूर पर्वतके पवित्र प्रकाशके समान ।

हरीमे-ज़िन्दगी रोशन हो सरबसर तुमसे
सवादे-महफ़िले-उल्फ़त[1] हो जल्वागर[2] तुमसे
जहाँमें माहे-सिफ़त सैले-नूर[3] बनके रहो,

हयातो-हुरमतो-महरो-वफ़ाकी[4] जान बनो
हिजाबो-इस्मतो-शर्मो-हयाकी[5] कान बनो
बहारे-हुस्नो-तरबका वफ़ूर[6] बनके रहो

नये अज़ीज़ तुम्हें रहमते-ख़ुदा[7] समझें
तुम्हारे सायाको[8] भी सायए-हुमाँ[9] समझें
सहाबे-फ़ज़्ले-ख़ुदाए-ग़फ़ूर[10] बनके रहो

चमनमें बुलबुले-बेदिल तराना अफ़शाँ है,
कि हो अज़ीज़ोंसे रुख़सत ख़ुदा निगहबाँ है,
निशाने-रहमते-रब्बे-ग़फ़ूर बनके रहो

निज़ामे-अख़्तरी जब तक शुआअबार रहे
तुम्हारे बाग़में शादाबिए-बहार रहे
दुआ है सबके दिलोंमें सुरूर बनके रहो

---

१. सतीत्वकी महफ़िल, २. प्रकाशमान, ३. चाँदनी, ४. जीवन, इज्ज़त, दया-नेकीकी, ५. लाज, शील, शर्मकी, ६. सौन्दिर्य और आनन्दकी बहारोंका भण्डार, ७. ईश्वरीय कृपा, ८. परछाईंको, ९. हुमाँ पक्षीकी छाया, १०, दयाकी घटाएँ।

पहला ख़त

एक बीवीकी तरफ़से अपने शौहरके नाम

लैलाए - राज़े-शौक़का महमिल[1] है हातमें
यानी बजाए ख़ामा[2] मेरा दिल है हात में
अहवाले-दिल[3] लिखूँ ? ख़लिशे-मुद्दआ[4] लिखूँ ?
रुकती हूँ लफ़्ज़-लफ़्ज़ पै आख़िर मैं क्या लिखूँ ?
दिल अपनी धड़कनोंको छुपा जाये किस तरह ?
पहले-पहलका ख़त है लिखा जाये किस तरह ?
लिखनेको तो मैं लिखती हूँ तुमको हज़ार ख़त
लिख-लिखके फाड़ देती हूँ पर बार-बार ख़त
गुस्ताख़ीका ख़याल गर आये तो क्या करूँ ?
दिल शर्मसे जो हात दबाये तो क्या करूँ ?
ख़तके ख़यालने मुझे तुमसे मिला दिया !
और मेरी बेख़ुदीपै क़लम मुसकरा दिया !
पहले-पहलकी मश्क़को मजबूर जानिए !
बे - रब्तिए - ख़यालको माज़ूर[5] जानिए

मुझसे बयाने - शौक़को ज़ाहिर किया भी जाय
लिखनेका हौसला है मगर कुछ लिखा भी जाय

क्या मेरी बेख़ुदीका पता पा गया है कुछ ?
काग़ज़से झुकके मेरे क़लमने कहा है कुछ

१. प्रेमके भेद रूपी लैलाका महमिल, २. क़लम, ३. दिलका हाल, ४. हृदयाभिलाषाकी चुभन, ५. असमर्थ ।

कर जायेगा ख़फ़ा कि हँसा जायगा यह ख़त
अल्लाह किस नज़रसे पढ़ा जायगा यह ख़त
पहले-पहलके ख़तमें, मैं क्या माजरा लिखूँ
कह दो 'यह क्या लिखा है' मैं कहती हूँ 'क्या लिखूँ'
तारी जो इक हुजूमे-ख़यालात[१] दिलपै है !
इक हातमें क़लम है और इक हात दिलपै है !

औरत

हयातो-हुरमतो-महरो-वफ़ाकी[२] शान है औरत !!
शबाबो-हुस्नो-अन्दाज़ो-अदाकी[३] जान है औरत
हिजाबो - इस्मतो - शर्मो - हयाकी[४] कान है औरत
जो देखो ग़ौरसे हर मर्दका ईमान है औरत
अगर औरत न आती कुल जहाँ मातमकदा[५] होता
अगर औरत न होती हर मकाँ इक ग़मकदा[६] होता
जहाँ में एक सच्चे मर्दकी तक़दीर है औरत !
तिलस्मे-आलिमे-बालाकी इक अक्सीर है औरत !
यदे-क़ुदरतमें[७] इक चलती हुई शमशीर है औरत
ज़मींपर फ़ितरते - मासूमकी तसवीर है औरत
जहाँ में करती है शाही[८] मगर लश्कर[९] नहीं रखती
दिलोंको करती है ज़ख़्मी मगर ख़ंजर नहीं रखती

---

१. भावनाओंका समूह उमड़ पड़ा है, २. जिन्दगी, इज्ज़त, महर्बानी, नेकीकी, ३. जवानी, रूप, हाव-भावकी, ४. लज्जा, शील, शर्म-लाजकी, ५. शोकस्थल, ६. दुःखोंका घर, ७. प्रकृतिके हाथमें, ८. बादशाहत, हुकूमत, ९. फ़ौज ।

कहीं मासूम तिफ़्ली[1] इसके नग़्मोंसे[2] बहलती है,
कहीं बेख़ुद जवानी इसके नोशे-लबसे[3] फलती है,
कहीं मजबूर पीरी[4] इसकी बातोंसे सम्भलती है,
कहीं आरामसे जाँ इसके क़दमोंपर निकलती है,
नहीं है किब्रिया[5] लेकिन यह शाने-किब्रियाई[6] है,
हमारी सारी प्यारी उम्रपर इसकी ख़ुदाई है,

इसी की बू है दुनियाके लहकते ग़ुंचा ज़ारोंमें[7]!
इसीका रंग गुलशनकी महकती नौ - बहारोंमें
इसीके नग़्में[8] जन्नतके मचलते आबशारोंमें[9]
इसीका नूर, क़ुदरतके बहारों जल्वाज़ारोंमें
बहारे - आफ़रीनिश है ! शबाबे - ज़िन्दगानी है !
जवाँ फ़ितरतका इक खोया हुआ ख़्वाबे-जवानी है !

वह रोती है तो सारी कायनात[10] आँसू बहाती है,
वह हँसती है तो फ़ितरत[11] बेख़ुदीसे मुसकराती है,
वह सोती है तो सातों आसमाँको नींद आती है,
वह उठती है तो कुल ख़्वाबीदा दुनियाको उठाती है,
वही अरमाने - हस्ती है ! वही ईमाने-हस्ती है !
बदन कहिए अगर हस्तीको तो वह जाने-हस्ती है !

---

१. भोली बाल्य-अवस्था, २. गीतोंसे, ३. ओठोंके चुम्बनसे, ४. वृद्धावस्था, ५. ख़ुदा, ६. ख़ुदाई-शान, ७. उद्यानोंमें, ८. गीत, ९. झरनोंमें, १०. दुनिया, ११. प्रकृति ।

वह चाहे तो उलट दे पर्दए - दुनियाए-फ़ानीको[1]
वह चाहे तो मिटा दे जोशे-बहरे - ज़िन्दगानीको[2]
वह चाहे तो जला दे नख़्ले - ज़ारे - हुक्मरानीको[3] !
वह चाहे तो बदल दे रंगे - बज़्मे - आस्मानीको
वह कह दे तो बहारे-जल्वा मिट जाये नज़ारोंसे
वह कह दे तो लिबासे-नूर छिन जाये सितारोंसे

नन्हा क़ासिद

[१६ में-से १०]

तेरा नन्हा-सा क़ासिद[4] जो तेरे ख़त लेकर आता था
न था मालूम उसे, किस तरहके पैग़ाम[5] लाता था
समझ सकता न था वह ख़तमें कैसे राज़ पिन्हाँ[6] हैं,
हरूफ़े-सादामें किस इश्क़के अन्दाज़ पिन्हाँ हैं,
उसे क्या इल्म इन रंगीं लिफ़ाफ़ोंमें छुपा क्या है
किसी महवशका[7] इनके भेजनेसे मुद्दआ[8] क्या है ?

मगर मुझको ख़याल आता था अक्सर उस ज़मानेमें
कि उसकी हैरते-तिफ़्ली[9] है क्यों गुम इस फ़सानेमें
वह बाई कमसिनी क्या यह न दिलमें सोचता होगा ?
कि बाजीने[10] हमारी अपने ख़तमें क्या लिखा होगा ?

---

१. नश्वर दुनियाके पर्देको, २. जिन्दगीके दरियाके जोशको, ३. हुकूमतरूपी पेड़को, ४. बालक पत्रवाहक, ५. सन्देश, ६. छिपे हुए भेद, ७. सुन्दरीके, ८. आशय, ९. बचपनका आश्चर्य, १०. बड़ी बहनने ।

और आख़िर वह इसीको नामा[1] लिखकर भेजती क्यों है ?
कभी भेजा तो भेजा, लेकिन अक्सर भेजती क्यों है ?

वही नन्हा-सा क़ासिद नौजवाँ होकर मिला मुझको
ज़मानेके तग़ैय्युरने[2] परेशाँ कर दिया मुझको
जनूने-इब्तदाए-इश्क़ने[3] करवट-सी ली दिलमें
पस अज़मुद्दत यह लैला आ गई फिर अपने महमिलमें[4]
तेरे क़ासिदसे मिलते वक़्त मुझको शर्म आती थी
मगर उसकी निगाहोंमें शरारत मुसकराती थी
शरारतका यह नज़्ज़ारा मेरी हैरतका सामाँ था
कि उस पर्देके अन्दर तेरा राज़े-इश्क़ उरिया था[5]

हरजाई

[२६ में-से ४]

तेरे सीनेमें था रक़्साँ हिर्सका आतिशकदा[6]
जिसको नूरे-शमए-इश्क़े-जाविदाँ[7] समझा था मैं
तेरे होंटोंसे उबलती थी हविसकी तीरगी[8]
जिसको ग़मकी पाक आहोंका धुआँ समझा था मैं

---

१. पत्र, २. इन्क़िलाबने, ३. प्रारम्भिक प्रेमके उन्मादने, ४. प्रेयसी आख़िरकार पत्नी बन गई, ५. इश्क़का भेद नग्न था, ६. कामुकताकी आगकी भट्टी प्रज्वलित थी, ७. अमर प्रेमके दीपकका प्रकाश, ८. कामुकताकी अँधेरी ।

तेरे पहलूसे निकलती थी गुनाहोंकी भबक
जिसको बूए-दामने-हूरे-जिनाँ[१] समझा था मैं
एक नागिन बनके लहराती है तू अफ़कारमें[२]
हुस्नकी इक सलसबीले-बेकराँ[३] समझा था मैं

ओ देससे आनेवाले बता

[१७ में-से ७]

ओ देससे आनेवाले बता,
किस हालमें है याराने-वतन ?
आवारए - ग़ुर्बतको[४] भी सुना !
किस रंगमें है कनआने-वतन[५]
वह बाग़े-वतन फ़िरदौसे-वतन[६]
वह सर्वे-वतन रेहाने-वतन[७]
ओ देससे आनेवाले बता

क्या अब भी वहाँके बाग़ोंमें
मस्ताना हवाएँ आती हैं ?
क्या अब भी वहाँके परवतपर
घनघोर घटाएँ छाती हैं ?

---

१. स्वर्गस्थ देवाङ्गनाओंके वस्त्रोंकी सुगन्ध, २. परेशानियोंमें, ३. अथाह दरिया, बहिश्तमें बहनेवाला चश्मा, ४. परदेशमें रहनेवालेको, ५. यूसुफ़ पैग़म्बरके वतन जैसे देशके निवासी, ६. जन्नत तुल्य देश, ७. मस्त देशवासी ।

क्या अब भी वहाँकी बरखाएँ
वैसे ही दिलोंको भाती हैं?
ओ देससे आनेवाले बता

क्या शाम पड़े गलियोंमें वही,
दिलचस्प अँधेरा होता है?
और सड़कोंकी धुँदली शमओंपर
सायोंका बसेरा होता है?
बाग़ोंकी घनेरी शाख़ोंमें!
जिस तरह सवेरा होता है?
ओ देससे आनेवाले बता

क्या अब भी वहाँ वैसे ही जावाँ,
और मद भरी रातें होती हैं?
क्या रात भर अब भी गीतोंकी!
और प्यारकी बातें होती हैं?
वह हुस्नके जादू चलते हैं,
वह इश्क़की घातें होती हैं?
ओ देससे आनेवाले बता

क्या अब भी महकते मन्दिरसे
नाक़ूसकी[1] आवाज़ आती है

१. शंखकी।

क्या अब भी मुक़द्दस[1] मस्जिद्पर
मस्ताना अज़ाँ थर्राती है
और शामके रंगीं सायोंपर
अज़्मतकी[2] झलक छा जाती है
ओ देससे आनेवाले बता

क्या अब भी वहाँके पनघटपर
पनिहारियाँ पानी भरती हैं ?
अँगड़ाईका नक़्शा बन-बनकर
सब माथेपै गागर धरती हैं ?
और अपने घरोंको जाते हुए
हँसती हुई चुहलें करती हैं
ओ देससे आनेवाले बता

क्या अब भी वहाँ बरसातके दिन
बाग़ोंमें बहारें आती हैं ?
मासूमो - हसीं दोशीज़ाएँ[3]
बरखाके तराने गाती हैं ?
और तीतरियोंकी तरहसे रंगीं,
झूलोंपै लहराती हैं ?
ओ देससे आनेवाले बता

१. पवित्र, २. महानताकी, ३. भोली-सुन्दरी कुँवारियाँ ।

तुझे मुझसे प्यार क्यों है ?

[७ में-से ५

मुझे प्यार करने वाली ! तुझे मुझसे प्यार क्यों है ?
मेरी यादमें तू हर दम, यूँ ही बेक़रार क्यों है ?
तेरा रंग ज़र्द[1] क्यों है, तेरा हाले-ज़ार[2] क्यों है ?
तुझे इज़्तरार[3] क्यों है ?
तुझे मुझसे प्यार क्यों है ?

हैं सितारे सर-ब-सज्दा[4] तेरे कूए - नाज़नींपर[5] !
महो - आफ़ताब[6] क़ुर्बां[7] हैं जमाले - दिलनशींपर[8] !
है बहारे - ख़ुल्द सद्क़े[9] तेरे रूए - यासमींपर[10] !
तेरा दिल फ़िगार[11] क्यों है ?
तुझे मुझसे प्यार क्यों है ?

मैं निसार[12] कर चुका हूँ हविसे - बुताँपै[13] उम्रें !
इसी धुनमें सर्फ़[14] कर दी है, दरे-मुग़ाँपै[15] उम्रें
करूँ नज़्र अब कहाँसे तेरे आस्ताँपै उम्रें
तू यूँ सोगवार[16] क्यों है ?
तुझे मुझसे प्यार क्यों है ?

१. पीला, २. तबाह हाल, ३. बेइख़्तियारी, लाचारी, ४. नक्षत्र गण मस्तक झुकाये हुए हैं, ५. प्रेयसीके कूचेपर, ६. चन्द्र-सूर्य्य, ७. न्योछावर, ८. दिल मोह लेनेवालीके रूपपर, ९. जन्नतकी बहारें न्योछावर हैं, १०. चमेली जैसे शरीरपर, ११. टूटा हुआ, १२. भेंट, १३. सुन्दरियोंकी चाहतमें, १४. व्यतीत, १५. मदिरालयपर, १६. शोकाकुल।

मुझे क्या ख़बर थी इक दिन तुझे मुझसे प्यार होगा
मेरी आर्ज़ूमें[1] जीना तुझे नागवार[2] होगा
मेरी ग़मनिगारियोंपर तेरा दिल निसार होगा
तेरा दिल निसार क्यों है ?
तुझे मुझसे प्यार क्यों है ?

ग़मे - आशिक़ीमें बरसों मैं ख़राब हो चुका हूँ
कई बार दिल दिया है, कई बार रो चुका हूँ
तेरे ग़मको क्या करूँ अब कि ग़मोंमें खो चुका हूँ
तेरा ग़म - शआ़र क्यों है ?
तुझे मुझसे प्यार क्यों है ?

दुनिया

तेरी दुनियामें गर मक्कार ही मक्कार बसते हैं !
तो मेरा सीना क्यों इख़लाससे मामूर[3] है यारब !
मेरा ही दिल मए - उल्फ़तसे क्यों मख़मूर[4] है यारब !
तेरे मैख़ानए - हस्तीमें[5] गर ऐय्यार बसते हैं !
तेरी दुनिया अगर बेदर्द इंसानोंका मसकन[6] है !
तो मुझको क्यों किया है, दर्दे-दिलसे आशना[7] तूने ?
मुझीको क्यों बनाया पैकरे - रहमो - वफ़ा[8] तूने ?

१. चाहतमें, २. कठिन, मुश्किल। ३. मुहब्बतसे परिपूर्ण, ४. प्रेमकी मदिरासे मस्त, ५. जीवनरूपी मदिरालयमें, ६. स्थान, ७. परिचित, ८. नेकी और दयाका पतला।

तेरी दुनिया अगर ख़ूँख़्वार हैवानोंका मसकन है !
अगर अपनोंके ग़मपर मुसकराते हैं तेरे बन्दे !
तो मुझको क्यों पराये ग़म पै भी रोना सिखाया है ?
मेरी आँखोंमें क्यों सारे जहाँका दुख बसाया है ?
अगर इस हालमें आँखें चुराते हैं तेरे बन्दे !
तेरी दुनियाकी रौनक़ मक्र, झूट और बेवफ़ाई है !
यहाँ तेरी ख़ुदाई है, कि शैताँकी ख़ुदाई है !

माहिए

[६ में-से २]

उम्मीदे-बहार

फिर फ़स्ल-बहार आई !
हर फूलकी ख़ुशबूसे ख़ुशबूए-निगार[1] आई !
फिर फ़स्ले बहार आई !

छाई है घटा हरसू[2] !
मस्तीमें सबा[3] हरसू बाग़ोंमें पुकार आई !
फिर फ़स्ले-बहार आई !

मस्ताना हवा जागी !
बुलबुलकी सदा[4] जागी, आवाज़ हज़ार आई !
फिर फ़स्ले-बहार आई !

१. प्रियतमाकी गन्ध, २. चारों तरफ़, ३. वायु, ४. आवाज़, स्वर ।

मजबूर हैं वहशतमें[1],
हर फूलकी सूरतसे यादे-रुख़े-यार[2] आई !
फिर फ़स्ले-बहार आई !

वह आँखोंमें बसते हैं

वह आँखोंमें बसते हैं,
रोना यह है, हम फिर भी सूरतको तरसते हैं,
वह आँखोंमें बसते हैं,

दिल होता है बेकल क्यों ?
आँखोंसे यह बादल क्यों, दिन-रात बरसते रहते हैं,
वह आँखोंमें बसते हैं,

क्या बात है, साजनकी
यह नैन तो सावनकी, बदलीसे भी सस्ते हैं,
वह आँखोंमें बसते हैं,

फरियाद हफ़ाओंसे[3] !
आँखोंकी घटाओंसे, सावन-से बरसते हैं !
वह आँखोंमें बसते हैं,

१. मस्तीमें, २. प्रियतमाके चेहरेकी याद , ३. परिन्दोंसे प्रार्थना है कि वे जाकर प्रियतमासे कहें।

इन्तज़ार

[१० में-से १]

गीत

अब भी न आये मनके चैन
बीत चली है आधी रैन
ना कोई साथन, ना कोई सजनी, ना कोई मेरे पास सहेली !
विरहकी लम्बी रात गुज़ारूँ, डरकी मारी कैसे अकेली ?
नीर बहाएँ कब तक नैन
अब भी न आये मनके चैन
नज़रें जमीं हैं चौखटपर और कान लगे हैं हर आहटपर
आँखोंसे नन्हें-नन्हें-से आँसू बहते हैं इक-इक करवटपर
करती हूँ चुपके-चुपके बैन
अब भी न आये मनके चैन
बीत चली है आधी रैन

ग़ज़लियात

[१११ पृष्ठोंकी ग़ज़लोंसे चुने गये चन्द शेर]

यूँ तो हर दर पै लहकते नज़र आये दामन
खींचते नाज़से जिसको वही दामाँ न मिला

होके नाकाम[1] हविसकार[2] बने क्यों 'अख़्तर' !
यादे-सलमामें जवानीको गँवा देना था

---

१. असफल, २. कामुक ।

ज़र्रे-ज़र्रेमें[1] बे - हिजाब[2] हैं वोह
जिनको दावा है मुँह छुपानेका
चाँदनी ख़ामुशी और आख़िरे-शब
आ ! कि है वक़्त दिलमें आनेका

रह गये बनके हम सरापा ग़म[3]
यह नतीजा है दिल लगानेका
देखते हैं हमें वह छुप-छुपकर
पर्दा रह जाये मुँह छुपानेका

बहुत चाहा न जायें तेरे दरपर
मगर क्या कीजिए मजबूर है दिल
फ़क़ीरीमें इसे हासिल है शाही[4]
तुम्हारे इश्क़पर मग़रूर[5] है दिल
तेरे जल्वेका है जिस दिनसे मसकन[6]
जवाबे - जल्वागाहे - तूर है दिल

हाँ तुझे मुझसे क्या ग़रज़, मेरी ख़ुशीसे क्या ग़रज़
तू तो निगाहें फेरकर दूरसे मुसकराये जा
तेरे और उसके दरमियाँ तेरी ख़ुदी[7] हिजाब[8] है
अपना निशान खोये जा, उसका मुक़ाम पाये जा

१. अणु-अणुमें, कण-कणमें, २. बे-पर्दा, प्रत्यक्ष, ३. दुःखोंका रूप, ४. बादशाहत, ५. अभिमानी, ६. निवासस्थान, ७. अस्तित्व, अहंमन्यता, ८. पर्दा, विघ्न ।

भूलनेका ख़याल भी एक तरहकी याद है
हम न भुलाये जायेंगे लाख हमें भुलाये जा

दिनको आहें हैं, रातको आँसू
इश्क़ है खेल आग-पानीका

शेरमें ज़िक्र किसीका दिले-नाकाम न कर
उसने लिक्खा है कि यूँ तू हमें बदनाम न कर
हर क़दम आगे बढ़े हिम्मते-मर्दानए-दिल
इश्क़की राहमें फ़िक्रे-सहर-ओ-शाम न कर

ज़िन्दगीकी हक़ीक़त आह न पूछ
मौतकी वादियोंमें[1] इक आवाज़

ख़ुदाने बख़्श दिये मेरे दिलको ग़म इतने
कि अब मैं अपने गुनाहोंपै शर्मसार नहीं

ईद आई, आ कि साक़ी ! ईदका सामा करें
दिन है क़ुर्बानीका हम भी तौबाको[2] क़ुर्बां करें
मैकदेके बामपर[3] चढ़कर अज़ाने-शौक़[4] दें
मस्त हैं, यूँ पैरवीए - शेवए - ईमाँ करें
जिसको सुनकर वज्दमें[5] आजाये दीवारे-हरम[6] !
मैकदेमें आज हम उस राज़को[7] उरियाँ[8] करें

१. घाटियोंमें, २. शराब न पीनेकी प्रतिज्ञाकी बलि दें, तोड़ें, ३. छतपर, ४. उत्साहपूर्ण अजान. ५. मस्तीमें, ६. मस्जिदकी दीवारें, ७. भेदको, ८. प्रकट, नग्न ।

तू गर सामने हो तो मैं बेख़ुदीमें
सितारोंको सज्देपै मजबूर कर दूँ

हज़ारों शोख़ अरमाँ ले रहे हैं चुटकियाँ दिलमें
हया उनकी इजाज़त दे तो कुछ बेबाकियाँ कर लूँ
किसे मालूम कब, किस वक़्त, किसपर, गिर पड़े बिजली
अभीसे मैं चमनमें चलकर आबाद आशियाँ कर लूँ!

एक पर्दा है ग़मोंका जिसे कहते हैं ख़ुशी
हम तबस्सुममें[१] निहाँ[२] अश्के-रवाँ[३] देखते हैं

शिकवेसे की है नामए-उल्फ़तकी इब्तदा
जी चाहता है आज फिर उनको ख़फ़ा करें
वह क्या मिला कि दोनों जहाँ मिल गये हमें
अब उसकी बारगाहमें हम क्या दुआ करें?

दर[४] है न आस्ताँ[५], न हरम[६] है न बुतकदा[७]
यारब मचल पड़ी है, हमारी जबीं[८] कहाँ?
सूरजकी सबसे पहली किरन ख़ुशनुमाँ सही
लेकिन तेरी नज़रकी तरह दिलनशीं कहाँ?
आँखोंने ज़र्रे-ज़र्रेपै[९] सज्दे लुटाये हैं,
क्या जाने जा छुपा मेरा पर्दानशीं कहाँ?

१. हँसीमें, मुसकानमें, २. छिपे हुए, ३. बहते हुए आँसू, ४. द्वार, ५. चौखट, ६. मस्जिद, ७. मन्दिर, ८. मस्तक, ९ कण-कणपै।

ठहर जा ज़रा और ऐ दर्दे-फ़ुरक़त[1] !
हमारे तसव्वुरमें[2] वह आ रहे हैं,
वह जाने-बहार आज आयेगी 'अख़्तर' !
कँवल हसरतोंके[3] खिले जा रहे हैं,

नहीं उज्र ज़ाहिदो लाख मर्तबा जायें तौफ़े-हरमको[4] हम
मगर एक शर्त है, मैकदा[5] न मिला करे हमें राहमें
नहीं याद ऐशो-मलाले-उम्रे - गुज़िश्ताकी कोई दास्ताँ[6]
मगर आह चन्द वह साअतें[7] जो बसर हुई हैं गुनाहमें
जो मज़ाजे-दिल न बदल सका तो मज़ाक़े-दहरका क्या गिला
वही तल्ख़ियाँ हैं, सवाबमें, वही लज़्ज़तें हैं गुनाहमें
ब-ख़ुदा कि दोनों जहानमें कोई इससे बढ़के ख़ुशी न थी
अगर एक तल्ख़िए-इनफ़आलकी हिर्स[8] न होती गुनाहमें[9]

दो घड़ी मिल बैठनेको भी ग़नीमत जानिए
उम्र[10] फ़ानी ही सही, यह उम्रे-फ़ानी फिर कहाँ ?

मुझे मैख़ाना[11] थर्राता हुआ महसूस होता है
वह मेरे सामने शर्माके जब पैमाना रखते हैं

१. विरह-व्यथा, २. ध्यानमें, चिन्तनमें, ३. अभिलाषाओंके, ४. काबे-की परिक्रमाको, यात्राको, ५. मदिरालय, ६. बीते हुए जीवनके दुःख-सुखकी कोई कहानी स्मरण नहीं, ७. घड़ियाँ, ८. लज्जाकी कड़ुवाहटकी ग़ैरत, ९. अपराधोंमें, १०. क्षणिक, ११. शराबख़ाना ।

बज़ाहिर हम हैं, बुलबुलकी तरह मशहूर हरजाई
मगर दिलमें गुदाज़े-फ़ितरते-परवाना[1] रखते हैं
किसी मग़रूरके आगे हमारा सर नहीं झुकता
फ़क़ीरीमें भी 'अख़्तर' ग़ैरते-शाहाना रखते हैं

मैं आर्ज़ू-ए-जाँ लिखूँ या जाने-आर्ज़ू ?
तू ही बतादे नाज़से ईमाने-आर्ज़ू

फिर तसव्वुरने भूलना चाहा
फिर तसव्वुरमें आ गया कोई
बख़्श कर दिलको एक अपनी याद
दिलसे सब कुछ भुला गया कोई
संग दिल होनेपर यह हालत थी
मेरे दिलको लुभा गया कोई

बहिश्तोंपै हँसती है, दुनियाए-फ़ानी
जवानीकी रातें हैं कितनी सुहानी ?

मस्जिदको हम चले गये, मस्तीमें भूलकर
हमसे ख़ता यह पीरे-ख़राबात[2] हो गई

हरममें[3] हज़रते-ज़ाहिदने लाख सर मारा
जबींसे[4] तीरगिए-सजदए-सनम[5] न गई

---

१. पतंगेके दर्दका स्वभाव, २. मदिरालयके स्वामी, ३. मस्जिदमें, ४. मस्तकसे, ५. प्रियतमाके आगे मत्था टेकनेका दाग़।

जनाबे-शैख़ पहुँच जाते हौज़े-कौसर तक
अगर शराबसे मैख़ानेमें वज़ू करते

मेरे अरमानोंसे कहती है अजल[1]
"इस क़दर सामान दो दिनके लिए" ?
वह ग़यूर[2] और पासे-रुसवाई[3] हमें
क्या बतायें मर मिटे किनके लिए
मौत लेने आ गई जाना पड़ा
ज़िन्दगी लाई थी इस दिनके लिए
उनकी सुहबतका तसव्वुर और हम
ज़िन्दगी धोका थी कुछ दिनके लिए
उनको अरमाँ है हमारी मौतका
मर मिटे ऐ ज़िन्दगी ! जिनके लिए

दुनियाके फ़िक्र, दीनकी बातें, ख़ुदाकी याद
सब कुछ भुला दिया तेरे दो दिनके प्यारने
औरोंकी क्या ख़ुद अपनी भी सुध-बुध नहीं रही
दुनियासे खो दिया हमें ज़ालिमके प्यारने

यह जवानी, यह घटाएँ, यह हवाएँ, यह बहार,
हज़रते-'अख़्तर' अभीसे पारसा क्यों हो गये ?

जो कभी ख़्वाबमें भी आयें तो कुम्हला जायें !
ऐसी परियोंमें गुज़ारी है जवानी हमने

१. मृत्यु, २. अभिमानी, ३. बदनामीका लिहाज ।

इक मुहब्बत थी, मिट चुकी यारब !
तेरी दुनियामें अब धरा क्या है
दिलमें लेता है चुटकियाँ कोई
हाय इस दर्दकी दवा क्या है ?
हूरें नेकोंमें बँट चुकी होंगी
बाग़े-रिज़वाँमें अब रखा क्या है ?

सवादे-मासमें[१] इक परतवे-उम्मीद[२] क्या कहिए !
अँधेरे घरमें कोई महजबीं[३] मालूम होती है

जब मैं रोता था, मेरे रोने पै हँस देते थे
अब दुआके लिए क्यों हाथ उठाने आये ?
तुम तो इक दिन मेरे शिकवे भी न सुन सकते थे
अब मुझे क्यों ग़मे-दिल अपना सुनाने आये ?

नज़र न आने पै है यह हालत कि जंग है शैख़ो-बरहमनमें
ख़बर नहीं क्या-से-क्या हो दुनिया, जो ख़ुदको वह बेनक़ाब कर दे

मुझे अपनी पस्तीकी[४] शर्म है, तेरी रफ़अतोंका[५] ख़याल है
मगर अपने दिलको मैं क्या करूँ, इसे फिर भी शौक़े-विसाल[६] है
मैं बताऊँ वाइज़े-ख़ुश नवा[७] ! है जहानो-ख़ुल्दमें[८] फ़र्क़ क्या
यह अगर फ़रेबे-ख़याल है, वह फ़रेबे-हुस्ने-ख़याल है

---

१. निराशाके अन्धकारमें, २. आशाकी किरन, ३. चन्द्रमुखी, ४. तुच्छताका, ५. ऊँचाईका, ६. मिलनका चाव, ७. अच्छी आवाज़ वाले, ८. संसारमें और जन्नतमें।

सितम ज़रीफ़िए-फ़ितरत ! यह क्या मुअम्मा है ?
कि जिस कलीको भी सूँघूँ मैं बूए-यार आये

रातभर उनका तसव्वुर[१] दिलको तड़पाता रहा !
एक नक़्शा सामने आता रहा, जाता रहा

मैख़ाना[२] दूर, रास्ता तारीक[३], हम मरीज़ !
मुँह फेर दें उधर जो हवाएँ तो क्या करें

न तुम्हारा हुस्न जवाँ रहा, न हमारा इश्क़ जवाँ रहा
न वह तुम रहे, न वह हम रहे, जो रहा तो ग़मका समाँ रहा,
न वह दिल है अब न जवानियाँ, न वह आशिक़ीकी कहानियाँ
न वह ग़म न अश्क़-फ़सानियाँ[४], न वह दर्दे-दिलका निशाँ रहा

ख़ुदाको न भूले कि दुनिया न भूले
तेरे इश्क़में आह क्या-क्या न भूले

अब नासेहे-नादाँके समझानेको क्या कहिए ?
दीवाना है, दीवाना, दीवानेको क्या कहिए ?

कलाम-चयन २५ जुलाई १९५८ ई०
परिचय-लेखन और सम्पादन १० दिसम्बर १९५९ ई०

१. चिन्तन, ख़याल, २. मदिरालय, ३. अँधेरा, ४. आँसू गिराना।

अदम

सैयद अब्दुल हमीद 'अदम' जून १९०९ ई० में पाकिस्तानके तिलौण्डी मूसाखाँ (ज़िला गुजरानवाला) में जन्मे। शिक्षा-दीक्षा लाहौरमें सम्पन्न हुई। बी० ए० करनेके बाद लाहौरके सैनिक कार्यालयमें प्रारम्भमें क्लर्क हुए, फिर एम० ए० सी० पास करनेके बाद अपने श्रम और लगनके परिणामस्वरूप उसी सैनिक-कार्यालयके एकाउण्ट्स विभागके ऑडीटर पदपर नियुक्त हुए, वर्तमानमें उसी पदपर विद्यमान हैं। शाइरीकी तरफ़ रुचि स्वभावतः है, शाइरीमें किसीके शिष्य नहीं। स्वयं अपने अध्यवसाय, लगन और रुचिके फलस्वरूप ख्यातिकी सीमाको छूनेका प्रयास कर रहे हैं। पाकिस्तानके अच्छे शाइरोंमें आपका शुमार है। नज़्म, रूबाई, क़ते, ग़ज़ल सभी कुछ कहते हैं, परन्तु ग़ज़लमें ख़ास दिलचस्पी रखते हैं। आवश्यकतासे अधिक कहते रहनेके कारण आपके कलाममें वह गहराई और सिफ़ात नहीं आ पाई है, जिसकी आपसे आशा की जा रही है। अधिक कहते रहनेके कारण कलाममें पुनरुक्ति दोष भी पाया जाता है। मालूम नहीं अभी तक आपके कितने संकलन प्रकाशित हो चुके हैं। एक दर्जन तो हमारे पास भी हैं। जिनमें-से १३७३ पृष्ठोंके आठ संग्रहोंसे हमने प्रस्तुत कलाम संकलन किया है।

परिचय

अदमकी ज़ूदगोईके बारेमें उनके मित्र 'शाद' अमृतसरी लिखते हैं—"१९४७ ई० ही की बात है। एक रात वे ज़्यादा नशेमें थे। इसलिए मेरे घर ही सो रहे। क़रीब-क़रीब आधी रातका वक़्त होगा कि यूँही मेरी आँख खुली तो देखा कि बत्ती जल रही है। अदम साहब चारपाईपर बैठे हैं। एक हाथमें सिगरेट, दूसरे हाथमें पेन्सिल लिये कुछ सोच रहे हैं। नोटबुक सामने तकियेपर पड़ी है। मैं ख़ैर सो गया। सुबह मैंने पूछा—



जाता कहाँ 'अदम' में ख़राबातके सिवा
बन्दोंसे बदगुमाँ था ख़ुदासे डरा हुआ

'मौलाना रात क्या बात थी' ?. कहने लगे—'हुज़ूर ! यूँही नींद खुल गई, ख़याल आया कुछ शेर ही कह डालूँ। मगर फ़क़त सात ग़ज़ल कह कर ही नींद आ गई।' जो शाइर घण्टे दो घण्टेमें सात ग़ज़लें कह डाले, अन्दाज़ा कीजिए कि वह किस कसरतसे शेर कहता होगा ? कसरतसे शेर कहना बुरा नहीं, मगर उन सब अशआरको मन-ओ अन (अक्षरशः) रख लेना यक़ीनन बुरा है। वे जो कुछ कह दें, उसमें काँट-छाँटकी ज़रूरत महसूस नहीं करते। शेर अच्छा हो या बुरा, बस हो गया। अब इसमें मज़ीद (पुनः) ग़ौर-ओ-फ़िक्र करना उनका उसूल नहीं। इसी वजहसे बाज़ औक़ात ग़ज़लोंमें बहुत हलके शेर भी मिलते हैं, जिन्हें पढ़कर अफ़सोस होता है कि काश यह शेर ग़ज़लमें न होते। मुझे याद है मैंने कई बार कहा कि—फ़लाँ ग़ज़लमें-से फ़लाँ-फ़लाँ शेर निकाल दीजिए। उन्होंने निकालनेका वादा भी किया। मगर जब ग़ज़ल छपी तो वे अशआर मौजूद थे। अस्ल बात यह है कि उन्होंने आज तक जितने शेर कहे हैं, वे उन्हें क़रीब-क़रीब सबके सब ज़बानी याद हैं। इसलिए वे चाहें तो भी उन अशआरको हज़फ़ (नष्ट) नहीं करते। हाफ़्ज़े (स्मरण-शक्ति) से मुत्तअल्लिक़ एक वाक़या याद आया। इतवारका दिन था। अदम साहब सुबह ही तशरीफ़ ले आये थे। वे कहने लगे—'हुज़ूर, आज पैसोंका कोई बन्दोबस्त होता नज़र नहीं आता। मेरा ख़याल है आज एक मजमूआ ही (तरतीब अपने कलामको लिखित रूप) दे डालूँ। और चौधरी नज़ीर अहमदको देकर पैसे हासिल करूँ'। मैंने कहा—'वह कैसे ?' कहने लगे—'हुज़ूर, मुझे अपने कोई २०० क़तआत याद हैं। उनको नक़ल करनेकी ज़रूरत है।' चुनांचे काग़ज़-क़लम लेकर बैठ गये और दोपहरके खानेके दो घण्टे बाद तक पूरे २०० क़तआत हाफ़्ज़ेसे निकालकर काग़ज़ोंपर बखेरे। मजमूएका नाम 'हवाए बरशगाल' रखा। शाम हुई तो कहने लगे—'चलिए हुज़ूर ! चौधरी नज़ीर अहमदके पास चलते हैं ताकि आज की शामका बन्दोबस्त हो सके।"

अदम बेहद पीते हैं। बेहोशीकी स्थितिमें उन्हें ताँगेपर लादकर घर

पहुँचाया जाता है। वे अपने लिए शराब-ख़र्चकी ज़हमत दोस्तोंको नहीं उठाने देते, बल्कि उनके यहाँ जाते हैं तो बोतल साथ ले जाते हैं। शराब और अदम कुछ ऐसे घुल-मिल गये हैं कि बग़ैर पिये 'अदम' अदम नहीं मालूम होते। न उनकी वार्तालापमें रस होता है, न उनके चेहरेपर नूर होता है। पिये हुए न हों तो अदमको सुन्दर-से-सुन्दर व्यक्तित्व अपनी तरफ़ आकर्षित नहीं कर सकता। फ़र्माते हैं—

शराब पीके मुझे आँख खोल लेने दे
अभी चमकते हुए रुख़को बेनक़ाब न कर

अदमकी स्मरण शक्ति बहुत अच्छी है, उन्हें अपनी सैकड़ों ग़ज़लें कण्ठस्थ रहती हैं और पीनेके बाद तो याददास्तसे भागे हुए शेर भी हाथ बाँधे सामने आ जाते हैं। 'शाद' अमृतसरी लिखते हैं—

"अदम साहबका मिज़ाज बिल्कुल बच्चोंका-सा है। वे बच्चोंकी तरह ज़िद भी करते हैं, मगर झट मान भी जाते हैं। उन्हें झूठ बोलना आता नहीं। यह मैं बिल्कुल मुबालग़ा (ग़लतबयानी) नहीं कर रहा हूँ। वे अगर कभी-कभार झूठ बोलनेकी कोशिश करें तो, उनके चेहरेसे अयाँ हो जाता है। शायद इन्हीं फ़ितरी इख़लाक़ी (स्वाभाविक चारित्रिक) ख़ूबियोंकी वजहसे उनके शेरोंमें सदाक़ते-एहसास और ख़ुलूसे-इज़हार (सचाईकी भावना और स्पष्टीकरणका भाव) होता है। वगर्ना उनकी ज़िन्दगीका तजुर्बाती मैदान बहुत महदूद (अनुभव-क्षेत्र सीमित) है। वे ज़िन्दगीमें फ़क़त तीन काम करते हैं—दफ़्तर जाते हैं, शेर कहते हैं और शराब पीते हैं।....वे रियाकारी, सियासतबाज़ी और गिरोहबन्दी (ढोंग, राजनीति एवं दलबन्दी) से इस तरह नाआश्ना (अपरिचित) हैं, जिस तरह आजका कोई इन्सान नहीं होता। वे फ़रेब खा सकते हैं, दे नहीं सकते।...."

अदमकी मैनोशी और लाउबालीपनके बारेमें आप लिखते हैं—
"१९४७ ई० का ज़िक्र है। उन दिनों लाहौरमें फ़िसादात बहुत ही ख़तरनाक

सूरत इख़्तियार कर चुके थे। एक रात ज़हीर काश्मीरी और अदम साहब मेरे घर ही सो रहे। क़रीब-क़रीब सुबह होनेवाली होगी कि कमरेमें शोर हुआ। मैं हड़बड़ाकर उठा तो कमरेमें बत्ती जल रही थी और कमरा धुएँसे भरा हुआ था। ज़हीर मुझे चीख़-चीख़कर पुकार रहा था। मालूम हुआ कि अदम साहबका तकिया बिलकुल जल चुका है, बिस्तरकी चादर जल रही है। यहाँ तक कि अदम साहबके सरके बाल भी जल रहे हैं, मगर उन्हें क़तई होश नहीं। आख़िर बसद मुश्किल मैंने और ज़हीर काश्मीरीने अदम साहबको जगाया। तकियेको पम्पके पानीसे बुझाया। अदम साहबको यह मालूम करके बहुत ज़्यादा हैरत न हुई कि उनकी गर्दन जल रही थी। कहने लगे—'हुज़ूर ऐसा तो कई बार हुआ है?' यह कहा और एक सिगरेट जला लिया। ख़ैर कुछ देरके बाद सबके सब फिर सो गये। अभी ब-मुश्किल आध घण्टा न हुआ होगा कि ज़हीरकी आवाज़ फिर गूँजी। फिर उठे तो देखा कि अदम साहबकी क़मीज़ जल रही है, मगर वे बिलकुल बेसुध पड़े हैं। पानीका गिलास उनकी क़मीज़पर डाला गया, मगर उन्हें होश न आया। सुबह हो चुकी थी। ज़हीर काश्मीरीने कहा कि 'अगर मैं रातको न जागता तो सुबह अख़बारोंमें ख़बर छप जाती कि सिक्खोंने तीन शाइरोंको जला डाला।'

"एक वाक़या और—एक दिन सुबह उठा तो क्या देखता हूँ कि अदम साहब नशेमें धुत्त चले आ रहे हैं। मुँह सूजा हुआ, कल्लोंपर नीले-नीले दाग़ पतलून फटी हुई। मैंने पूछा—'हज़रत! क्या मामला है?' लेकिन नशा बहुत था कोई माक़ूल जवाब न दिया और लेट गये। जागनेपर ज़ोर-ज़ोरसे रोना शुरू कर दिया। "हुज़ूर! मैं मर गया, हुज़ूर मैं वफ़ात पा जाऊँगा।" देखा तो मालूम हुआ कि हज़रतको बहुत-सी चोटें आई हैं। ख़ैर बड़ी मुश्किलसे घर पहुँचाया गया। चन्द रोज़ बिस्तरमें रहे। कोई दवा वग़ैरह इस्तेमाल करनेकी बजाए पाँच रोज़ मुसलसल सुबह-शाम ठर्रा पिया और ठीक होनेपर बताया कि 'हुज़ूर उस रोज़ अनारकलीमें मैं एक सिक्खोंके होटलमें शराबकी जुस्तजूमें जा पहुँचा। थोड़ी-सी मिल

गई। मिक्खोंसे किसी बातपर तू-तू मैं-मैं हुई तो मैंने होटलकी बालकनीसे जान बचानेकी ग़रज़से छलाँग लगा दी। पता ही नहीं चला कि मैंने क्यों और कब छलाँग लगाई।''

''अपनी वारफ़्तगी (संज्ञाहीनता) के सबब वे कई-कई रोज़ तक नहीं नहाते।''''उनके कोट और पतलूनकी तह अक्सर ख़राब होती हैं। बाज़ औक़ात वे कई-कई रोज़ तक मुँह नहीं धोते।''''जब तक जेबमें पैसे होंगे, घरका रुख़ नहीं करते। कई बार ऐसा हुआ कि हफ़्ता-हफ़्ता वे मेरे घर पड़े रहे। उनका बड़ा लड़का बार-बार आया और हरबार उन्होंने कहा—'बेटा मैं आज ज़रूर आऊँगा।' एक दफ़ा उन्होंने ख़ुद एक वाक़या सुनाया। महीनेकी पहली तारीख़ थी। कोई ५०० रु० तनख़्वाह लेकर शामको अख़्तर शीरानीसे मिले और एक ही शाममें ५०० रु० शराब और औरतकी नज़र हो गये'।

''वे दोस्तोंसे ख़ुलूससे मिलते हैं, उनकी ख़ातिर जो कुछ भी कर सकते हैं करते हैं। दिलाज़ारी (हृदयको कष्ट पहुँचाने) का ढंग ही उन्हें नहीं आता। किसीको दुःख देना उनकी सिरिश्त (स्वभाव) में ही नहीं। वे सही मायनोंमें साफ़ गो और साफ़ दिल हैं। उनका ज़ाहिर-बातिन (बाह्य-अन्तरंग) एक है। किसीसे कोई बुग़्ज़ या ग़ुबार (मैल) रखना उनकी फ़ितरत (स्वभाव) में दाख़िल ही नहीं। हर बात मुँहपर कहते हैं और ख़ुलूससे कहते हैं।''

अदम साहबसे अपने गुरू-शुरूके परिचयका उल्लेख करते हुए शाद साहबने उनकी शक्लो-शबाहतका चित्र यूँ खींचा है—

''गंदुमी रंग, कुशादा पेशानी (ऊँचा मस्तक) चौड़ा-चकला जिस्म, तौन्द कुछ बढ़ी हुई, ढीले-ढाले कपड़े—जैसे अज़ख़ुद उसके जिस्मपर अटक गये हों। बोसीदा कोटके बटन ग़ायब, पायजामा नुमा पतलून ढलकी हुई, जिसको वह बार-बार हाथसे पकड़कर ऊँचा करता था। गर्दनपर जमी

हुई मैलकी तहसे मालूम होता था कि यह शख्स कई दिनसे नहीं नहाया, चेहरा मुसकराता हुआ और आँखोंमें एक मासूमाना चमका[1]।"

'अदम' यूँ तो नज़्म, रुबाइयात, क़तआत, सभी कुछ कहते हैं, परन्तु आपका रुझान ग़ज़लकी तरफ़ विशेष है। ग़ज़लमें आप न सूफ़ियाना रँग भरते हैं, न फ़लसफ़ा छाँटते हैं, न किसी राजनीतिक दलकी मुहर लगाते हैं और न किसी विशेष उद्देश्यको लक्ष रखकर शेर कहते हैं।

अदमकी शाइरी

शेर कहते नहीं, बल्कि वे आपके दिलसे निकल पड़ते हैं। शाइरीसे बचपनसे ही दिलचस्पी है। इसलिए आप चाहें तब भी शाइरीसे पीछा नहीं छुड़ा सकते। ज़िन्दगीमें सिर्फ़ तीन चीज़ोंसे तो सरोकार ही रखते हैं। ऑफ़िस जाते हैं, पीते हैं और शेर कहते हैं। अदमकी शाइरी शराब, हुस्न और इश्क़की शाइरी है। बहुत सरल भाषामें जो आपके मनमें होता है, उसे शेरमें ढाल देते हैं। छोटी-छोटी बहरोंमें बहुत हल्के-फुल्के शेर कहते हैं। न उनमें कहीं बनावट होती है, न कहीं उलझाव। सीधे-साधे ढंगसे नपे-तुले शब्दोंमें हृदयगत भावोंको अशआरमें समो देते हैं। यही आपकी शाइरीकी विशेषता है। परम्परागत ग़ज़लकी टेकनीकका भी आप ख़याल रखते हैं और नवीन शाइरीने जितने मोड़ लिये हैं, उनको भी ध्यानमें रखते हुए शेर कहते हैं।

रिन्दाना

बे पिये भी हज़ारों शाइरोंने शराबके दरिया बहाये हैं। मगर 'अदम' जैसे मशहूर रिन्द अपना स्वानुभव यूँ व्यक्त करते हैं—

हमने ख़ुदाकी ज़ातको ढूँड़ा था होशमें
हमको ख़ुदाकी ज़ात ख़राबातमें[2] मिली

१. नक़्श शख़्सियात नं० २ पृ० ११३७, २. मदिरालयमें।

मैं मैकदेकी राहसे[1] होकर निकल गया
वर्ना सफ़र हयातका[2] कितना तवील[3] था

आँखको मैमें[4] डुबोलूँ तो करूँ जुरअते-दीद[5]
महजबीनोंके[6] रुख़ोंपर[7] बड़ी ताबानी[8] है

सौ बार लग़ज़िशोंकी क़सम खाके छोड़ दी
सौ बार छोड़नेकी क़सम खाके पी गया

इरशाद[9] हो तो मैं इसे आँखोंपै फेर लूँ
भीगा हुआ है आपका दामन शराबमें

शिकन न डाल जबींपर शराब देते हुए
यह मुसकराती हुई चीज़ मुसकराके पिला
सरूर चीज़की मिक़दारपर नहीं मौक़ूफ़
शराब कम है तो साक़ी! नज़र मिलाके पिला

पीता हूँ हादसातके इरफ़ानके लिए[10]
मै एक तजज़िया[11] है ग़मे-रोज़गारका[12]

ज़मानेकी रफ़्तारसे तंग आकर
'अदम' कर लिया मैकदेमें बसेरा

१. शराबख़ानेकी राहसे, २. जिन्दगीका, ३. लम्बा, बड़ा, ४. शराबमें, ५. देखनेका साहस, ६. सुन्दरियोंके, ७. कपोलोंपर, ८. रूपकी चमक, ९. इजाज़त हो तो, १०. आपदाओंका पूर्ण ज्ञान प्राप्त करनेके लिए, ११. विश्लेषण, अनुसन्धानकार्य्य, १२. सांसारिक कष्टोंका।

सुबहे-महशरको मुल्तवी कर दो
हो गई मैकदेमें रात मुझे

लोग कहते हैं 'अदम'ने मैगुसारी[1] छोड़ दी
इफ़्तिरा[2] है, झूट है, बोहतान[3] है, इल्ज़ाम है

'अदम' कभी ख़ुदाकी तलाशमें तल्लीन होनेको सुरापान करते हैं, कभी व्यथा-कराहकी वैतरणी पार करनेको सुराका आश्रय लेते हैं। लेकिन पीते हुए भी हियेकी आँखें खुली रखते हैं और जब मदिरालयमें भी—पीरेमुग़ा, साक़ी और मैकशोंको भी जात-पाँत और सम्प्रदायवादके घिनौने आचरण करते देखते हैं तो कफ़े-अफ़सोस मलते हुए फ़र्माते हैं—

इन मैकशोंके बीच भी तब्क़े हैं मुख़्तलिफ़
क्या फ़ायदा जो साक़ी-ओ-मैख़ाना एक हैं
याँ सैकड़ों ख़ुदा है, यहाँ सैकड़ों सनम
काबा ही एक है, न सनमख़ाना एक है

शैख़ और ज़ाहिद

ख़ुदाको बेचकर शैख़े-हरमने[4]
'अदम' दुनियाके बुतख़ाने[5] ख़रीदे

कुछ झूट बच रहा था, हसीनोंकी लूटसे
उसको किसीने शैख़का ईमाँ बना दिया

१. सुरापान करना, २. आरोप, ३. लांच्छन, ४. धर्माचार्य्यने, ५. सांसारिक भोग्य पदार्थसे आशय है।

दामे-जन्नतमें फँस गया ज़ाहिद
मैंने समझा था, पारसा होगा

शैख़जी आप वली हैं तो बतायें मुझको
आज कल हज़रते-इंसान कहाँ होता है ?

तेरा गैसू[१] हवा है दोज़ख़की
उसका गैसू सकूनका[२] घर है
तेरे हुस्ने-सलूकसे[३] ज़ाहिद !
इक तवाइफ़का ख़ल्क़[४] बहतर है

तेरी सरिश्तके औसाफ़[५] जाग उट्ठे हैं
तेरी जबीं पै[६] हविसकी[७] कोई लकीर नहीं
अब इस क़दर तू ख़ुदाके क़रीब है ज़ाहिद !
तेरे वजूदमें[८] इंसानका ज़मीर[९] नहीं

दैर-ओ-हरम

दैरो-काबाकी[१०] रवायाते-मुक़द्दसपै[११] न जा
शोब्दे[१२] हैं यह, मनाज़िलके निशानात[१३] नहीं

१. ज़ुल्फ, लट, २. मुख-चैनका, ३. मद्व्यवहारसे, ४. व्यवहार, ५. स्वभावके लक्षण, ६. मस्तकपर, ७. लालचकी, ८. अस्तित्वमें, ९. मानवताका हृदय (भाव यह है कि वह पशु है) १०. मन्दिर-मस्जिदकी, ११. परम्परासे चली आई प्रथा, धारणाएँ, १२. जादू, भ्रम-जाल, १३. लक्ष्यके चिह्न ।

अगर दैरो-हरममें[1] है ज़रा-सा भी तेरा परतव[2]
तो मैं सज्देकी कुछ क़ीमत घटाकर देख लेता हूँ

पढ़ी हैं हमने नमाज़ें कुछ इस अक़ीदतसे[3]
कि ख़ुद ख़ुदा भी हमें देखनेको आया है

ख़ुदा और बन्दगी

सब्र कर ऐ ख़ुदाए-सरमाया[4]
मैं ग़रीबोंके पास जाता हूँ
पहले उनके दिये जला आऊँ
फिर तेरा क़ुमक़ुमा[5] जलाता हूँ

ख़बसे-बातिन ख़ुदा-परस्तोंके[6]
मंज़रे-आमपर[7] अगर लायें
वाक़या है कि शर्मसारीसे
मस्जिदोंके चराग़ बुझ जायें

हयात[8], ज़ुहदो[9]-तक़द्दुसकी[10] सर्द ओस नहीं
हयातके लिए रोमानकी[11] ज़रूरत है
बहिश्तमें कोई रौनक़ नहीं है मुद्दतसे
ख़ुदाको देरसे इंसानकी ज़रूरत है

१. मन्दिर-मस्जिदमें, २. जलवा, ३. विश्वासपूर्वक, ४. धनिकोंके ख़ुदा, ५. क़न्दील, झाड़-फ़ानूस, ६. ईश्वर-भक्तोंके कारनामे, ७. जनताके समक्ष, ८. ज़िन्दगी, ९. इन्द्रिय-निग्रह, परहेज़गारकी, १०, पवित्रताकी, ११. इश्क़की।

जिसे आदमीयत नहीं रास आई
वही इब्ने-आदम[1] ख़ुदा हो गया है

मुझको इन्सानकी ज़रूरत है
रहम खाकर ख़ुदा न दे जाना

कोई यज़दा[2] है यहाँ, कोई फ़रिश्ता[3] है यहाँ
क्या बुराई थी अगर, आदमी इंसाँ होता

यज़दा - ओ - अहरमनके[4] ज़माने गुज़र गये
अब वक़्त हर लिहाज़से इंसाँका वक़्त है

मसीहो-ख़िज्रकी उम्रोंसे उसका इक नफ़स[5] बेहतर
वह इंसाँ जो मुसीबतमें किसी इन्साँके काम आये

मद्धिम हैं दैरो-काबाके गर दोस्तो चिराग़
इंसानियतके नक़्शे-क़दम ही-से काम लो

अमीरोंको एजाज़ो - इक़बाल[6] दो
ग़रीबोंको फ़िरदौसपर[7] टाल दो

तेरी ख़ुदाईका हर पहलू
यारब ! इंसाँ देख रहे हैं

१. मानवपुत्र, २. ईश्वर, ३. देवता, ४. खुदा और शैतान, ५. श्वास, पल, ६. आदर-प्रतिष्ठा, ७. जन्नतके वायदोंपर।

ज़ोरे-ख़ल्लाक़की तफ़रीहका सामाँ[1] होना
किस क़दर मज़हका अंगेज़[2] है इंसाँ होना

इंसानियतसे[3] जिसने बशरको[4] गिरा दिया
यारब! वह बन्दगी हुई या अबतरी[5] हुई?

तख़लीक़-कायनातके[6] दिलचस्प जुर्मपर
हँसता तो होगा आप भी यज़दाँ[7] कभी-कभी

महशरका ख़ैर कुछ भी नतीजा हो ऐ 'अदम'!
कुछ गुफ़्तगू तो खुलके करेंगे ख़ुदाके साथ

इश्क़की पाकीज़गी

जो नफ़स[8] तेरी यादमें गुज़रे
बन्दगीमें शुमार होता है

तेरी निगाहकी पाकीज़ीसे[9] डरता हूँ
वगर्ना मैं भी तेरी सिम्त[10] इक निगाह करूँ

तेरी नज़रने इसमें ज़रा जान डाल दी
वैसे तो ज़ीस्त[11] एक सिसकती-सी आह थी

१. ख़ुदाके मनोरंजनका साधन, २. उपहासास्पद, ३. मानवतासे, ४. मानवको, ५. पतनोन्मुखी स्थिति, ६. सृष्टि-निर्माणके, ७. ईश्वर, ८. श्वास, समय, ९. पवित्रतासे, १०. तरफ़, ओर, ११. ज़िन्दगी।

हुस्न और जमाल

आह उसका ख़िरामे-नाज़[१] 'अदम' !
रागनी जैसे आबशारोंकी[२]

आ गया था उनके होंटोंपर तबस्सुम[३] ख़्वाबमें[४]
वर्ना इतनी दिलकशी[५] कब थी शबे-महताबमें[६]

ऐसे परवान चढ़ रहे हैं वोह
रंगे-गुल जिस तरह निखरता हो

तेरा जिस्म अंबरमें[७] डूबा हुआ
तेरे नैन कौसरमें[८] धोये हुए

आपकी पाकबाज़ आँखोंमें
हलका-हलका ख़ुमार-सा क्यों है ?

उपमाएँ

दिलका तेरे फ़िराक़की तल्ख़ीमें[९] है यह हाल
काँटे चुभे हों जैसे मुसाफ़िरके पाँवमें
आती है ऐसे बिछुड़े हुए दोस्तोंकी याद
जैसे चराग़ जलते हों रातोंको गाँवमें

१. नज़ाकत भरी चाल, २. पानीके झरनेकी, ३. मुसकान, ४. स्वप्न-में, ५. आकर्षण, ६. चाँदनी रातमें, ७. कस्तूरीमें, ८. जन्नती नहरकी शराबमें, ९. विरह-दुःखमें ।

सोके जब वह निगार[1] उठता है
मिस्ले - अब्रे - बहार उठता है
ऐसे जाती है ज़िन्दगीकी उमीद
जैसे पहलूसे यार उठता है

ज़िन्दगी ऐसे बुझ गई है 'अदम'
जैसे इक ख़ानक़ाह[2] होती है

मत पूछ इज़्तराबे-जवानीका[3] मुद्दआ[4]
बरसातकी नदी थी कि चढ़कर उतर गई

बस इतना वास्ता है मेरा उनसे जिस तरह
काँटेकी अर्ज़[5] और समाअ़त गुलाबकी[6]

हिज्र

सिर्फ़ इक आपके न होनेसे
शहर वीराँ दिखाई देता है

व्यंग्य

यह अलग बात है कुछ दिया ही नहीं
यह बजा है कि बेशुमार दिया

१. सुन्दरी, २. दरगाह, ३. यौवनकी उमंगोंका, ४. अभिप्राय, ५. न्याय पानेके लिए काँटेका अदालतमें पेश होना, ६. गुलाबका न्यायाधीशकी हैसियतसे मुक़दमा सुनना।

दे रहा है जो इतनी तकलीफ़ें
ऐ 'अदम' कोई महर्बां होगा

किश्ती न डूबती तो यह तौहीने-लुत्फ़ थी
तूफ़ाँ मिले थे हमको किनारोंकी शक्लमें
वह रहबरोंके फ़ैज़से[1] कुछ और बढ़ गये
जो क़ाफिले थे राह-गुज़ारोंकी[2] शक्लमें

हमको जिनसे बड़ी मुहब्बत है
हमको उनसे न काम-काज पड़े

अब इसके बाद भी है हश्रकी[3] कोई सूरत ?
हमें हिजाब है लेकिन तुम्हें हिजाब[4] नहीं

ख़ुद्दारी-ओ-एतमाद

स्वाभिमान और आत्म-विश्वास

किश्ती बचै कि जोशे-तलातुमकी नज़्र[5] हो
इतनी ख़ुशी तो है, ख़लले-नाख़ुदा[6] नहीं

इम्दादको मैं अपनी तौहीन[7] समझता हूँ
ऐ अहले-करम[8] ! मेरी इम्दाद न फ़रमाओ

१. पथ-प्रदर्शकोंकी कृपासे, २. यात्रियोंकी नज़रोंमें, ३. प्रलयकी बात, ४. शर्म, ५. तूफ़ानकी भेंट, ६. केवटका हस्तक्षेप, मल्लाह न होनेसे उसके एहसानमन्द होनेसे बच गये, ७. अपमान, ८. कृपालुओ ।

ऐ काश ! टूट जायें किसी इत्तफ़ाक़से
वे हाथ जो हद्दे-दुआके[1] क़रीब हैं

वे बड़े ख़ुशनसीब इंसा थे
जिनकी किश्तीको नाख़ुदा न मिला

दुहाई है ऐ मुफ़लिसोंके तबस्सुम[2] !
मेरी सिम्त[3] अहले-करम[4] देखते हैं

कुछ नहीं फिर भी मुतमईन[5] है दिल
हाय अपनी अमीर नादारी[6]

तू आयगा तुझे आना पड़ेगा मजबूरन
वह इसलिए कि मुझे इन्तज़ार है अब भी

न जा इन बेसरो-सामान इंसानोंकी हालतपर
हयाते-जाविदाँ[7] इनके तआरुफ़को[8] तरसती है

मुसीबतोंका स्वागत

चलो एक मुश्किल तो आसाँ हुई है
सुना है कि रस्ता बड़ा पुरख़तर[9] है

---

१. ख़ुदासे माँगनेके लिए उठे हुए हाथ, २. दरिद्रोंकी मुसकान, ३. तरफ़, ४. दयावान, दानी, ५. सन्तुष्ट, ६. दरिद्रता, ७. अमर ज़िन्दगी, ८. परिचय प्राप्त करनेको, ९. भयानक ख़तरोंसे भरा हुआ ।

अलम[1] न हो तो ख़ुशी इक वबाल हो जाये
ख़ुशीके साथ अलमकी बड़ी ज़रूरत है

मुसीबतपर हँसी आई है इतनी
मुसीबत शादमानी[2] बन गई है

नज़्में

'अदम' साहबने नज़्में भी बहुत अच्छी कही हैं। उन जैसा बादानोश भी १९४७ ई० के साम्प्रदायिक रक्त-पातको देखकर सिहर उठा। अधिकांश पाकिस्तानी शाइरों और अदीबोंने तसवीरके एक रुख़को पेश किया है। यह जानते हुए भी कि भारत-विभाजनके दिनोंमें जो देशकी जन-धनकी अपार क्षति हुई, वह सब मुस्लिमलीगकी घातक नीतिके कारण हुई। पाकिस्तानी अदीब बहुत पक्षपातपूर्ण तत्कालीन स्थितिका उल्लेख करते रहे हैं। "भारतसे जो मुसलमान पाकिस्तान गये, वे बेचारे अत्याचार-पीड़ित, निरीह, साधुस्वभाव और दयाके पात्र थे, किन्तु वहाँसे जो हिन्दू भारत आये, वे कायर और भगोड़े थे। उनमें-से कुछ लीगी शूरमाओं द्वारा मक्खी-मच्छरोंकी तरह मार डाले गये और कुछ बुज़दिल भाग आये।" पश्चिमी पाकिस्तानके मन्दिरों और गुरु-द्वारोंकी सेवा करनेको भी कोई हिन्दू शेष नहीं छोड़ा, इसकी शर्म नहीं। लेकिन यहाँ साढ़ेचार करोड़ मुसलमानोंके निराकुलतापूर्वक जीवन व्यतीत करते हुए और सदैवकी तरह अपने मज़हबका पालन करते हुए भी, कोई पाकिस्तानी अदीब अपनी पुस्तक उस पाकिस्तानी शूरमाको भेंट करनेका एलान करता है, जो हिन्द-

१. दुःख, कष्ट, २. ख़ुशी।

की किसी मस्जिदमें अज़ान देनेका साहस कर सके। कुछ पाकिस्तानी यहाँ भ्रमणको आते हैं तो यहाँके दिल्ली; लखनऊ; आगरे जैसे शहर भी उन्हें उजाड़ दिखाई देते हैं। न पहिले जैसी रौनक़, न वह आबादी, न वे इंसान, न वह चहल-पहल। कितना विषैला प्रचार है इन मज़हबी दीवानोंका ? हालाँकि इन शहरोंकी आबादी चहल-पहल पहलेसे अठगुनीसे भी अधिक बढ़ गई है; नये-नये रोज़गार और उद्योग-धन्दे खुल गये हैं। जवाहरात, सर्राफ़ा, गोटे-किनारी, बजाज़ा, पंसारट, कसेरट आदिके व्यापार-केन्द्रों—चाँदनीचौक, दरीबाँकलाँ, किनारी बाज़ार, चावड़ी, नई सड़क, खारी बावली, और कनॉट प्लेस आदिमें कौन-कौन-सी ऐसी दूकानें थीं, जो अब नहीं हैं। हाँ उनकी बात दूसरी है जो कि—लालकुआँ, बल्ली-माराना हौज़क़ाज़ी, चितली क़ब्र और क़स्सावपुरे जैसे मुहल्लोंको ही दिल्ली-के बाज़ार और रौनक़ समझते थे, और जिनके अज़ीज यहाँ नहीं रहे, उन्हें चाँदनी चौककी रौनक़ भी उजाड़ नज़र आये तो इसका चारा भी क्या ? किसने पाकिस्तान चाहा था ? कौन भारतके दो टुकड़े करानेको रक्तलोलुप हो उठा था ?

जब पाकिस्तान बना तो उसमें लोगोंका बसना लाज़िमी भी था। और जो साहब यहाँसे गये, उनके गली-मुहल्ले उजाड़ होने ही थे, हालाँकि जानेवालोंसे कई गुना अधिक पाकिस्तानसे लोग उजड़कर वहाँ बस गये हैं। स्वयं अपनी मर्ज़ीसे पाकिस्तान चाहा और बन गया तो हिन्दको कोसते हैं। क्या ख़ूब—

> हमींको क़त्ल करते हैं हमींसे पूछते हैं वोह
> "शहीदे-नाज़ बतलाओ मेरी तलवार कैसी है !"

जो हज़रात पाकिस्तानसे यहाँ चन्दरोज़को आकर आठ-आठ आँसू रोते हैं, काश उन्होंने कराची, लाहौर, रावलपिण्डी आदि शहरोंके बड़े-बड़े बाज़ारोंपर भी लिखा होता कि अब वहाँका क्या हाल है ? कुछ उद्योग-धन्दे बढ़ाये भी गये हैं या सिर्फ़ मिटानेपर कमर बाँध रखी है ?

तंग-दिली और तास्सुबी नज़रियेका इलाज भी क्या ? पीलियेके रोगीको पीला-ही-पीला नज़र आये तो अचम्भा भी क्या ?

हिन्दके बटवारेके वक़्त मज़हबी फ़िसादात जो अदम साहबने अपने हियेकी आँखोंसे देखे हैं, नज़्म किये हैं। उनमें कहीं तास्सुब नहीं, झूठ नहीं, बनावट नहीं, अतिशयोक्ति नहीं।

१३ दिसम्बर १९५९ ई०]

दरिन्दे

उपद्रवी गुण्डोंके नेता जनताको किस तरह उभारते थे, 'दस्तक' नज़्ममें उसकी बानगी मिलेगी—

देखते क्या हो बदहवासीसे ?
क्या हुआ है तुम्हारी ग़ैरतको ?
इतनी ताख़ीर क्यों अताअतमें[1] ?
हुक्म सिर्फ़ एकबार होता है
काट दो इनकी छातियोंके अमूद[2]
छातियाँ हैं कि जाँ गुदाज़ सरूद[3]
बाँध दो इनके बाल खम्भोंसे
और इनके हसीन जिस्मोंपर
ताज़ियानोंके[4] फूल बरसाओ ?
बेटियाँ हैं यह उन दरिन्दोंकी[5]
जो तुम्हारे लहूके प्यासे हैं

१. आदेश-पालनमें विलम्ब, २. लम्बाई, ३. दिलोंको गुदगुदानेवाले गीत, ४. हंटरोंके, ५. क्रूर जानवरोंकी

देखते क्या हो बदहवासीसे ?
ऐसी भरपूर और लज़ीज़ ग़िज़ा
रोज़ कब दस्तयाब[1] होती है ?
पिल पड़ो उन जवाँ ग़ज़ालोंपर[2]
इनकी आहो-बुका पै[3] मत जाओ !
उनकी आहो-बुका पै ग़ौर करो
जिनको तुम छोड़ आये हो पीछे
और जो दुश्मनोंके पहलूमें
हँस रही हैं तुम्हारी ग़ैरतपर
जिनके नज़दीक अब तुम्हारा वजूद
एक ख़ंज़ीरके[4] बराबर है

देखते क्या हो बदहवासीसे ?
बद क़माशो ! ख़बर नहीं तुमको
यह सितारे, यह फूल, यह जुगनू
इत्तफ़ाक़न तुम्हारे हाथोंमें
एक शबके लिए अमानत हैं
और सहरके तुलूअ़[5] होते ही
जब्रसे भेड़िये हकूमतके
छीन लेंगे यह पुतलियाँ तुमसे
और फिर उसके बाद क्या होगा
एक उजड़े हुए शबिस्ताँमें[6]
मौतकी हौलनाक ख़ामोशी

---

१. प्राप्त २. मृगनयनियोंपर, ३. चीख़-रुदनपर, ४. सूअरके, ५. प्रातः-काल, ६. उद्यानमें ।

दस्तक

साम्प्रदायिक विध्वंसकी यह झलक भी देखिए—

कौन है यह मेरे दर्वाज़ेपै आख़िर कौन है ?

कौन दस्तक दे रहा है मुल्तजी[१] अन्दाज़में
ख़ौफ़में डूबी हुई, सहमी हुई, आवाज़में
यह किसी औरतकी थर्राती हुई आवाज़ है,
बर्क़की[२] मानिन्द लहराती हुई आवाज़ है
आज शायद भेड़िये फिर घूमते हैं शहरमें
भूककी चिनगारियाँ लेकर दहाने-क़हरमें[३]
मस्जिदोंसे अज़दहे[४] निकले हैं बल खाते हुए
मन्दिरोंसे ज़लज़ले[५] उट्ठे हैं, थर्राते हुए
आँधियोंका भूत उठा है दाँत चमकाता हुआ
मौतका जबड़ा खुला है आग बरसाता हुआ
रातकी मुजरिम ख़मोशीका ज़मीरे-शर्मसार[६] !
हो रहा है गोलियोंकी तड़तड़ाहटका शिकार

कौन है यह मेरे दर्वाज़ेपै आख़िर कौन है ?

कौन दस्तक दे रहा है इस भयानक रातमें ?
रातके डसते हुए हैबत फ़गन ज़ुल्मातमें[७]

---

१. दबे हुए, धीमे-धीमे, २. बिजलीकी, ३. क्रुद्ध मुखोंमें, ४. अजगर, ५. भूकम्प, ६. लज्जित अन्तरात्मा, ७. भयावने अँधेरेमें ।

खोल दे फाटक बुला ला, सहनमें ताज़ीमसे[1]
कोई रूहे-ग़मज़दा[2] होगी इसी इक़लीमसे[3]
कान तो धरना ज़रा इस रेंगती आवाज़पर
नाचती आती है जो तेग़ो-सनाँके साज़पर[4]
बरबरैय्यतकी मुक़द्दस मशअलोंके सायेमें[5]
बिजलियोंकी शक्लमें तूफ़ानके पैरायेमें
बढ़ रहे हैं मज़हबो-मिल्लतके वोह जाबर सपूत[6]
जिनके आगे क़िलए-आहन[7] है तारे-अनकबूत[8]
यह सनमख़ानेके हीरो[9], यह हरमके शहसवार[10]
बनके निकले हैं ख़ुदाओंकी तबीयतका ग़ुबार

कौन है यह मेरे दरवाज़ेपै आख़िर कौन है ?
कौन दस्तक दे रहा है ? दम-ब-दम इस ज़ोरसे
सर फटा जाता है ईंटोंके भयानक शोरसे
आ गया है डाकुओंका क़ाफ़िला[11] दहलीज़ पर !
बुझ चुकी है अम्नकी क़न्दील[12] सीना पीटकर
जामो-मीनाको हटा, वह दुख़्तरे-किरदार[13] दे
यानी वह लटकी हुई आतिश फ़िगन[14] तलवार दे

---

१. आदरपूर्वक, २. दुखी आत्मा, ३. महाद्वीपसे, ४. तलवार भालोंकी झंकारपर, ५. अत्याचारियोंकी पवित्र (?) मशालोंके प्रकाशमें, ६. धर्म और संगठनके बलशाली (ज़ालिम) सपूत ! ७. लोहेके क़िले, ८. मकड़ीके जालेके समान, ९. नेता, प्रधान, १०. मस्जिदोंके हिमायती, ११. दल, १२. सुलह-शान्तिकी दीपशिखा, १३. कर्तव्यरूपी कन्या, १४. आग उगलनेवाली ।

खोल दे इक नारए-जंग आज़मासे बाबको[1]
आज कोई काम करने दे मेरे ऐसाबको[2]
फ़र्ज़ आया है मेरा ख़ूँ क़र्ज़ लेनेके लिए
हट ज़रा फ़र्ते-ख़ुशीसे[3] रक़्स[4] करने दे मुझे

मेरी क़ुर्बानीसे यह काली बला टल जायेगी !!
मेरा ख़ूँ चक्खा तो मज़हबकी ज़बाँ जल जायेगी

ज़िन्दा रहो

राष्ट्र-पिताके बलिदानपर 'अदम' कितने व्यंग्यपूर्ण ढंगसे मुबारकबाद पेश कर रहे हैं—

ऐ मुक़द्दिस[5] हिन्दुओ ! तुम फूलते-फलते रहो,
और तुम्हारे मन्दिरोंकी जोत अफ़सुर्दा[6] न हो
क्योंकि तुमने इक ऋषिकी आत्माको ख़ुश किया
और उसकी रूहे-आसूदासे[7] ले आशीर्वाद
उसकी बूढ़ी हड्डियोंपर तुमने छिड़काया गुलाब
इस क़दर एसार[8], इतनी आतफ़त[9], ऐसा ख़लूस[10]
कितने मन सन्दलकी अम्बररेज़[11] लकड़ी और घी
सर्फ़[12] कर दी उसकी अर्थीको जलानेके लिए

---

१. युद्धका नारा लगाकर द्वार खोल दे, २. हाथ पावोंको, ३. ख़ुशीके मारे, ४. नृत्य, ५. पवित्र, उच्च, ६. बुझ न जाये, ७. विशालात्मासे, ८. नम्रता, ९. लिहाज, १०. व्यवहार, ११. सुगन्धित चन्दनकी, १२. ख़र्च ।

ऐ मुक़द्दस हिन्दुओ ! तुम फूलते-फलते रहो
जिक्र जब भी आयगा तारीख़े-आलममें[1] कहीं
सूरमाओंके शुजाअत आफ़रीं किरदारका[2]
झूम उट्ठेगी तुम्हारे नामपर मर्दानगी
राम और लछमनकी बुझती अज़मतोंकी जोतको[3]
तुमने इंसाँके लहूसे फिर किया है, बर्क़े-ताब[4]
मुसकराते हैं तुम्हारे फ़ेलपर गो बेशऊर
कम है जितना भी करो तुम अपनी दानिशपर ग़रूर[5]
फूलते-फलते रहो, ज़िन्दा रहो ऐ हिन्दुओ !
कितने ख़ुश-क़िस्मत हो, पाइन्दा[6] रहो ऐ हिन्दुओ !

भिन्न-भिन्न विषयोंपर चन्द नज़्म आगे दी जा रही हैं—

बजाओ

बजाओ जोशे-अक़ीदतसे[7] घण्टियाँ, न डरो
पुजारियोंको कभी देवता नहीं डसते
यह आहनी[8], यह तिलाई[9], यह मरमरी अजसाम[10]
यह देवताओंकी रूहोंके घूरते हुए ख़ोल

१. विश्व-इतिहासमें, २. वीरोंके बहादुर कारनामोंका, ३. महानताके प्रकाशको, ४. प्रकाशवान, प्रज्वलित, ५. बुद्धिपर अभिमान, ६. अमर, स्थायी, ७. धार्मिक विश्वासके जोशमें, ८. लोहे जैसे कठोर, ९. सुवर्ण जैसे, १०. संगमरमर जैसे धवल शरीर ।

वफ़ूरे-क़हरसे[१] आतिश-फ़शाँ[२] न हो जायें
कुआँरियोंके लहूसे बुझाओ प्यास इनकी

बजाओ जोशे-अक़ीदतसे घण्टियाँ, न डरो
कहो कि रक़्स[३] करें देवदासियोंके हजूम
कि देवताओंके कानोंमें शहद गिरता है,
जलाओ घीके दिये चारसिम्त[४] मन्दिरमें
करो तवाफ़े-शबाना[५], पढ़ो फ़सूने-नियाज़[६]
कि देवताओंकी रूहोंको नींद आ जाये
और उनकी नींदके सदक़े[७] तुम्हारी बाहोंमें
तमाम रात मचलता रहे ज़मीरे-बहार[८]

बजाओ जोशे-अक़ीदतसे घण्टियाँ, न डरो
मगर ख़ुदाओंकी इस पुरविक़ार[९] महफ़िलमें
नज़ूले-क़हरका बाइस[१०] है, मुफ़लिसोंका वरूद[११]
फ़क़ीर, अछूत, भिकारी-ग़रीब और क़ल्लाश[१२]
धरमके रूप शिवालेमें सायए-बद[१३] हैं,
कभी भटकने न दो इन सियाह सायोंको

१. क्रोधकी अधिकतासे, २. आग्नेय, ३. नृत्य, ४. चारों तरफ़, ५. रात्रिभर परिक्रमा, ६. प्रार्थना-स्तुतिके मंत्र, ७. न्योछावर, फलस्वरूप, ८. सुन्दरीका रूप, ९. सम्मानित सभामें, १०–११. दरिद्रोंके सभा प्रवेशसे ईश्वरका कोप अवतरित हो जायगा, १२. निर्धन, १३. अपवित्र छाया।

सरस्वतीकी खनकती हुई गुफाके क़रीब
हसीं लिबास चमकते वजूद[1], जागते रंग !
यही नजातकी तहसीलका ज़रिया[2] है !
कि देवताओंकी ख़ूराक सिर्फ़ सोना है !

काँटे

[२२ मैं-से ४]

सुना कि किस तरह रंगीन ख़ानकाहोंमें[3]
ज़मीरे-ज़ुहद[4] है लिथड़ा हुआ गुनाहोंमें

....

सुना कि कितनी सदाक़तसे[5] मस्जिदोंके इमाम
फ़रोख़्त करते हैं, बे-ख़ौफ़ फ़तवा-हाए-हराम[6]

....

जो बे-दरेग़[7]-ख़ुदाको भी बेच देते हैं
ख़ुदा तो क्या है, हयाको भी बेच देते हैं
नमाज़ जिनकी तिजारतका एक हीला है
ख़ुदाका नाम ख़राबातका वसीला[8] है

१. अस्तित्व, २. मुक्तिके साधन, ३. दरगाहोंमें, ४. संयमियोंकी अन्तरात्मा, ५. सचाईसे, ६. दुराचारोंके प्रमाण पत्र, ७. बेझिझक, ८. मदिरालयका साधन।

चराग़ रोशन हैं

गो अँधेरा है चारसू[१] जगमें
और अँधेरा भी आदमीयत-सोज़[२]!
भूकका तल्ख़[३] और स्याह धुआँ
उड़ रहा है अलील चहरोंपर
इस्मतें[४] बिक रही हैं राहोंमें
फिर भी ऐ बन्दगाने-इस्तक़लाल[५]!
रहमते-हक़की[६] तुम पै बारिश है
शादियाने-बजाओ ख़ुशियोंके!
मस्जिदोंके चराग़ रौशन हैं

गो तुम्हारे घरोंमें ज़ुल्मत[७] है
और तुम्हारे दिलोंमें तारीकी[८]
गो तुम्हारे वजूद उरियाँ[९] हैं
क़हत[१०] हैं गो अनाज कपड़ेका!
फिर भी ऐ होशमन्द इंसानो!
कोई मौक़ा नहीं शिकायतका
लुत्फ़े-यज़्दाँकी[११] चल रही है हवा
शादियाने बजाओ ख़ुशियोंके
मस्जिदोंके चराग़ रौशन हैं

---

१. चारों तरफ़, २. इंसानियतका मर्सिया, ३. कडुवा, ४. शील, ५. दृढ़ निश्चय रखनेवालोंके अनुयायियों, ६. खुदाकी महर्बानियोंकी, ७. अँधेरा, ८. अँधेरी, ९. अस्तित्व नग्न हैं, १०. अकाल ११. ख़ुदापरस्तीकी।

तुम ख़ुदाके अज़ीज़ बन्दे हो
और अपने अज़ीज़ बन्दोंको
वह ज़लीलो - तबाह रखता है
जिनकी दुनिया सियाह होती है
नेक होती है, आखिरत उनकी
वर्ना तुमको नज़र नहीं आता ?
ऊँचे - ऊँचे घरोंमें जगमग है
चिकने-चिकने तनोंमें सोना है
मस्जिदोंमें चराग़ रौशन हैं

जवाज़[१]

[१६ में-से ६]

मेरे करीम[२] ! तू रज़्ज़ाक़े-दो[३]-जहाँ है मगर—
अनाजके लिए इंसान बिलबिलाते हैं !
कि अहले सरवतो-सरमाया-ओ-मजाज़ो-दिल[४]
तेरे अनाजपै क़ब्ज़ा जमाये जाते हैं !
कहीं तो रिज़्क़की कसरतसे[५] पेट बोझिल हैं
कहीं शरार[६] दमाग़ोंमें सर-सराते हैं
कहीं शराबके छींटोंसे आँख खुलती है
कहीं अजलके नफ़स[७] सुबहको जगाते हैं !

---

१. धर्मानुसार उचित, जाइज, २. रहमदिल ख़ुदा, ३. दोनों जहाँको भोजन देने वाला, ४. हाकिम (शासनाधिकारी) धनिक और अधिकारी वर्ग, ५. भोजनकी अधिकतासे, ६. चिंगारियाँ, ७. मौतकी घड़ियाँ ।

कहीं शबाबकी[१] अँगड़ाइयोंके शीशेमें
बहारो-रंगके अरमान मुसकराते हैं
कहीं हयातकी[२] टूटी हुई सुराहीमें
सियाह ज़हरके ज़र्रात थर-थराते हैं
मेरे करीम ! क़यामत नहीं तो फिर क्या है ?
कि अब तो ख़ल्क़के[३] ईमान डगमगाते हैं
मैं कैसे होशके दोज़ख़का ज़हर नाश करूँ ?
मुशाहदात[४] तबाहीका दफ़ बजाते हैं
तेरे जहानमें जब तक कोई निज़ाम[५] नहीं
फ़क़ीरके लिए बादाकशी[६] हराम नहीं

चोर-बाज़ार

दिले नादाँ वहाँ जाकर बना है, मुश्तरी[७], साक़ी !
जहाँ दुख-दर्द बिकते हैं, जहाँ आज़ार[८] बिकते हैं,
फ़सुर्दा[९] फूल, फीके रंग, ज़ख़्मी ख़ुमार[१०] बिकते हैं,
मुअत्तल ज़ेहन[११], मुर्झाये हुए अफ़कार[१२] बिकते हैं,
मुरव्वतकी[१३] पिटारीमें रियाके मार[१४] बिकते हैं,
तक़द्दुसकी अबामें[१५] कुफ़्रके अतवार[१६] बिकते हैं,
यह सब बेमुहर सिक्के बरसरे-बाज़ार बिकते हैं,

---

१. यौवनकी, २. जिन्दगीकी, ३. जनताके, ४. दृश्य, ५. व्यवस्था, ६. मद्य-पान, ७. खरीददार, ८. रोग, तकलीफ़, ९. मुर्झाये, १०. घायल-नशे, ११. बेकार मस्तिष्क, १२. चिन्ताएँ, १३. लिहाजकी, मुहब्बतकी, १४. छल-कपटके साँप, १५. धार्मिकताके चोलेमें, १६. अधार्मिक चलन ।

दिले नादाँ वहाँ जाकर बना है, मुश्तरी साक़ी !

जहाँ सुबहे-तरब[1] माँगो तो ग़मकी शाम देते हैं,
बड़ी दरियादिलीसे[2] इशरते-आलाम[3] देते हैं,
शगुफ़्ता तलख़ियोंको[4] अंगबीका[5] नाम देते हैं,
ख़लूसे-दिलके[6] बदले अंबरीं ओहाम[7] देते हैं,
सुलगती तुहमतें डसते हुए इल्ज़ाम देते हैं,
जहाँ ताजर[8] ख़ुदाको बे-धड़क दुश्नाम[9] देते हैं,

दिले-नादाँ वहाँ जाकर बना है मुश्तरी साक़ी !

जहाँ रस्ते बहुत पुरपेचो-नाहमवार[10] मिलते हैं,
हसीं रहज़न[11] तसादमके[12] लिए तैयार मिलते हैं,
बड़े हम-दर्द मिलते हैं, बड़े ग़मख़्वार मिलते हैं,
क़यादतकी दुकाँपर ग़ासिबो-ग़द्दार[13] मिलते हैं,
गुलिस्ताँ मुज़महल[14], गुंचे ख़िज़ाँ-आसार[15] मिलते हैं,
सितारे ज़ंग-आलूदा[16], सब्रू[17] बीमार मिलते हैं,

१. आनंदित प्रातःकाल, २. उदार हृदयसे, ३. दुःखोंका साधन, ४. खिली हुई कड़वाहटोंको, ५. शहदका, ६. सहृदयताके, ७. सुगन्धित बहम, ८. व्यापारी, ९. गालियाँ, १०. घुमाववाले, ऊबड़-खाबड़ रास्ते, ११. रूपवान लुटेरे, १२. लड़ने-भिड़नेके, १३. शोषक-देशद्रोही, १४. उदास, १५. पतझड़के रँगमें, १६. तारे ज़ंग लगे हुए, १७. मदिरा-पात्र ।

मण्डी

गुमाँ यह था फ़क़त इन्साँ फ़रोख़्त होते हैं
तेरे जहाँमें तो यज़दाँ[१] फ़रोख़्त होते हैं,

गुदाज़ जिस्म[२], घने बाल, दिलरुबा[३] चहरे !
फ़रोख़्त होते हैं, हाँ-हाँ फ़रोख़्त होते हैं,

वह जिस्म, मर-मर-ओ-सहबासे जिनकी साख़्त[४] हुई
बड़ी जगह, बहुत अरज़ाँ[५] फ़रोख़्त होते हैं,

अजीब चीज़ है, चाँदीकी सरमदी[६] झंकार
कि जिसके लोच पै क़ुरआँ फ़रोख़्त होते हैं,

यह इश्तक़ाका ज़माना है, इस ज़मानेमें
नजूमे - क़िस्मते - इंसा[७] फ़रोख़्त होते हैं,

वह होंट चूसके जिनको ख़ुदा भी झूम उठे
बराए ख़िदमते-इंसाँ फ़रोख़्त होते हैं,

हविसके गर्म इरादोंके झूलनेके लिए
फ़रोशे-ज़ानुए-उरयाँ[८] फ़रोख़्त होते हैं,

ख़िज़ाँका वहम मिटा दो कि अब तो कसरतसे
सदा बहारे-गुलिस्ताँ[९] फ़रोख़्त होते हैं,

१. ख़ुदा, २. गुदगुदा शरीर, ३. मोहक, ४. सफेद संगमरमर और शराबसे निर्माण हुआ, ५. सस्ते, ६. आनन्दित, स्थायी, ७. मनुष्योंके भाग्य, ८. नग्न जंघा रूपी झूले, ९. सदैव हरे-भरे रहने वाले उद्यान ।

गिला फ़िज़ूल है, तकलीफ़े-दर्दे-हस्तीका[1]
कि रंग-रंगके दरमा[2] फ़रोख़्त होते हैं,

शराब - रेज़ घटा[3] हो कि अम्बरीं गेसू[4]
तमाम कैफ़े-शबिस्ताँ फ़रोख़्त होते हैं,

सुराहियोंसे हसीं गर्दनें भी बिकती हैं
लबोंके रस भी मेरी जाँ फ़रोख़्त होते हैं,

है अब भी सैरे-परिस्ताँ कोई तिलस्मे-ख़याल
जगह-जगह तो परिस्ताँ फ़रोख़्त होते हैं,

क़दीम रंगकी चीज़ोंके साथ-साथ यहाँ
जदीद रंगके[5] सामाँ फ़रोख़्त होते हैं,

बड़ी तवीलो-हसीं[6] डाढ़ियोंके सायेमें,
ज़मीरो-इस्मतो-ईमाँ[7] फ़रोख़्त होते हैं,

न पूछ कुंजे-मआबदमें[8] कितने दुख़्तरो-तिफ़्ल[9]
बनामे-हुरमते-यज़दाँ[10] फ़रोख़्त होते हैं,

निगार ख़ानए तहज़ीबे-हाज़िरामें[11] 'अदम' !
फ़क़ीहो-राहबो-सुल्ताँ[12] फ़रोख़्त होते हैं,

१. जीवनरोगकी तकलीफ़की शिकायत, २. इलाज, ३. मदिरा बरसानेवाली घटाएँ, ४. सुगन्धित केश, ५. आधुनिक ढंगके, ६. लम्बी-सुन्दर, ७. आत्मा, शील, ईमान, ८. उपासना-स्थलोंमें, ९. लड़कियाँ और लड़के, १०. ख़ुदाके नामपर, ११. वर्तमान सभ्ययुगमें, १२. भिक्षुक, ज़ाहिद, भद्र, बादशाह ।

रुख़सत

आज तुमको ज़रूर जाना है,
आज तुम, यानी रुक नहीं सकते
ख़ैर मैं दिल पै जब्र कर लूँगा
लेकिन इतनी भी जल्दबाज़ी क्या
आजकी रात और रह जाओ
वास्ता है हसीं सितारोंका[1]
जो तुम्हारा तवाफ़[2] करते हैं
चाँदनी रातकी बहारोंको
जो तुम्हारी नमाज़ पढ़ती हैं
मेरी तकलीफ़का न ध्यान करो
मैं तो आदी हूँ रंज सहनेका
हाँ मगर इस हसीन मौसमपर
लड़खड़ाती हुई हवाओंपर
मुसकराती हुई फ़ज़ाओं पर[3]
आजकी रात रहम फ़र्माओ

आज तुमको ज़रूर जाना है
तो उठो एक तीतरीकी तरह
एक दम मुसकराके उड़ जाओ
यूँहीं अठखेलियाँ नहीं अच्छी

---

१ सुन्दर तारोंकी सौगन्ध, २. परिक्रमा, ३. बहारोंपर।

दिल खिलौना सही, मगर फिर भी
इस खिलौनेकी साख़्त नाज़ुक[1] है
एक जुम्बिशसे टूट जाता है
उम्रका साथ तो नहीं तुमसे
लेकिन इक रात और अगर बाहम[2]
ज़ीस्तसे इन्तक़ाम[3] कुछ ले लें
होश मन्दीसे काम कुछ ले लें
तो मेरी जान हर्ज ही क्या है
सुबहका वक़्त कल चले जाना
सुबहका वक़्त नेक होता है
आओ मेरे क़रीब आ जाओ !

आज तुमको ज़रूर जाना है
तो बड़े शौक़से चले जाओ
कौन लहरोंको रोक सकता है ?
मुझको सिर्फ़ एक बातका डर है
कि अचानक तुम्हारे जानेसे
अंजुमो - माह[4] रूठ जायेंगे
और मुझे रात भर सतायेंगे
सर्द आहें भरेगी मौजे - हवा
साँस लेगी न सोगवार फ़जा[5]

१. कोमल रूप, नाज़ुक बनावट, २. परस्पर, ३. ज़िन्दगीसे बदला, ४. नक्षत्र और चन्द्रमा, ५. शोकाकुल बहार ।

फिर भी जाने पै तुम मुसिर[1] हो अगर
तो ख़ुदाके लिए सितारोंको
चाँदनी रातकी बहारोंको
निकहतो - नूरके ख़ुमारोंको[2]
मशविरा करके साथ ले जाओ
मैं तबीयत पै जब्र कर लूँगा

पहली तारीख़

तीस दिन मेरे मुक़द्दरमें किलर्की ही सही
लेकिन ऐ ग़ैरते-नाहीद ! यह तस्कीन तो है
एक दिनके लिए सुल्तानिए-जम[3] है मेरी
देख यह मेरा नया बूट, यह बाँकी पोशाक
इत्रकी बू नहीं आती मेरे बालोंसे तुझे ?
देख इस बेगमें हैं ऐशके सामाँ क्या-क्या
दो खनकते हुए विस्कीके मुदव्वर गुम्बद
संगतरे, आम, अंगूर और महकते आड़ू
गुलशनो - मतबख़ो - मैख़ाना[4] उठा लाया हूँ

तीस दिनकी यह पसीनेकी कमाई प्यारी
कितनी बे - बरकतो - बेमाया नज़र आती है

१. ब-ज़िद, जानेपर तुले हुए, २. सुगन्धित और प्रकाशमान नशोंको, ३. जमशेद बादशाहकी सल्तनत, ४. उद्यान, रसोईख़ाना, मदिरालय ।

तीन सौ सीमके सिक्कोंकी[1] है औक़ात ही क्या
लेकिन ऐ ज़ुहराजबीं ! फिर भी बड़ी चीज़ है यह
इनकी बरकतसे किलर्कोंकी भयानक ज़ंजीर
हल्क़ए - गेसुए - जानाँमें बदल जाती है
कितने ख़ुश बख़्त हैं वह तीन सौ सीमी सिक्के
जिनकी इमदादसे इक ख़ानुमाँ बर्बाद किलर्क
एक शबके लिए कौनेनका हाकिम[2] बन जाय
आजकी रात मैं सुल्तान हूँ तू सुल्ताना

आजकी रात मैं सुल्तान हूँ तू सुल्ताना
आजकी रात मेरी जान फ़क़त आजकी रात
तेरे हर हुक्मकी तामीलका ज़ामिन[3] हूँ मैं
मेरे हर ख़्वाब - बहारोंका हयूला[4] है तू
ले उठा साग़रे-लबरेज़[5] कि जलते हैं चराग़
रहमते - हक़के दरीचोंको हुई है जुम्बिश
खोल दे बाल कि मदहोश धुँधलके छा जायें
और ख़राबातकी सरशार तजल्लीकी[6] तरह
जज़्ब[7] हो जा मेरे एहसासकी गहराईमें
रक़्से - ऐसाबका नशा रहे शबभर तारी
कल सहर तो वही बे-आब खिलौना होगी
और मैं एक सुबक पेशा पशेमान किलर्क

१. रजत सिक्के । २. संसारका बादशाह, ३. आदेश-पालक, ४ बहारोंको जन्म देनेवाली, ५. लबालब भरा प्याला, ६. मदिरालयकी नशीली बहारकी, ७. घल-मिल जा ।

क़ते

[२८० में-से ३१]

ऐ गदागर[1] ! ख़ुदाका नाम न ले
इससे इंसाँका दिल नहीं हिलता
यह है वह नाम जिसकी बरकतसे
अक्सर औक़ात कुछ नहीं मिलता

हर मुसाफ़िरको बाख़बर कर दो
यह मेरे तजरुबेका जौहर[2] है
रहबरोंकी फ़रेबकारीसे[3]
रहज़नोंका ख़ुलूस[4] बहतर है

एक माँके कुशादा[5] सीनेपर
एक नन्हा-सा माहपारा[6] है
ज़िन्दगीके ज़ईफ़ शानोंपर[7]
फ़र्ज़का बोझ कितना प्यारा है ?

कसरते-ग़ममें[8] लुत्फ़े-ग़मख़्वारी[9]
साग़रे-जमका[10] काम देता है

१. मँगते, २. निचोड़, इत्र, ३. पथ-प्रदर्शकोंकी चालोंसे, ४. लुटेरोंका व्यवहार, ५. उदार, ६. बालक, ७. वृद्ध कन्धोंपर, ८. दुःखोंकी अधिकतामें, ९. ग़म सहन करनेके स्वभावका आनन्द, १०. वह प्याला जिसमें जमशेद बादशाह विश्वकी झलक देखता था ।

वक़्तपर एक लफ़्ज़े - हमदर्दी
इब्ने-मरियमका[1] काम देता है

जाने किसने निजात[2] ढूँढ़ी थी ?
ज़ीस्तकी जिल्लतोंसे[3] घबराकर !
एक गर्दन थी आज भी मौजूद !
रेलकी ताबनाक[4] पटरीपर !!!

जब्रे-क़ुदरतने आदमीके लिए
कैसा दिल-आवेज़ रोग छाँटा है
दिलकी तस्कीन ढूँढ़नेवाले !
ज़िन्दगी इक हसीन काँटा है !

दैरो-काबासे थकके लौटा था
हौज़े-कौसर पै रुक गया हूँ मैं
मेरी लग़ज़िश मुआफ़ कर साक़ी !
तेरे क़दमों पै झुक गया हूँ मैं

एक रेज़ा तेरे तबस्सुमका[5]
उड़ गया था शराबख़ानेसे
हौज़े-कौसर[6] बना दिया जिसको
वाइज़ोंने किसी बहानेसे

१. ईसामसीह, जो दीन-दुखियोंके पिता कहलाते हैं, २. मुक्ति, संसार-से छुटकारा, ३. ज़िन्दगीकी परेशानियोंसे, ४. चमकती हुई, ५. एक मुसकान-का अंश, ६. जन्नतमें बहनेवाली मदिराकी नहर ।

मैकदेकी शराब नाक़िस[१] है
ज़ाहिदे - पारसाने पी होगी !!
हौज़े-कौसरमें जो छलकती है
वह ख़ुदाने कशीद की[२] होगी ?

ए रियाकार[३] तू चराग़ जला
और मैं आँधियोंको लाता हूँ !
रोज़ तेरे दिये जलाये हैं
आज अपना दिया जलाता हूँ

मेरे रज़्ज़ाक़[४] ! तेरी रहमत[५] भी
इस क़दर तंगदस्त[६] हो जाये ?
जो तेरे लुत्फ़पर नज़र रक्खे
वही फ़ाक़ा-परस्त[७] हो जाये ?

रातको ख़्वाबमें बसा औक़ात
मुझसे वह रस्मो-राह करते हैं
जिस तरह इक नदीके दो साहिल[८]
दूर रहकर निबाह करते हैं

१. मदिरालयकी शराब ख़राब, २. खींची होगी, ३. दुनियादार, ४. ख़ुदा, भोजन देनेवाला, ५. दयालुता, ६. संकीर्ण, ७. निर्धन, ८. किनारे ।

कौन है, जिसने मै नहीं चक्खी ?
कौन झूटी क़सम उठाता है ?
मैकदेसे जो बच निकलता है
तेरी आँखोंमें डूब जाता है

उम्र भर हमने एक काम किया
अपने मसलकका एहतराम[1] किया
फ़र्शे-काबा पै भी ब-वक़्ते-नमाज़
आपकी आँखको इमाम किया

फूल मुरझा गये तो क्या हासिल?
चाँद गहना गये तो क्या हासिल?
आ भी जाओ कि वक़्त मौज़ूँ[2] है,
दिन ख़राब आगये तो क्या हासिल ?

कोई वक़अत[3] नहीं जिंसे-वफ़ाकी[4]
लिये फिरते हो किन ख़ुश फ़हमियोंको ?
बड़ी क़ीमत पै दुनिया बेचती है,
रवादारीके[5] झूटे मोतियोंको

सैलाब-के-सैलाब[6] गुज़र जाते हैं !
गरदाब-के-गरदाब[7] गुज़र जाते हैं !

१. लक्ष्यका आदर, २. उचित, मुनासिब, ३. पूछ, इज़्ज़त, ४. भले कार्योंकी, ५. परस्पर निभावके, शराफ़तके, ६. बाढ़, ७. भँवर ।

आलामो-हवादससे[1] परेशाँ क्यों है ?
यह ख़्वाब हैं और ख़्वाब[2] गुज़र जाते हैं !

इक मौज[3] मचल जाये तो तूफ़ाँ बन जाये
इक फूल अगर चाहे गुलिस्ताँ बन जाये
इक ख़ूनके क़तरेमें है अज़मत[4] इतनी
इक क़ौमकी तारीख़का उनवाँ[5] बन जाये

है रश्क[6] मुझको तेरे कारोबारपर मुरशद[7] !
कमन्दे-ज़ुल्फ़े-रसाकी बड़ी ज़रूरत है
कहीं मिले तो मुझे भी ज़रा ख़बर करना
मुझे भी तेरे ख़ुदाकी बड़ी ज़रूरत है

बेग़रज़ दोस्तोंकी हमदर्दी
किस क़दर पुर-ख़लूसो-सादा है
यह वह कमयाब फूल हैं जिनमें !!
रंग कम है महक ज़्यादा है

सैकड़ों आशिक़ोंको नहलाकर
पूरी दोशीज़गीसे[8] जारी है
ज़िन्दगीकी नदीसे मत शर्मा
यह भी तेरी तरह कुँवारी है

१. कष्टों, विपत्तियोंसे, २. स्वप्न, ३. लहर, ४. महानता, ५. इतिहासका शीर्षक, ६. ईर्ष्या, ७. गुरु, नमीहतकार, चालाक, धूर्त, ८. कुँवारेपनसे प्रवाहित ।

ज़ीस्तमें[1] एहतयाजके[2] लमहे
लोग कहते हैं आम आते हैं
मुफ़लिसोंके दिलोंको मत ठुकरा
यह पियाले भी काम आते हैं

मैं नमाज़ी नहीं कि लोगोंपर
तेरी ख़ातिर ज़बाँ दराज़[3] करूँ
मैंने फ़िलहाल तो यह सोचा है
अपनी आलूदगी पै नाज़[4] करूँ

यह बुज़ुर्गाने-बासफ़ा[5] साक़ी
सुर्ख़िए-चश्मे-हूर पीते हैं
मैं नहीं उनकी शानके शायाँ
यह फ़रिश्ते हैं नूर पीते हैं

राहके हर मुहीब[6] पत्थरपर
कोई हिकमतकी[7] बात लिक्खी है
तू जिन्हें नक़्शे-पा[8] समझता है
दास्ताने-हयात[9] लिक्खी है

१. ज़िन्दगीमें, २. ज़रूरतके अवसर, ३. मुखरित होऊँ, भाषण दूँ, ४. मदिरापानपर अभिमान, ५. पाक-पवित्र, ६. भयानक, डरावना, ७. कामकी, ८, चरण-चिह्न, ९. जीवन-कथा।

तेरी सरिश्तके औसाफ़ जाग उट्ठे हैं
तेरी जबाँ पै हविसकी कोई लकीर नहीं
अब इस क़दर तू ख़ुदाके क़रीब है ज़ाहिद !
तेरे वजूदमें इंसानका ज़मीर नहीं

ऐ ग़रीबोंको रौंदने वालो !
आदमी सब्ज़ा-ओ-गयाह[१] नहीं
यह फ़क़ीराने - राहे - उफ़तादा[२]
दर्से - इबरत[३] हैं फ़र्शे-राह[४] नहीं

किस क़दर दूररस[५] है तू ज़ाहिद !
क्या अनोखी हैं मन्तक़ें[६] तेरी
यानी मअराज आदमीयतकी[७]
या इबादत है, या शिकम-सेरी[८]

आँख वोह है जो हर मसर्रतमें[९]
दामसे[१०] होशियार रहती है
तीतरी फूलसे लिपटकर भी
मुज़्तरो-बे क़रार[११] रहती है

१. घास-फूस २. रास्तेमें पड़े रहनेवाले मुसीबतज़दा मँगते, ३. नसीहत-के सबक़ हैं, ४. रास्तेके फ़र्श, ५. सुरुचिरहित, ६. दलीलें, ७. मानवताका लक्ष, ८. उपासना या पेट-पूजा, ९. खुशीमें, १०. जालसे, धोखेसे, ११. तड़पती बेचैन ।

सदों - ग़मगीं सकूतके मसकन
क़हक़होंके शराबख़ाने[1] थे
आज क़ब्रें हैं जिस जगह साक़ी !
कल फ़लकबोस आशियाने[2] थे

ऐ ख़ुदा ! तुझको पूजने वाले
तंग करते हैं तेरे बन्दोंको
बाग़े - जन्नतके सब्ज़ पेड़ोंसे
बाँध अपने नियाज़मन्दोंको[3]

मेरे शेरोंका माजरा मत पूछ
यह नदी दौरे-ख़ूँसे बहती है
एक मिसरा शऊर[4] लिखता है
एक मिसरा शराब कहती है

कुछ मुहब्बतकी आग होती है
कुछ रक़ाबतके ख़ार[5] होते हैं
दोस्तोंकी मिज़ाज - पुरसीके
ज़ाविए[6] बे - शुमार होते हैं

—शहरे-ख़ूबाँसे

१. सुख-चैनके निवास, २. गगनचुम्बी अट्टालिकाएँ, ३. श्रद्धालुओं-को, ४. बुद्धि, समझ, ५. ईर्ष्याके काँटे, ६. दृष्टिकोण ।

ग़ज़लें

[११४२ पृष्ठोंसे चुनकर]

बातको हश्र तक न ले जाना
इत्तफ़ाक़न नज़रसे भूल हुई
खिल रही थीं चमनमें दो कलियाँ
एक दाग़ और एक फूल हुई
तुझसे भी बदगुमाँ[1] है दिल यारब !
क़ीमते - बन्दगी वसूल हुई

न जाने कौन-सी मंज़िल है यह मुहब्बतकी
कि तुमको देखके नाशाद[2] हो गया हूँ मैं

जन्नतमें न मै है, न मुहब्बत, न जवानी
किस चीज़ पै इंसाँ बसर-औक़ात करेंगे ?

किश्ती चला रहा है, मगर किस अदाके साथ
हम भी न डूब जायें कहीं नाख़ुदाके[3] साथ

ऐ ग़मे-ज़िन्दगी न हो नाराज़
मुझको आदत है मुसकरानेकी

---

१. सशंकित, २. उदास, ३. मल्लाहके ।

काँटोंकी दिलकशी पै भी थोड़ा-सा ग़ौर कर
यह चीज़ गुलिस्ताँकी बड़ी पायदार[1] है

दिले-नादाँ ! ज़रा मुँहतात[2] रहना
मुहब्बत भी तिजारत हो गई है

कोई कशिश तो 'अदम' है ग़रीबख़ानेमें
तमाम दहरके आलाम[3] आये बैठे हैं

पाँव आहिस्ता रख कि रस्तेमें
दर्द - मन्दोंने दिल बखेरे हैं

सहरके[4] वक्त मै पीनेसे मुझको रोक मत नासेह[5] !
कि सज्देके[6] लिए दिलमें ज़रा-सा सिद्क़[7] लाना है

यह धोके ख़िरदतर्क[8] ही महदूद[9] रक्खें
जुनूँ बे - नियाज़े - बहारो - ख़िज़ाँ[10] है

यारब ! मैं मुत्तफ़िक़[11] नहीं फ़र्दे-गुनाहसे[12]
हाँ कातिबे-अमलको[13] बुला मेरे सामने
आये हैं वह मुक़ाम भी इरफ़ाने-इश्क़में[14] ।
जब लब कुशा[15] हुआ है ख़ुदा मेरे सामने

१. स्थायी, मज़बूत, २. सावधान, ३. विश्वके दुःख, ४. प्रातःकालके, ५. उपदेशक, ६. नतमस्तक होनेके, नमाज़ पढ़नेके, ७. तल्लीनता, सचाई, ८. अक़्लतक, ९. सीमित, १०. सरलता बहार और पतझड़के कारनामोंसे अनभिज्ञ है, ११. सहमत १२. अपराधी-तालिकासे, १३. कर्मोंके लेखपाल-को, १४. पवित्र प्रेममें; ईश्वरवशीय प्रेममें, १५. वार्तालाप करना ।

मिज़ाज़े-दैरो-हरममें[1] अजीब वहदत[2] थी
जिसे बुतोंने न चाहा उसे ख़ुदा न मिला

अभी तो शिकवए-नायाबिए-बशर[3] है 'अदम' !
अभी यह कौन बताये हमें ख़ुदा न मिला

मज़ा तो जब था कि साहिल पै[4] झूमने वाले
भँवरमें घिरके भी थोड़ी-सी हाउ-हू करते

जबसे देखा है कि नाअहल[5] भी हैं जाम-बकफ़[6]
मुझको पैमाना उठानेसे हया[7] आती है

इस चाँद-सी जबीं पै[8] इबादतका तल्ख़ बोझ[9]
ज़ालिम ख़याल कर अभी अहदे-शबाब[10] है

ब-ज़ाहिर[11] तो हम मैकशी[12] कर रहे हैं
ब-बातन[13] कोई दाग़े-दिल धो रहा है

हया बेहोश होकर गिर रही है
किसीकी बेहिजाबी[14] तौबा-तौबा

१. मन्दिर-मस्ज़िदके स्वभावमें, २. समानता, मेल-मिलाप; ३. मानवके अभावकी शिकायत, ४. किनारेपर, ५. अयोग्य, अनधिकारी, ६. मदिरापात्र लिये हुए ७. ग़ैरत, शर्म, ८. चन्द्रमा जैसे मस्तकपर, ९. उपासनाका कटु भार १०. यौवन-काल ११. प्रकट रूपमें, १२. मदिरा-पान, १३. वास्तवमें १४. बेपर्दगी, रूप प्रदर्शन ।

ख़ुदापर कुछ यक़ीं आने लगा है
दुआकी बारयाबी[1] तौबा-तौबा

अब क्या उलझ सकेगा हमसे ग़मे-ज़माना
हम तेरे गैसुओंके हल्क़ेमें आ चुके हैं
झूठी मसर्रतोंको[2] यह हादसा[3] सुना दो
हम ग़मकी तल्ख़ियोंपर[4] ईमान ला चुके हैं

यारब ! मेरे हसीन गुनाहोंकी दाद दे[5]
मैं बह गया था तेरे करमकी घटाओंमें[6]

'अदम' न मल्लाहका करम[7] है, न दस्ते-क़ुदरतकी कारसाज़ी[8]
कि इक थपेड़ने बे इरादा लगा दिया नावको किनारे

तुझे[9] गुमाँ है, मेरी ख़ामुशीकी तहमें तस्कीन जल्वागर[10] है
मैं दम-ब-ख़ुद हूँ कि ज़िन्दगी एक ज़िल्लते-नागवार[11] क्यों है ?

कभी तो दैरो-हरमसे[12] तू आयगा वापिस
मैं मैकदेमें[13] तेरा इन्तज़ार कर लूँगा

---

१. सफलता, २. खुशियोंको, ३. घटना, ४. दुःखोंकी कटुतापर, ५. ख़ूबसूरत पापोंकी तारीफ़कर, ६. कृपालुताकी वर्षामें, ७. कृपा ८. ईश्वर-के वरदहस्तकी दया, ९. सन्देह, १०. सुख-चैन निहित, ११. असह्य-पतित, १२. मन्दिर-मस्जिदसे, १३. मदिरालयमें ।

जाता हूँ बज़्मे-हश्रमें[1] इस बेदिलीके साथ
जैसे किसी रक़ीबके[2] घर जा रहा हूँ मैं
दैरो-हरमकी गर्द[3] बहुत दूर रह गई
शायद कि मैकदेके[4] क़रीब आ रहा हूँ मैं

मरनेवाले तो ख़ैर बेबस हैं
जीनेवाले कमाल करते हैं

तूफ़ाँ बड़े ग़रूरसे ललकारता रहा
किश्ती बड़े नियाज़से[5] ज़िदपर[6] अड़ी रही

सवाल करके मैं ख़ुद ही बहुत पशेमाँ[7] हूँ
जवाब देके मुझे और शर्मसार न कर

मेरी दीवानगीपर हँसनेवाले!
तेरे शानेसे[8] आँचल गिर रहा है

ज़िन्दगीके ज़ुल्म भी जिनको न हैराँ कर सके!
मौतकी तकलीफ़से वह लोग घबरायेंगे क्या
पूछते हैं हमसे अहले-होश मस्तीका सबब!
हम 'अदम' ख़ुद ही नहीं समझे तो समझायेंगे क्या

---

१. क़यामतकी अदालतमें, प्रलयके न्यायालयमें, २. शत्रुके, ३. मन्दिर-मस्जिदकी धूल, ४. मदिरालयके, ५. नम्रता पूर्ण, ६. मुक़ाबिलेपर, मोर्चेपर, ७. लज्जित, शर्मिन्दा, ८. कन्धेसे।

ग़मे-हयातका मफ़हूम[1] पूछने वाले !
यह वह सवाल है, जिसका कोई जवाब नहीं

तुम और इतनी कुशादा-दिलीसे[2] पेश आओ
मैं सोचता हूँ सितम है, कि महर्बानी है
बड़ी उदास, बड़ी मुज़महल[3], बड़ी ग़मगीं[4]
मेरा ख़याल है, शायद मेरी जवानी है

—खराबातसे

ग़म अगर दिलको रास आ जाये
शादमानी[5] ही शादमानी है

अब इससे बेहतर सफ़रकी कुल्फ़तका[6] क्या मुनासिब इलाज होगा !
हसीन रहज़न[7] बड़ी मुहब्बतसे रहरवोंको[8] बुला रहे हैं
मुझे यह कल रात ख़्वाब[9] आया है ऐ नजूमी[10] ! कि फ़स्ले गुलमें[11]
वह मुझको आग़ोशमें[12] लिये चाँदका सफ़ीना[13] चला रहे हैं

वह जफ़ासे भी दस्तकश[14] हैं अब
यह अताब[15] जदीद[16] है शायद

किनारा गो किनारे ही को कहना चाहिए ताहम[17]
कुछ ऐसे ज़िन्दादिल भी हैं, जो तूफ़ानोंको कहते हैं

१. जीवन-दुःखका आशय, २. उदार हृदयसे, ३. बुझी हुई-सी, ४. दुःखी, ५. सुख, प्रसन्नता, ६. परेशानीका, ७. सुन्दर लुटेरे, ८. यात्रियोंको, ९. स्वप्न, १०. ज्योतिषी, ११. बहारमें, १२. गोदमें, १३. नौका १४. हाथ रोके हुए, तत्पर नहीं, १५. नाराज़गी, क्रोध, १६. नवीन ढंगका, वर्त्तमानयुगीन, १७. फिर भी ।

मुहब्बत किसको कहते हैं, सदाक़त[1] किसको कहते हैं
निगाहोंमें निगाहें डालकर तफ़सीर[2] कर डालो

दिलमें कमी कुछ ऐसी महसूस[3] हो रही है
नज़दीक आके जैसे वह दूर हो गये

वह इस अन्दाज़से हमपर निगाहे-नाज़[4] करते हैं
कि जैसे गानेवाले गीतका आग़ाज़[5] करते हैं

अब भी तुम नहीं समझे फ़र्क़ शमअ-ओ-परवाना
तुमने छब जलाई है, हमने दिल जलाये हैं
बरक़रार[6] हैं कैसे, ऐतमाद[7] दोनोंके
हम लुटे-लुटाये हैं, वह सजे-सजाये हैं

अब दिलमें वह रहते हैं
अब बस्ती वीरान नहीं
दरियाको क्या पार करें
दरियामें तूफ़ान नहीं

यह काँटा जो माली तुझे चुभ गया है
यह काँटा भी गुलशनका लख़्ते-जिगर है

१. सचाई, वास्तविकता, २. ख़ुलासा, भाष्य, ३. अनुभव, ४. माशूक़ाना नज़र, ५. प्रारम्भ, ६. क़ायम, हालात, विश्वास ।

क़फ़स[1] तक पयामात[2] क्यों जा रहे हैं ?
चमनमें कोई हादसा[3] हो गया है ?

मुझको तो डर-सा आपसे लगता है शैख़जी !
मैंने सुना है, आप ख़ुदासे क़रीब हैं !!

—बतिमेसे

नींद भी मौत बन गई है 'अदम' !
बेवफ़ा रात भर नहीं आती

वह लमहे[4] जिनमें फ़िक्रे-आक़बत बीनी[5] नहीं होता
वह लमहे ज़िन्दगीके किस क़दर शादाब[6] होते हैं ?
मैं उनको देखता रहता हूँ सरतापा[7] नज़र बनकर
वह फ़र्शे-गुलपै[8] जब ख़ामोश महवे-ख़्वाब होते हैं
अदम ! इन्सान जब गहरी-नज़र डाले हवादसपर[9]
तो उनमें बहतरीके भी बहुत असबाब[10] होते हैं

ता-देर[11] ठहरना नहीं इस बज़्ममें[12] अच्छा
इक लफ़्ज़में कहकर यहाँ अफ़साना[13] गुज़र जा

---

१. पिंजरे तक, कारागार तक, २. संदेश, ३. दुर्घटना, रंज, ४. पल, ५. परलोककी चिन्ता, ६. फूलकी तरह हँसते हुए, ७. पूर्णरूपेण दृष्टि, ८. कुसुमशय्यापर सोये हुए, ९. मुसीबतोंपर, १०. सामान, कारण, ११. बहुत दिनों तक, १२. दुनियारूपी महफ़िलमें, १३. क़िस्सा ।

साज़की नै[1], ग़ुञ्चेकी चटक[2], काकुले - जानाँका साया[3]
आज तो है हर चीज़ बहम[4], मुस्तक़बिलमें[5] क्या होगा ?

मुहब्बत तो नहीं, मालूम क्या है ?
अक़ीदत[6] आपसे बे-इन्तहा[7] है
कोई तकलीफ़ तो सरकार कीजे
अदावत भी मुहब्बतमें रवा[8] है,
तुम्हारी गुफ़्तगू है, हर किसीसे
न जाने यह मुझे क्या हो गया है ?
अभीसे अजनबीयत बढ़ रही है
अभी तो दोस्तीकी इब्तदा[9] है

अगर अरबाबे-दिल[10] गिरते हुओंको थाम लेते हैं
तो ख़ैर इक मर्तबा फिर लड़खड़ाकर देख लेता हूँ

ग़मे-दौराँसे बस इतना तअ़ल्लुक़ है 'अदम' मेरा
ग़मे-दौराँकी जानिब मुसकराकर देख लेता हूँ

बा-सलीक़ा हकीम हो तुम लोग
महजबीनो ! करीम हो तुम लोग

१. वाद्यका स्वर, २. कलियोंका मुँह खोलना, ३. प्रियतमा-की लटोंकी छाया, ४. मयस्सर, प्राप्त, मौजूद, ५. भविष्यमें, आगे, ६. आदरपूर्ण झुकाव, ७. असीम, ८. जाइज़, मुनासिब, ९. शुरूआत १०. इष्ट-मित्रोंके दिल ।

शबनमो - गुल सलाम करते हैं
कितने नर्म और हलीम हो तुम लोग ?
हम तो ज़िन्दा हैं इस अक़ीदतसे[1]
ज़िन्दगीकी नसीम[2] हो तुम लोग

मैकदा दो क़दम पै है लेकिन—
राहमें सौ चटान पड़ती है
उनमें और हममें फ़ासिला ही क्या
ज़िन्दगी दरमियान पड़ती है
ऐसे आती है, याद उसकी 'अदम'
जैसे बिजली - सी आन पड़ती है

हमसे तुमने भी की तो नफ़रत की
हाय बदक़िस्मती मुहब्बत की ?
ज़िन्दगी खोके यह ख़याल आया
ज़िन्दगी चीज़ थी ज़रूरतकी

वोह जब आये हुजूमे - महशरमें
रौनक़ें बढ़ गईं क़यामतकी
ऐ ख़ुदा ! तुझको ढूँढ़नेके लिए
हमने पत्थरकी भी इबादत की

१. विश्वासपर, २. हवा ।

क़हर[1] था आप अगर करम[2] करते
शुक्र है आपने अदावत की
वह सितमसे भी दस्त कश हैं 'अदम'
हाय दरिया - दिली मुरव्वत की

लीजिए यह अदा भी ख़ूब रही
हश्रमें भी सवाल होते हैं

हजूमे-हश्रसे पहले भी हमसे मिल लीजे
वहाँ तो आप बहरहाल रू-बरू[3] होंगे

नासहा[4] ! एक घूँट तो पीले
गुफ़्तगूसे[5] सरूर[6] बरसेगा
देखलें आप लेके अँगड़ाई
मस्त आमोंसे बौर बरसेगा

मेरे महबूब ! यह दुनिया बड़ी दिलचस्प दुनिया है
यहाँ आकर ख़ुदा भी मूरदे-इल्ज़ाम हो जाये

अपनोंसे भी इतना तकल्लुफ़ ?
कितने दुनियादार बने हो ?

कभी किसीको ख़याल आ ही जायेगा इसका
कि हमको खोके किसीने भी कुछ गँवाया है

१. ज़ुल्म, २. महर्बानी, ३. समक्ष, ४. नसीहत देनेवाले, ५. वार्तालापसे, ६. आनन्द ।

अगर्चे सेले-हवादसमें[1] बह रहे हैं हम
ख़ुदाका शुक्र तेरी चश्मे-इल्तफ़ात[2] तो है

तुम आना चाहो तो मुश्किल नहीं कुछ आनेमें
ज़माना रातको मसरूफ़े - ख़्वाब[3] होता है
हम उनके इश्क़में हैं, इतने ग़ैर हाल 'अदम'
कि जिस तरह कोई ग़र्क़े-शराब होता है

टूटना इनका कहाँ आसान है ?
आपके वादोंमें मेरी जान है

—शहरे-फ़रियादसे

आप सरकार नहीं आये तो क्या फ़र्क़ पड़ा ?
आप आ जाते तो माहौल दरख़्शाँ[4] होता
मैं तो मैकश[5] हूँ मेरे हाथमें शीशा है 'अदम'
तू तो मोमिन[6] है, तेरे हाथमें क़ुरआँ होता

हम जिस दिन मौजूद न होंगे
हमको उस दिन याद करोगे

हमको क्या ज़िन्दगीसे काम 'अदम' !
आप जाती है, आप आती है

न जाने कशिश क्या थी उस देशमें ?
न लौटा 'अदम'की[7] तरफ़ जो गया

---

१. आपदाओंकी बाढ़में, २. कृपादृष्टि, ३. सोनेमें लीन, ४. वातावरण चमकीला, ५. सुरा-सेवी, ६. मुसलमान, ७. परलोकमें ।

हम कुछ इस ढबसे तरे घरका पता देते हैं
ख़िज्र[१] भी आये तो गुमराह[२] बना देते हैं

अभी इनसे क्या अर्ज़े-मतलब करें
अभी चार दिनकी मुलाक़ात है

किस वक़्तसे ख़ुशीको आवाज़ दे रहा हूँ
देखें वह नाज़नीं[३] कब दरवाज़ा खोलती है ?
जाने यह क्या हुआ है, दोशीज़ए-ख़िरदको[४] ?
घबराके देखती है, शर्माके बोलती है
इक वक़्त था 'अदम' जब वह ख़ुद न बोलते थे
इक वक़्त यह है उनकी तसवीर बोलती है

तुमसे तो बात की थी तसकीने-दिलकी[५] ख़ातिर
तुमको भी आगई है, तक़रीरे-नासहाना[६]

उसने कोई जवाब ही न दिया
लोग उलझे रहे सवालोंमें

मैं कहाँ और तेरी ज़ात कहाँ ?
सिर्फ़ इक इत्तफ़ाक़ है प्यारे !

---

१. एक बुज़ुर्ग जो क़यामततक ज़िन्दा रहते हुए भूले-भटकोंको मार्ग दिखाते रहते हैं, २. ग़लत राहपर, ३. कोमलांगी, ४. अक़्लरूपी कुँवारी लड़कीको, ५. दिलके चैनके लिए, ६. उपदेशकों जैसे भाषण देना। नसीहत करना।

काश हम आप इस तरह मिलते
जैसे दो वक़्त मिल गये होते

हुबाब[1] टूटा तो दरियाको यह शऊर हुआ
ख़मोशियोंमें भी चंगो[2]-रबाब[3] होते हैं
वहाँ जवाबकी ज़हमत[4] उठा रही है ख़िरद[5]
जहाँ सवाल ख़ुद अपना जवाब होते हैं

बस यह आख़िरी ज़हमत[6] होगी
आ जाना ताख़ीर[7] न करना

ज़ाहिद ! मुश्किल पड़ जायेगी
जन्नतका दरबान न होना

गुञ्च-ओ-गुलने[8] ख़ुदकशी[9] कर ली
और क्या क़द्रे-बाग़बाँ करते

उफ़ वह ज़ख़्मी मुशाहदा[10] जिसको
फूलपर ख़ारका[10] गुमाँ[11] गुज़रे

१. पानीका बुलबुला, २. ढप जैसा वाद्य, ३. वाइलिन जैसा वाद्य, ४. तकलीफ़, ५. अक़्ल ६. तकलीफ़, ७. देर, विलम्ब, ८. कली और फूलने, ९. आत्महत्या, १०. देख-भाल, नज़र भरके देखना, ११. काँटोंका, १२. वहम, शक ।

क़ल्बो-नज़रकी[१] रोशनी बनके मेरे क़रीब आ
आ भी मेरे हबीब[२] आ, आ भी मेरे तबीब[३] आ

जो साथी उस पार गये
हमको नाविक[४] मार गये
यारोंको ख़ुश करना था
जानके बाज़ी हार गये

दुश्मन-ओ-दोस्त सब बराबर हैं
वाक़ई कितने ख़ुश तमीज़ हैं आप

—गुलनारसे

उम्रे-रवाँ[५] तलाशे-मसर्रतमें[६] ऐ 'अदम'!
ऐसी गई कि आप भी कम्बख़्त मर गई

आते हैं मुझसे पूछने लोग आपका पता
शायद यह हादसा[७] भी करम[८] है हुज़ूरका

दीवानगीकी शर्त कुछ इतनी अजीब थी
जिसमें ज़रा-सी अक़्ल थी फ़रज़ाना[९] बन गया

शमएँ रोशन हैं, मगर माहौल[१०] फिर भी सर्द है
वह कहाँ गुम हो गये हैं जिनको परवाने कहें

---

१. दिल और आँखोंकी, २. प्यारे, ३. चिकित्सक, ४. तीर, ५. ज़िन्दगी, ६. सुखकी खोजमें, ७. घटना, ८. कृपा, ९. बुद्धिमान्, १०. वातावरण।

मैनोशीकी[1] तरग़ीबें[2] भी होशके झूटे हीले हैं
जिन नैनोंमें अमृत है वह नैन बड़े शर्मीले हैं
देखनेवाले होशमें रहना सब धोका-ही-धोका है
जिस्म बड़े बदसूरत हैं, मलबूस[3] बड़े भड़कीले हैं

कोई और दिल ढूँढ़ियेगा हुज़ूर !
वह बस्ती तो ज़ेरो-ज़बर[4] हो गई
'अदम' ! ज़िन्दगीकी हिकायत न पूछ
न मालूम कैसे बसर हो गई

है कितना फ़ासिला तेरी गलीसे महशर तक
हम आप चलके ज़रा चन्द गाम[5] देखेंगे
'अदम' बलासे निगाहों पै बर्क़[6] क्यों न गिरे
हम एक बार तो बालाए-बाम[7] देखेंगे

कहीं मर न जायें सितम सहनेवाले
तग़ाफ़ुलमें[8] थोड़ी-सी तख़फ़ीफ़[9] फ़रमा

दुश्मनी ग़ैर तो नहीं करते
दुश्मनी महर्बान करते हैं

इज़्ज़त है तो सब कुछ है
आन गई तो जान गई

१–२. शराबकी प्रेरणा, ३. लिबास, परिधान, ४. तहस-नहस, ५. क़दम, ६. बिजली, ७. ऊपरी मंज़िलकी तरफ़, ८. उपेक्षामें, ९. कमी।

मुज़महल[1] है बहारका मौसम
मुसकराओ तो कोई बात बने

नज़र उसने जब बरमला डाल दी
मेरी ज़िन्दगीकी बिना[2] डाल दी

रहबरो-रहज़न[3] यही दो आफ़तें थीं राहकी
राहरव[4]! दो आफ़तोंके दरमियाँ मारा गया

मेरी इक सिफ़त[5] ख़ुदाको यह बहुत पसन्द आई
मेरी जितनी लग़ज़िशें[6] थीं वह तमाम बे-इरादा

ऐसी कमन्द फेंक जो रहमतको खींच लाये
ऐसी निगाह डाल जो बरसात छेड़ दे

पहले तो वह भी होशमें थे हम भी होशमें
राहे-तअल्लुक़ात[7] ख़राबातमें[8] मिली

ऐ मौसमे-बहार! तू ले जा इसे भी साथ
मेरा शबाब[9] भी तेरे फूलोंकी बास है

हलके-से[10] इख़्तलाफ़से[11] राहें बदल गईं
थोड़ा-सा फ़ासिला था, मगर क्या तवील था

---

१. कुम्हलाया-सा, फ़ीका-सा, २. नींव, ३. पथप्रदर्शक और मार्गके लुटेरे, ४. मार्गसे जानेवाला, यात्री, ५. खूबी, ६. भूलें, ७. परस्पर सम्बन्धकी बात, ८. मदिरालयमें, खुदी खोनेपर, ९. यौवन १०. तनिकसे, ज़रा-से, ११. मतभेदसे।

उसके बग़ैर भी तो 'अदम' कट गई हयात[1]
उसका ख़याल उससे ज़्यादा जमील[2] था

बात क़ायम है, फ़क़त एक तवाना ज़िदसे[3]
मेरा इंसाँ कि तेरा ख़ालिके-इंसाँ[4] होना
ज़िन्दगी है सो बहरहाल गुज़र जायेगी
किस लिए आपका शर्मिन्दए-एहसाँ होना

रात जब चाँदसे मसरूफ़े-सुख़न[5] होती है
मेरे दिलमें तेरी पलकोंकी चुभन होती है
मेरे आँसूका भी है तेरे लबोंसे[6] रिश्ता
शबनमो-ग़ुंचासे[7] तरतीबे-चमन[8] होती है
मुश्किल यह आ पड़ी है कि गर्दिशमें जाम है
ऐ होश वर्ना मुझको तेरा एहतराम[9] है
मै[10] और हराम! हज़रते ज़ाहिद! ख़ुदाका ख़ौफ़
वह तो कहा गया था कि मस्ती हराम है

इधर आ जाइए सरकार! मैकश
शराबी चालको पहचानते हैं

१. ज़िन्दगी, २. सुन्दर, ३. कमजोर-सी ज़िदके कारण, ४. मैं इंसान हूँ या तू इंसानका बनानेवाला है? ५. वार्तालापमें व्यस्त, ६. ओठोंसे, ७. ओस और कलियोंसे, ८. बाग़की शोभा, ९. आदर, १०. मदिरा।

चाट कुछ ऐसी सितमगरको पड़ी है कि 'अदम'!
शैख़ है और दरे-मैख़ानाकी[1] दरबानी है

इसी तरह अह्दे-बहार आके गुज़र जाता है
जिस तरह रंग खिलौनोंका उतर जाता है

इस क़दर भी न ग़रीबोंसे ख़फ़ा हो जाना
आदमीयतसे गुज़रना है ख़ुदा हो जाना
ज़िन्दगी-साज़की[2] आहंगे-तराज़ी[3] है 'अदम'!
मौत है साजका महरूमे-नवा[4] हो जाना

मेरे दोस्तोंकी दिल-आज़ारियोंमें[5]
मेरी बहतरीकी कोई बात होगी

क्या मुस्तक़िल इलाज किया दिलके दर्दका
वह मुसकरा दिया मुझे बीमार देखकर

नक़ाब उनके चेहरेसे सरका है शायद
बड़ी दूर तक बर्क़[6] लहरा रही है

किसी दिन इधरसे गुज़रकर तो देखो
बड़ी रौनक़ें हैं फ़क़ीरोंके डेरे

---

१. मदिरालयके द्वारकी, २. वाद्यका जीवन, ३. स्वरोंके निकालनेमें है, ४. वाद्यका स्वरोंसे वंचित होना, ५. दिल दुखानेकी इच्छामें, ६. बिजली।

चले हो ग़रीबोंसे रंजूर[1] होकर
अभी लौट आओगे मजबूर होकर
उन आँखोंकी हालत कुछ ऐसी है जैसे
उठे मैकदेसे[2] कोई चूर होकर

ख़ुदा ग़ारत करे गुलशनके बद-अन्देश तिनकोंको
यह ज़ालिम जल नहीं जाते, किसीका आशियाँ होकर

ख़राबातमें[3] हमको ले जा रहे हो
यह क्या क़ीमती ज़ुल्म फ़र्मा रहे हो !
क़यामतका बाज़ार क्या गर्म होगा ?
न हम जा रहे हैं, न तुम आ रहे हो ?
कोई और तोहमत[4] तो बाक़ी नहीं है
बड़ी दिल-नवाज़ीसे[5] पेश आ रहे हो
'अदम' किस मतानतसे[6] बीमार होकर
जवाँ गैसुओंकी[7] हवा खा रहे हो

ऐ चश्मे-यार[8] ! अब न तग़ाफ़ुल[9] न इल्तफ़ात[10]
क्या मैं किसी सलूकके क़ाबिल नहीं रहा ?
कुछ तो तेरे ख़लूसकी[11] ताज़ीम[12] थी 'अदम'
वर्ना वह जान-बूझके ग़ाफ़िल नहीं रहा

१. रंजीदा, २. मदिरालयसे, ३. शराबख़ानेमें ४. इलज़ाम, ५. सहृदयतासे, ६. संजीदगीसे, ७. ज़ुल्फ़ोंकी, ८. प्रियतमाकी दृष्टि, ९. उपेक्षा-भाव, १०. कृपा, ११. प्रेमकी, १२. इज़्ज़त ।

कहते हैं उम्रे-रफ़्ता[1] कभी लौटती नहीं !
जा मैकदेसे[2] मेरी जवानी उठाके ला !

मै-सी हसीन[3] चीज़ हो और वाक़ई हराम
मैं कसरते-शकूकसे[4] घबराके पी गया

कुछ ऐसे आपने फेरी हैं आँखें
ज़मानेके सितम शर्मा गये हैं
'अदम' से ज़िन्दगी रूठी हुई थी
ख़ुदाका शुक्र है आप आ गये हैं

'अदम' कुछ इत्तफ़ाक़ ऐसा हुआ है
ख़मोशी अर्ज़े-मतलब हो गई है

दिलोंको फूल बननेकी हविस[5] थी
मगर नासूर होते जा रहे हैं

तो क्या दोनों चीज़ोंसे रग़बत[6] नहीं है ?
न मै पीजिएगा न ग़म खाइएगा,
हमारी गुज़ारिशका[7] अब क्या महल[8] है
कभी ख़ुद ही महसूस[9] फ़र्माइयेगा

१. गई उम्र, २. शराबख़ानेसे, ३. शराब-जैसी ख़ूबसूरत, ४. सन्देहकी अधिकताके कारण, ५. तृष्णा, इच्छा, ६. चाहत, लगाव, ७. प्रार्थना करनेका, अर्ज़ करनेका, ८. अवसर, मौक़ा, महल, ९. अनुभव कीजिएगा ।

तौहीने - ज़िन्दगी[1] है किनारेकी जुस्तजू[2] !
मँझधारमें सफ़ीनए - हस्ती[3] उतार दे
फिर देख उसका रंग निखरता है किस तरह
दोशीज़ए - ख़िज़ाँको[4] ख़िताबे - बहार दे

ऐ शैख़ ! बा-विक़ार किसी ढबसे बात कर
आँखोंसे बिजलियाँ न गिरा, लबसे बात कर

वह आँखोंसे फ़साने[5] कह रहे हैं
गुमाँ[6] होता है, दरिया बह रहे हैं
न जाने किस लिए वीरान दिलमें ?
वह इतनी मुद्दतोंसे रह रहे हैं
वह ऐसे कर रहे हैं बात हँसकर
कि जैसे बात सच्ची कह रहे हैं

मैं उम्र भर 'अदम' न कोई दे सका जवाब
वह इक नज़रमें इतने सवालात कर गये

मुझे बहकाने आई है तू दुनिया
परे हट, बे-अदब, जाहिल, कहींकी

वह ख़ुदा है तो आप सुन लेगा
ऐ 'अदम' ! इल्तजा न फ़र्माओ[7]

१. जीवनका अपमान, २. इच्छा, ३. जीवन-नौका, ४. पतझड़रूपी कन्याको, ५. क़िस्से, ६. शक, ७. प्रार्थना न करो, माँगो मत ।

क़तए-तअ़ल्लुक़[1] मत कीजिए
डूब न जाये नब्ज़े-हयात[2]

—क़त्रे-शोरींसे

मेरा सवाल अपने तजाहुल[3] पै हँस पड़े
इतनी तो दिलकशी हो तुम्हारे जवाबमें

जाता कहाँ 'अदम' मैं ख़राबातके[4] सिवा
बन्दोंसे बदगुमाँ[5] था ख़ुदासे डरा हुआ

अहबाबकी जफ़ाएँ[6] तो ज़ख़्मी न कर सकीं
अहबाबके ख़लूसका[7] मारा हुआ हूँ मैं

जिन्दगी है, शराब-ख़ाना है
और जो कुछ भी है फ़साना[8] है

मेरा सफ़ीना[9] अगर बच गया तलातुमसे[10]
मैं नाख़ुदाको ख़ुदाका ख़िताब दे दूँगा

मैं जानता हूँ आपका वादा ग़लत नहीं
पर दिलको एतबार न आये तो क्या करूँ?
आना तो चाहिए था उसे आज शब[11] ज़रूर
ऐ क़ल्बे-बेक़रार[12] न आये तो क्या करूँ?

१. सम्बन्ध-विच्छेद, २. जीवन-नाड़ी, ३. अज्ञानतापर, ४. मदिरालयके, ५. सशंक, ६. इष्ट-मित्रोंकी यातनाएँ, ७. बर्तावका, ८. क़िस्सा, ९. नौका, १०. तूफ़ानसे, ११. रात, १२. बेचैन दिल।

अँगड़ाई ले रहे हैं, कि लहरा रहे हैं वोह
महसूस हो रहा है, उड़े जा रहे हैं वोह
वह आयें या न आयें पर इतना तो है ज़रूर
महसूस हो रहा है, अभी आ रहे हैं, वोह
हायल[1] नहीं है अब कोई परदा मजाज़का[2]!
जिस सिम्त[3] देखता हूँ नज़र आ रहे हैं वोह
उठते हुए शबाबकी[4] तसवीर देखना
मौजे-शराबकी तरह लहरा रहे हैं वोह

या ख़ुदाका जुर्म था, या नाख़ुदाका दोश था
मेरी ग़रक़ाबीके पीछे कोई तो रू-पोश था

—पेचोख़मसे

मुहब्बत हो गई है ज़िन्दगीसे इतनी बेपायाँ[5]
कि अब घबराके मर जानेकी गुंजाइश बहुत कम है
ख़ुलूसे-राहज़नने इतना गरवीदा बनाया है
फ़रेबे-रहनुमा खानेकी गुंजाइश बहुत कम है

भूल मत जाइएगा वादोंको
बन्दा-परवर ख़्याल रखिएगा
दिल तुम्हारे सुपुर्द करते हैं
यह अमानत सँभाल रखिएगा

१. बीचमें पड़ा हुआ, विघ्नस्वरूप, २. इहलौकिक प्रेमका, ३. तरफ़, ४. यौवनकी, ५. घनिष्ठ।

दिल ज़ख़्म-ज़ख़्म और जिगर चाक-चाक हैं
अहबाबके सलूक बड़े पुर-तपाक हैं
हम तेरी बे-रुख़ीसे नहीं सर्दो-जाँ सनम!
हम तेरे ऐतनाकी तपिशसे हलाक हैं

ख़ुदारा नसीहत न फ़र्माओ कोई
बड़े सर्दो-बीमार दिन कट रहे हैं

अजब तंग दिल अब्र थे ख़्वाहिशोंके
न उमड़े, न गरजे, न छाये न बरसे
यहाँ दिलको कुछ चैन-सा आ गया है
उठे कौन अब आपकी रह-गुज़रसे

तुम्हें भी आगे चलकर सब जहाँ समझेगा दीवाना
हमें भी सब जहाँ पहले पहल फ़रज़ाना कहता था
सुनाना ही पड़ा मंसूरको हुक्मे-ज़बाँ बन्दी
ख़ुदाई ख़्वार जो कहता था बेबाकाना कहता था

मुझे जाम बख़्शो, उसे साज़ दो
किसी रोज़ दोनोंको आवाज़ दो

क़रीब आओ कि मैं कोई फ़ैसला तो करूँ
कि तुम शराबकी ठण्डक हो या तजल्लीए-तूर
क़रीब आओ कि दिलमें बड़ा अँधेरा है
क़रीब आओ कि घरमें ख़ुदाके हो कुछ नूर

'अदम' अकेला इस एज़ाज़के नहीं क़ाबिल
क़रीब आओ कि बाहम चलें ख़ुदाके हज़ूर

हम उनके ज़ोरे-मुसलसलकी जाँ-गुदाज़ीसे
न मर सके तो हमें मुसकराके मार दिया

ऐसा पत्थर कहाँ पड़ा होगा
जिस तरह राहमें समाज पड़े

आसियो! रास्तेसे हट जाओ
ज़ाहिदे-नेक नाम आता है
आओ तो इस वक़ारसे आओ
जैसे माहे-तमाम आता है

तुम आओ तो दुनिया झूम उठे, तुम आओ तो उक़बा जाग उठे
वरना तो यहाँ जो सूरत है, बीमार दिखाई देती है
बिजली भी गिरी और जल भी गया छोटा-सा नशेमन बुलबुलका
लेकिन वह जली-सी शाख़ अभी गुलबार दिखाई देती है

तेरे क़दमोंमें लेके आते हैं
ज़िन्दगीका हक़ीर-नज़राना

यह ठीक है तो मुझको किसी सिम्त ले चलो
कहते हैं वज़ए-काबा-ओ-बुतख़ाना एक है

दाने तो बे शुमार हैं तसबीहमें मगर
जिसमें लगन है यारकी वह दाना एक है

आते हैं गो नज़र तेरी आँखोंको बे हिसाब
लेकिन यह वाक़िया है कि परवाना एक है

हमको तो सिर्फ़ कामके चलनेसे हैं ग़रज़
नाराज़ है ख़ुदा तो सनम ही से काम लो

आवाज़ दे-न-दे वह समनबर जवाबमें
दीवाना वार उसको पुकारे चलेंगे हम

मैं भी सरकार गो सवाली हूँ
फ़र्क़ यह है, ग़रज़से ख़ाली हूँ
जिससे ताइर गुरेज़ करते हैं
वह उदास और ज़र्द डाली हूँ

तेरा रुतबा बहुत बुलन्द सही
शैख़ हम भी ख़ुदाके बन्दे हैं
वह भी मसरुफ़ हैं 'अदम' बेहद
जिनको कुछ काम हैं न धन्दे हैं

तबीयत जब नई उम्मीदसे मानूस होती है
तमन्नाओंमें ताज़ा ज़िन्दगी महसूस होती है
बग़ैर उनके 'अदम' मौसम कुछ ऐसा है बहारोंका
कि जैसे जंगलोंकी चाँदनी मायूस होती है

जिस जगह दाग़-से हैं अब बाक़ी
लोग कहते हैं आशियाने थे

जिस जगह बस्तियाँ हैं काँटोंकी
निकहतो-रंगके घराने थे,

मैं किसी और घरमें था महमान
मौत किस वक़्त मेरे घर आई
शुक्र है बाद एक मुद्दतके
आपकी शक्ल तो नज़र आई

मैं गिर चला था बड़ी बे दिलीसे रस्तेमें
बड़े ख़ुलूससे उम्मीदने सँभाला है

राहबरने तो जान ले ली थी
राहज़न बढ़के दस्तगीर हुआ

इश्क़ दीवानगी सही लेकिन
अक़्लपर मेरा ऐतक़ाद नहीं

मुझे इसका ख़ब्त हो किस लिए, यह जदीद है, वह क़दीम है
मेरी जान इस पै निसार है, जो सलीम है जो अज़ीम है

जो सफ़ीना भँवरमें डूब गया
उस सफ़ीनेमें नाख़ुदा होगा

फ़स्ले-गुलकी बरहनगी है वह
लोग जिसको ख़िजाँ समझते हैं

पी तो सकते थे माँगकर लेकिन
बनके आली वक़ार बैठे हैं
यार अब आ भी जा ख़ुदाके लिए
हम बड़े बेक़रार बैठे हैं

दिलकी धरती पै पाँव जब रक्खो
अर्ज़ यह है कि बा-अदब रक्खो

ख़ौफ़ मत खाइए अँधेरोंसे
ज़ुल्मतोंमें भी नूर होता है
बाज़ औक़ात राहे-हस्तीमें
अपना साया भी दूर होता है

हुज़ूर करते हैं किस लिए कम विक़ार अपनी इनायतोंका
मैं आप तसलीम कर रहा हूँ करमके दरिया रवाँ रहे हैं

इस मुहब्बतसे तेरा ज़िक्र किया है हमने
जिस तरह नामे-ख़ुदा विर्दे - ज़बाँ होता है,

अगर हुज़ूर मुनासिब ख़याल फ़र्मायें
तो बे - रुख़ीमें ज़रा एतदाल फ़र्मायें

हाय वह वक़्त, ज़ीस्त जब हँसकर
मौतसे हम - कनार होती है

सिर्फ़ इतना ख़याल रखियेगा
दोस्ती एक बार होती है
एहतरामे-ख़िज़ाँ करो यारो
यह नवेदे-बहार होती है

मेरे दामनका तार ले जाओ
गर ख़िरदको कफ़न नहीं मिलता

आप गर कुछ मेरे क़रीं होते
रात-दिन किस क़दर हसीं होते
तेरी ज़ुल्फ़ें अगर बिखर जातीं
मेरे लमहात अंबरीं होते
हमको खोकर सकूँ न पाओगे
हमसे मुख़लिस कहीं नहीं होते

—रम-आहूसे

कौन सुनता है सदा[1] नज़दीककी?
बेख़बर जा दूरसे आवाज़ दे

मैंने हर-एक चीज़को अपना समझ लिया
मुझको ख़बर न थी यह तेरी कायनात[2] थी

दुनिया तेरे वजूदको[3] करती रही तलाश
हमने तेरे ख़यालको यज़दाँ[4] बना दिया

---

१. आवाज़, २. दुनिया, ३. अस्तित्व, ४. ईश्वर।

महशरमें[1] इक सवाल किया था करीमने[2]
मुझसे वहाँ भी आपकी तारीफ़ हो गई

जैसे कि हाथ मैंने दो आलम पै रख दिया
महसूस यूँ हुआ तेरे दामनको थामकर

ताज़गी है तेरी जवानीकी
आइने तो बहुत पुराने हैं

जल भी जा बदनसीब परवाने !
शमअकी ज़िन्दगी दराज़[3] नहीं

मेरी जवानीके गर्म लमहों पै डाल दे गैसुओंका[4] साया
यह दो पहर कुछ तो मुअतदिल[5] हो तमाम माहौल[6] जल रहा है

छुपे हो हिजाबाते - दैरो-हरममें
मगर बेतल्लुफ़ नज़र आ रहे हो

जब भी होते हैं हम 'अदम' तनहा
यारसे हम - कनार होते हैं

शायद मुझे निकालके पछता रहे हैं आप
महफ़िलमें इस ख़्यालसे फिर आ गया हूँ मैं

१ नवम्बर १६५८ ई० } —अपनी डायरीसे

---

१. प्रलय-स्थान, २. खुदाने, ३. लम्बी, अधिक, ४. ज़ुल्फ़ोंकी परछाईं, ५. हृदयको शीतलता देनेवाली, ६. वातावरण ।



मैं शाइरे - मज़दूर हूँ लीडर तो नहीं हूँ
खाना मुझे दरकार है बासी हो कि ताज़ा
कबसे तुझे घबराया हुआ देख रहा हूँ
'एहसान'की दावत है कि सामाने-जनाज़ा ?

एहसान दानिश

एहसान शाइरे-मज़दूर हैं, मगर ऐसे शाइरे-मज़दूर नहीं, जो कोठियोंमें रहते हुए, कारोंमें घूमते हुए भी देशकी भुकमरीसे बेहद परेशान बने रहते हैं। बक़ौल रईस अमरोहवी—

हिन्दोस्ताँके ख़ाक-नशीनोंकी यादमें
सोफ़ोंमें मुझको नींद न आई तमाम रात

न वे ऐसे क़ौमी ग़मख़्वार हैं, जो पार्टियोंमें डिनर खाते हुए भी क़ौमी ग़ममें घुल-घुलके हाथी हो जाते हैं। बक़ौल अकबर इलाहाबादी—

क़ौमके ग़ममें डिनर खाते हैं हुक्कामके साथ
रंज शाइरको[1] बहुत है, मगर आरामके साथ

'एहसान' न ऐसे इन्क़िलाबी शाइर हैं, जो होटलोंमें अन्धाधुन्ध शराब पीते हुए भी किसान और मज़दूरका पसीना गिरनेके तसव्वुरमें टसुवे बहाते हैं। न वे ग़रीबोंके ऐसे शाइर हैं, जो भीख माँगती हुई भिकारनके चिथड़ोंमें झाँकते हुए इन्क़िलाब लानेकी धुनमें आवारा घूमते रहते हैं। जैसा कि श्री श्रवण-कुमार 'सोज़'ने अपनी इस नज़्ममें उल्लेख किया है—

शाइरे-मज़दूर

१. हमने लीडरके बजाय यहाँ शाइर लिख देनेकी धृष्टता की है, लेकिन हमारा ख़याल है कि अकबर ज़िन्दा होते तो आजके शाइरोंकी हालत देखकर वे ख़ुद भी ऐसा ही करते।

भिकारन—

"एक रोटी एक पैसा मेरे बच्चेके लिए"

शाइर—

"उफ़ यह रँगीं शाम, यह तेरी सदाए-दिल खराश[१]
कर दिया ग़ारत मेरे रूमानका सारा तिलस्म[२]
आ रहे थे कुछ हसीं[३] मज़मून मेरे दहनमें[४]
पायए-तकमीलको[५] पहुँची न थी मेरी ग़ज़ल
उफ़ ख़ुदा ग़ारत करे आई भी तो किस वक़्तपर"

शाइरका दोस्त—

"किसलिए ऐ शाइरे-मज़दूर ! इतनी बरहमी[६]
है तुम्हारी बीसियों नज़्मोंकी ज़ीनत[७] इनका ज़िक्र
उनका हाले-ज़ार[८], उनकी बेबसी बेचारगी[९]
मुज़तरब[१०], मायूस[११], बेकल, मुज़महल[१२]-सी ज़िन्दगी
मुज़महल[१३] बेनूर[१४] चहरे शमए-कुश्ताकी[१५] तरह
उनकी ग़म आसूदगी[१६], मजबूरियाँ, महरूमियाँ
हर क़दमपर ठोकरें खाता शराफ़तका ग़रूर

१. दिलको चीरनेवाली आवाज़, २. इश्क़ लड़ानेका तिलिस्म, ३. सुन्दर, ४. मस्तकमें, मुँहमें, ५. पूर्णताको, ६. नाराज़ी, ७. रौनक़, शोभा, ८. बुरा हाल, ९. असमर्थता, लाचारी, १०. बेचैन, ११. निराश, १२. थकी-सी, उदास-सी, १३. उतरते हुए, उदास, १४. बेचमक, १५. बुझे दीपककी, १६. दुःखोंसे घिरी ।

चीथड़ोंमें नीम उरियाँ[१] नौ जवानीका वक़ार[२]
कूचा-ओ-बाज़ारमें बिकता हुआ, लुटता हुआ
ख़स्ता-ओ-बोसीदा उनके झोंपड़े तारीको-तंग[३]
इनकी गंदी बस्तियोंमें जा-बजा फैले हुए
गंदगीके ढेर जिनपर उड़ रही हैं मक्खियाँ
है तुम्हारे शेरो-नग़मेंका इन्हींपर इनहिसार[४]
इनकी क़ीमत एक पैसा, एक रोटी भी नहीं !
....
माई लो तुम एक आना अपने बच्चेके लिए"

शाइर—

"तुम भी क्या अहमक़ हो, सिखलाते हो इनको माँगना
भूकसे मरते हैं गर नादार[५], इन्हें मरने भी दो
इनके फैले हाथ ख़ाली हैं तो ख़ाली ही रहें
इनकी बहबूदी[६] इसीमें है कि इनको कुछ न दो
ता कि इनकी मुट्ठियाँ भिंच जाये फ़र्त-ग़ैज़से[७]
ताकि यह मजबूर होकर छीन लेना सीख जायँ
फेंक दें कशकौल[८], शमशीरो-सनाँको[९] थाम लें
ज़ुल्मते - इफ़लाससे[१०] उभरेगा महरे - इन्क़लाब[११]
ख़ुद-ब-ख़ुद हालत सुधर जायेगी हर नादारकी
इन्क़लाबे - चीनके बारेमें कुछ मालूम है ?"

---

१. अर्द्धनग्न, २. प्रतिष्ठा, ३. अँधेरे और संकीर्ण, ४. दार-मदार, आधार, ५. दरिद्र, मोहताज, ६. भलाई, उन्नति, ७. क्रोधसे, ग़ज़बसे, ८. भिक्षा-पात्र, ९. तलवार-तीर, १०. आर्थिक संकटोंकी अधिकतासे, ११. क्रान्ति-सूर्य ।

दोस्त—

"यह तो सब सच है, मगर वह जज़्बए-इन्सानियत[१]
अपने नग़्मोंकी[२] जिसे कहते हो तुम रूहे-रवाँ[३]
क्या इसे क़ुर्बान कर दोगे बराए-इन्क़लाब[४]
आदमी इकबार छूकर सरहदे - हैवानियत[५]
लौट आयेगा कभी इन्सानियतकी राहपर ?"

शाइर—

"दोस्त! छोड़ो भी कहाँ तक बहसकी बे-कैफ़ियाँ[६]
उठ रहे हैं कैफ़ परवर नग़्मे[७] - रेस्तोरानसे[८]
यह हवा महकी हुई जैसे नशेमें चूर हो
आ रहा है मैकदेसे[९] जैसे कोई बादाख़्वार[१०]
पर फ़िज़ामें[११] सरसराती नीली-पीली साड़ियाँ
हाय यह मल्बूस[१२] रंगीं, हाय यह रंगीन जिस्म
महकी-महकी-सी फ़िज़ामें बहके-बहके क़हक़हे"

[रेस्तोराँमें]

"हाँ वोह देखो सुर्ख़ साड़ीमें कोई लिपटी हुई
काकुलोंके[१३] नाग लहराये हुए हैं दोशपर[१४]
मुसकराये जा रही है किस अदा-ए-नाज़से
लब नहीं टुकड़े हैं यह याक़ूतके[१५] तरशे हुए

१. मानवताके भाव, २. गीतोंकी, ३. प्राण-संचारक, ४. क्रान्तिके लिए, ५. पशुताकी सीमा, ६. आनन्दमें बाधक बातें, ७. मधुर संगीत, ८. जलपान-गृहसे, ९. मदिरालयसे, १०. मद्यप, ११. हवामें, १२. परिधान, लिबास, १३. ज़ुल्फ़ोंके, बालोंकी लटोंके, १४. कन्धेपर, १५. लालके ।

उफ़ ! यह आँखें हैं कि दो छलके हुए जामे-शराब[1]
सीना, जैसे माइले-परवाज़ हों दो क़ुमरियाँ[2]
अब कोई दीवाना हो जाये तो क्या उसका क़ुसूर ?"

[बॉयसे]

"बॉय देखो चार पग शम्पेन और दो आमलेट"

[दोस्तसे]

"क़िबला माचिस ले के यह सिगरेट ज़रा सुलगाइए
सच तो यह है लाज़िमो-मलज़ूम[3] हैं शेरो-शराब
हाय यह मद्धम धुनें सरगोशियाँ कलकलका शोर
खन-खनाहट, सर-सराहट, जग-मगाहट क़हक़हे
हर नई धुनपर बहककर फ़र्शपर बूटोंसे ताल
हाय क्या माहौल है, क्या ज़िन्दगी क्या सरखुशी
वह इधर इक नौजवाँके साथ महवे-रक़्स[4] है
मोतियों-से दाँत चमकाती हुई एक साहिरा[5]
हाय उनके लब मिले दोनोंने आँखें मोड़ लीं
और हसीनाने ज़बाँ होंटोंपै अपने फेर ली
मुसकराकर नौजवाँने उसके वह चुटकी भरी
किस अदासे मुसकराई है वह क़ाफ़िर साहिरा
मैं चला लिल्लाह कोई आये मुझको थाम ले
इन धुनोंपर काश आ जाता मुझे भी नाचना"

---

१. मदिराके प्याले, २. क़ुमरी चिड़िया उड़नेको उद्यत, ३. शेर-शराबका अविनाभावी सम्बन्ध है; ४. नृत्यमें लीन, ५. जादूगरनी, सुन्दरी ।

दोस्त—

"आ चली है रात सरपर आओ अब बाहर चलें"

शाइर—

"काश यह लमहा ठहर जाये हमेशाके लिए"

[रेस्तोराँसे बाहर]

भिकारिन—

"एक पैसा भाई, मेरी माँ बहुत बीमार है"

शाइर—

"कौन भाई है यहाँ ? कुछ होशकी बातें करो
उफ़ ! यह तुम हो, ख़ैर कर देते हैं, हम तुमको मुआफ़
"माँ बहुत बीमार है" क्या ख़ूब है यह फिर कहो
हाय यह बाली उमरिया, यह जवानी, यह शबाब,
हर नफ़सकी आमदो-शुद[1] पर यह सीनेका उभार
जैसे मौजोंपर हिलोरें खा रही हों किश्तियाँ
हाय यह गोलाइयाँ, कैसे, क़यामत ख़ेज़ ख़म[2]
हाय यह गदराई रानें, हाय यह पतली कमर
और यह मख़मूर[3] आँखें जागतेमें ऊँघतीं
जुल्फ़ जैसे रात हो बरसातकी भीगी हुई
क्यों भटक जाये न कोई राहरव[4] इस मोड़पर"

[दोस्तसे]

"आओ कुछ इससे बनाएँ रातभरका सिलसिला
गर यह ज़ालिम मान जाये लुत्फ़ ही आजाएगा"

---

१. हर साँसके आने-जानेपर, २. शरीरके मोड़, ३. नशीली ४. राहगीर।

दोस्त—

"मैं ज़रा सिगरेट जला लूँ सामने दूकानसे"

भिकारिन—

"ख़ून ही पी जाऊँगी कमबख़्त क्या समझे हो तुम"
और फिर गूँजी फ़ज़ामें[1] एक चाँटेकी सदा[2]
शाइरे-मज़दूर अपना गाल सहलाने लगे
सामने सिगरेट लिए हैरान था शाइरका दोस्त
सोचता था वह कि शायद "इन्क़िलाब आ ही गया"

'एहसान' ऐसे मज़दूर बापके बेटे हैं, जो घरके बर्तन बेच देने पर भी एहसानकी पढ़ाई चौथे दर्जेसे आगे जारी न रख सके। दरिद्रताके

परिचय

अभिशाप स्वरूप स्वयं एहसानको किशोरावस्थामें ही चपरासगीरी करनी पड़ी। चेचककी पीपसे कपड़े चिपक जाने पर भी नौकरीपर जाना पड़ता था। ईंट-गारा ढोनेसे लेकर कुलीगीरी, दरबानी, बाग़बानी सभी कुछ महनत-मज़दूरीके कार्य्य एहसानने किये। ख़ुद एहसान अपना जीवन-परिचय देते हुए फ़र्माते हैं—

"मेरा नाम एहसानुलहक़ है और वालिदका नाम क़ाज़ी दानिशअली। सन् पैदाइश १९१४ ई० है। आबाई वतन (पूर्वजोंकी जन्मभूमि) क़सबा बाग़वत (उत्तरप्रदेशमें ज़िला मेरठ) है। वालिद साहब वहाँसे सकूनत तर्क करके काँधले चले आये थे। काँधला (ज़िला मुज़फ़्फ़रनगर उत्तर-प्रदेश) मेरे नाना अबूअली शाह साहबका वतन है, जो एक मामूली सिपाही थे।

मेरे वालिद क़ाज़ी दानिशअली अच्छी ख़ासी जायदादके मालिक थे, लेकिन कम इल्मी और शराफ़तने तमाम जायदाद सरमायादार उक़रबा

१. हवामें, २. आवाज़।

(धनिकों) के क़ब्जेमें पहुँचा दी और जब मैंने होश सम्भाला तो मेरे वालिद साहब एक ठेकेदारके पास मज़दूरोंके जमादार थे। और जब ठेका खत्म हो जाता तो ख़ुद भी बेलचा और फावड़ेसे मज़दूरी करनेमें दरेग़ार (परहेज़) न करते थे।

"स्कूलमें मुझे तीसरी जमाअत तक तो कोई एहसास (ज्ञान-अनुभव) न हुआ, लेकिन जब तीसरी जमाअत पास कर चुका तो मुझे अच्छी तरह याद है कि वालिदने वालिदासे कहा कि एहसानने तीसरी जमाअत तो पास कर ली है, अब चौथी जमाअतकी किताबोंके लिए रक़म कहाँसे आये ? वालिदा यह सुनकर कुछ देर तो ख़ामोश रहीं और फिर जिस क़दर ताँबेके बर्तन थे, लाकर ढेर लगा दिया और कहा कि 'हम मिट्टीके बर्तनोंमें भी खाना खा सकते हैं, लेकिन एहसानको यह उम्र कहाँ नसीब होगी ?'

"यह देखकर मुझे पहली दफ़ा वालिदाकी मुहब्बत और अपनी मुफ़लिसी (दरिद्रता) का एहसास (ज्ञान) हुआ। मेरे ग़रीब वालिद चौथी जमाअतके बाद मुझे तालीम न दिला सके और मैं भी अपने वालिद साहबके हमराह मज़दूरी पर जाने लगा।

"मेरे वालिद साहबको अव्वलसे किताबें सुननेका शौक़ है। चुनांचे मैं तमाम दिन मज़दूरी करता और शामको अपने वालिद साहब और उनके चन्द दोस्तोंको, जो शामको बैठकमें आ जाया करते थे, किताबें पढ़कर सुनाता। 'फ़सानए-अजाइब' 'आराइशे-महफ़िल' 'क़िस्सए-मुमताज़' 'अलिफ़ लैला' 'फ़सानए-आजाद' और मंज़ूम कुतुब (कविता-पुस्तकों) में-से 'मसनवी मीरहसन' 'नल-ओ-दमन', 'दीवाने-मीरतक़ी' 'दीवाने-नज़ीर अकबराबादी' और 'कलामे-अनीस'का मुताअला (अध्ययन) उन्हीं दिनोंका है और यह तमाम किताबें क़िबला क़ाज़ी मुहम्मद ज़की साहबके कुतुबख़ानेसे आती थीं, जो मेरे उस्ताद थे।

"मुझे मज़दूरीकी कमयाबी (कमी) ने म्यूनिस्पिल्टीकी चपरास

बाँधनेपर मजबूर कर दिया, लेकिन अफ़सरानके बर्ताव और अज़ीज़ोंकी सफ़्फ़ाकी (अपनोंके अत्याचारों) ने वतन तर्क कराके लाहौर फेंका। उस वक़्त मेरे वालिद ज़ईफ़ी (बुढ़ापे) के बाइस (कारण) मज़दूरीके क़ाबिल न रहे थे।

"लाहौरमें आकर भी मुझे उसी आबाई काम, यानी मेमारोंके पास ईंटें उठानेकी मज़दूरीके सिवा कोई ज़रियए-मआश (आजीविकाका साधन) न मिला। दयालसिंह कॉलेजकी लायब्रेरी, पंजाब यूनिवर्सिटीके दफ़्तर और लैबोरटरीके अलावा और बहुत-सी इमारतोंपर मज़दूरी करनेका मुझे फ़ख़्र (गर्व) हासिल है। किताबें पढ़नेका मुझे अव्वलसे ऐसा चस्का था कि मज़दूर दोपहरको आराम किया करते, मैं किताब पढ़नेमें मसरूफ़ (लीन) रहता। कभी-कभी इस आलममें देखकर ठेकेदार कहा करता—'क्यों बे एहसान, मुंशी बनेगा?' और मैं यह सुनकर ख़ामोश हो जाता।

"मज़दूरीमें तरक़्क़ी करता हुआ रफ़्ता-रफ़्ता मैमारीतक पहुँच गया, लेकिन उस वक़्त पस्ती और बुलन्दीमें अच्छा-ख़ासा इम्तियाज़ (अच्छे-बुरेका ज्ञान) हो गया था। चुनांचे इल्मको मक़सूदे-ज़िन्दगी (जीवन-उद्देश्य) क़रार देकर मेमारी तो तर्क की और लाहौरकी मशहूर सैरगाह शिमला-देहलीपर चौकीदारोंमें नौकर हो गया। वहाँ शामके ७ बजेसे मैं ड्यूटीपर जाता और सुबह सात बजे तमाम रात पासबानी (पहरेदारी) करके अपने मकानपर लौट आता।

"मकानमें कई जैपुरके देहातके मज़दूर रहते थे और मेरे हिस्सेमें उस मकानका एक ग़ुसलख़ाना था, जिसका किराया मैं छः आना महीना अदा करता था। जगहकी क़िल्लतके बाइस उसमें चारपाईकी गुंजाइश न थी, इसलिए एक बोरिया ही मेरा बिस्तर था। उन दिनोंसे आज तक मैं ज़मीनपर ही सोता हूँ।

"चौकीदारीकी रातोंका सन्नाटा, मुफ़्तकी सरकारी रोशनी, और मसरूफ़ तनहाई (व्यस्त एकान्त) मुझे अभीतक नहीं भूलती। उन दिनों

चार सौ, साढ़े चार सौ सुफ़हातका योमिया मुतालआ (पृष्ठोंका दैनिक अध्ययन) मेरी ज़िन्दगीका मामूल (नियम) था।

"चौकीदारीकी जगह तख़फ़ीफ़ (कमी) में आ जानेके बाद मुझे रेलवे-दफ़्तरमें चपरासीकी जगह मिली। उस वक़्त चन्द लिखे-पढ़े आदमियों-से मेरे तआल्लुक़ात हो गये थे। शेरो-शाइरीका शौक़ यूँ तो मुझमें अव्वल से क़िबला क़ाज़ी मुहम्मदज़की साहबके फ़ैज़े-सुहबत (सत्संगकी कृपा) से बेदार (अंकुरित) था और जब कोई अच्छा शेर सुनता तो बेताब हो जाता। मिसरे तो अक्सर और कभी-कभी पूरा शेर और बाज़ औक़ात दो-दो तीन-तीन शेर बिला तकल्लुफ़ हो जाया करते थे। लेकिन अपने शाइर हो जानेका यक़ीन नहीं था, इसलिए वे शेर न तो महफ़ूज़ (सुरक्षित) हैं और न यह अन्दाज़ा कि शेर कबसे कहता हूँ। घर और दोस्तोंमें भी कोई ऐसा शख़्स न था, जिसे यह ख़याल होता। लाहौरके दौराने-तालीममें भी मेरे दोस्त तौक़ीर ताहिर गंगोहीके सिवा कोई ऐसा नहीं, जिसने मेरी हौसला अफ़ज़ाई की हो और वही शख़्स मुझे पहली बार खींच-तानकर लाहौरके एस. पी. एस.के हालके मुशाअरेमें लेकर गया और मुझसे मेरी एक ग़ज़ल पढ़वाकर पब्लिकसे रूशनास कराया और उसी दिनसे मुझे यह भी एहसास होने लगा कि मैं शाइर हो सकता हूँ और उसी बिना (आधार) पर मुतालए (अध्ययन) में इस क़दर मुनहमिक (दत्त-चित्त) हो गया कि आजतक चौबीस घंटेमें-से सिर्फ़ चार घंटे आराम करता हूं। अगर्चे मश्क़ (अभ्यास) के तौरपर अशआर तो न जाने कितने कहे होंगे, लेकिन जो कहता था, उनमें तौक़ीर ताहिर साहब जो अच्छा शेर समझते थे, वह रख लेते थे और जो बेमाइने होता, वह ज़ाया (नष्ट) कर देते थे।

"तफ़रीहपसन्द दोस्तोंने मुझे चपराससे दस्त बरदार (मुक्त) करके बाग़बानीपर मजबूर किया और मैं गवर्नमेण्ट हाउस लाहौरमें एक बाग़बानके साथ काम करने लगा, लेकिन ओहदेदारानकी निजी ख़िदमात और

जमादारोंकी बेजा चापलूसीकी ख़्वाहिशने बहुत जल्द यह काम भी छुड़वा दिया। फिर मैं बीस रुपया माहानापर गैलानी बुकडिपोमें एक अर्सेतक मुलाज़मत करता रहा। लेकिन फिर तनख़्वाहमें ताख़ीर (देरी) शुरू हुई और होते-होते यहाँ तक नौबत पहुँची कि जब चार माह तक तनख़्वाह से महरूम (वंचित) रहा तो वहाँसे भी दामनकश हुआ और मकतबा दानिशके नामसे अपना ज़ाती कुतुबख़ाना (प्रकाशन कार्यालय) क़ायम किया। अब उसीकी तामीर (निर्माण) में अपनी तमामतर क़ूव्वतोंसे मुनहमिक (लीन) हूँ[1]।"

एहसानके पिता पढ़े-लिखे न थे। एहसान जहाँ जन्मे-पले, बड़े हुए, वहाँका वातावरण भी शाइरीके अनुकूल न था। महनत-मजदूरी करके

ग़ैर शाइराना माहौल

किसी तरह पेटका गढ़ा भरने और फटे-पुराने चीथड़ोंसे जिस्म ढँकनेकी चिन्तामें दिन-रात व्यतीत होते थे। चौथी श्रेणीसे आगे जिस एहसानकी शिक्षाका प्रबन्ध न हो सका, वही बालक एहसान जवाँ होकर ख्यातिप्राप्त शाइर भी हो सकेगा और बग़ैर किसी साधन और अवलम्बके अपने पुरुपार्थसे बज़्मे-अदबमें कुर्सी खींचकर नामवर शाइरोंके साथ बाइज़्ज़त बैठ सकेगा। यह किसीको ख़्वाबो-ख़याल भी न था, परन्तु भवितव्यको कौन जान सकता है ?

एहसानके पिताको किताबें सुननेका बेहद शौक़ था। वे और उनके इष्ट-मित्र अवकाशके क्षणोंमें बालक एहसानसे किताबें सुना करते थे। इससे एहसानको पठन-पाठनका चस्का लग गया। उनकी ज्ञान-पिपासा उत्तरोत्तर बढ़ती गई और साहित्यिक ज्ञानमें दिन-दूनी, रात-चौगुनी वृद्धि होती गई। सुनाई जानेवाली किताबोंमें मज़हबी किताबें, शाइरोंके दीवान, क़िस्से-कहानियाँ और ऐतिहासिक आदि विविध विषयोंकी किताबें होती थीं। उनमें 'नज़ीर' अकबराबादीके कलाम और अनीस-दबीरके मर्सियोंने

१. निगार जनवरी-फ़रवरी १९४१ पृ० ३६–३८।

किशोर एहसानको काफ़ी प्रभावित किया और उनका भी इस तरहकी शाइरीकी तरफ़ आकर्षण बढ़ा, किन्तु साधनाभावके कारण शाइराना-विकास प्रस्फुटित न हो सका।

जवां हुए तो डाक्टर 'इक़बाल'की इस्लामी और 'जोश'की इन्क़िलाबी शाइरीकी सर्वत्र चर्चा सुनी। एहसान भी उनकी शाइरीसे बहुत मुतास्सिर हुए। संयोगकी बात रोज़गारकी तलाशमें अपनी जन्म-भूमि कान्धला छोड़-कर एहसानको लाहौर जाना पड़ा। वहीं ईट-गारा ढोते हुए, सड़कें कूटते हुए, रहट चलाते हुए, चौकीदारी करते हुए एक रोज़ उनकी उर्दूके प्रसिद्ध प्रसारक ख्यातिप्राप्त सम्पादक और शाइर अल्लामा ताजवर नजीबाबादीसे भेंट हो गई। परिणाम-स्वरूप उनकी शाइरीका स्रोत फूट निकला। साधनाभावके कारण एहसान स्कूली-शिक्षा न पा सके, किन्तु उनकी विद्या-ध्ययनकी रुचि अबाधगतिसे बढ़ती गई। उनके साथी मज़दूर दोपहरकी छुट्टीमें खाना खाकर तनिक झपकी ले लेते, परन्तु एहसान भरी दुपहरियामे झोलेसे किताब निकालकर पढ़ने लगते। रातमें साथी ग़प-शपमें दिल बहलाते या थकानके कारण सो जाते, मगर एहसान धुआँ उगलती हुई मिट्टीके तेलकी ढिबरी जलाये पढ़ते रहते। नींद उन्हें लुढ़का देती, तभी किताब छूटती।

एहसानके इस अध्ययन, लगन और श्रमका परिणाम यह हुआ कि वे बहुत शीघ्र आस्माने-शाइरीपर चमक उठे। उनका शाइराना-तेज जो साधनाभावके कोहरेसे छिपा हुआ था, ताजवर नजीबाबादी-जैसे योग्य उस्तादके प्रयाससे चमक उठा। ताजवरने उनकी भाषोको सँवारा। उप-माओं-उदाहरणोंके करिश्मे बताये। भावोंमें माधुर्य्य भरा और वह सब कुछ दिया जो स्नेहशील गुरु अपने कृपापात्र होनहार शिष्यको दे सकता है। एहसानने कल्पना-आकाशमें उड़नेके बजाय स्वानुभवके सीमित क्षेत्रमें कुलाचें भरना अधिक उपयुक्त समझा। जब वे किसी ग़रीबको एड़ियाँ रगड़-रगड़कर मरते देखते-सुनते हैं तो वे व्यथित हो उठते हैं और उसकी मृत्युका रोमांचकारी दृश्य नज़्म करते हुए ख़ुदासे तंज़न पूछ बैठते हैं—

क्या यही इंसाफ़े-यज़दानी[1] है ? ऐ परवर्दगार !
क्या तेरे बन्दे यूँ ही रहते हैं आफ़तके शिकार ?
यह तेरी ग़ैरतमें जज़्बे - बेनियाज़ी[2] हाय - हाय !
क्या इसीका नाम है, मुफ़लिस-नवाज़ी[3] हाय-हाय !

एहसान जब मजदूरकी हालत कुत्तेसे बदतर देखते हैं तो खीज उठते हैं—

क्या यह इक धब्बा नहीं ? हिंदोस्ताँकी शानपर
यह मुसीबत और ख़ुदाके लाडले इंसानपर !!

एहसान यूँ तो ग़ज़ल, रुबाई, क़ते, नज़्म सभी कुछ कहते हैं, परन्तु वे अपनी स्वानुभवकी नज़्मोंके कारण विशेष प्रसिद्ध हुए। उनका अधिकांश कलाम शोषितवर्गकी दयनीय स्थितिसे ओत-प्रोत है। वे अपने आस-पासकी देखी-सुनी घटनाओंको बहुत चित्ताकर्षक ढंगसे नज़्म करते हैं। सरलभाषा, नई-नई उपमाएँ, अछूते भाव, शब्दोंका रख-रखाव एक-से-एक नवीन नज़्मोंके शीर्षक, एहसानका अपना विशेष आर्ट है।

शाइरी किस लिए

एहसान न दिल बहलावके लिए शाइरी करते हैं, न शाइरीके लिए शाइरी करते हैं। बल्कि जब उनका अन्तरंग शेर कहनेको बेचैन हो उठता है, तभी वे शेर कहते हैं और अपनी हृदयगत मनोवेदनाको काग़ज़पर उँडेल देते हैं। एहसान चूँकि शोपितवर्गमें परवान चढ़े हैं, अतः उनकी शाइरीका रुझान उधर होना स्वाभाविक था। दीन-दुःखी अत्याचार-पीड़ितोंकी दयनीय स्थिति जब वे अपनी आँखोंसे देखते हैं तो उनका मन विह्वल हो उठता है और उस घटनाको नज़्म करनेके लिए एहसानको कचोटने लगता है। अतः एहसान जो कुछ देखते-सुनते हैं, उसे हृदयस्पर्शी शब्दोंका लिबास पहना देते हैं।

१. ईश्वरीय न्याय, २. उपेक्षाका भाव, ३. दीनवत्सलता।

मकानकी छतोंके जाले, घड़ोंपर काई, उलझी हुई दाढ़ी, चिकटे हुए बाल, बोसीदा लिबास, बिसूरते बच्चे, कलपती विधवाएँ, सूखे हुए सीने, मुर्झाये हुए चेहरे, धँसी हुई आँखें तो एह्सानसे पहले भी शाइरोंने देखी थीं और अब भी देखते हैं। परन्तु उनके और एह्सानके देखनेमें पृथ्वी-आकाश का अन्तर है। एह्सानको शोषित-वर्गकी हालत देखकर आप-बीती घटनाएँ स्मरण हो आती हैं। वे अंगारोंपर लोटने लगते हैं और जब तक अपनी मनोवेदना नज़्म नहीं कर लेते, चैन नहीं पाते। हज़रत 'बक़ा' नक़वी लिखते हैं—

"यूँ तो जनाब एह्सान दानिश चौबीस घण्टोंमें मुश्किलसे २-३ घण्टे सोते होंगे। लेकिन अमूमन यह देखा गया है कि उन्हें नज़्म मुकम्मिल कर लेनेके बाद फौरन नींद आ जाती है। एक दिन मैंने दरियाफ़्त किया कि आपको शेर कहकर नींद क्यों आ जाती है, तो फ़र्माया कि—'और शाइरोंके मुताल्लिक़ तो मुझे मालूम नहीं, लेकिन इतना जानता हूँ कि जब जज़्बए-शेरी तारी (शेर कहनेका भाव व्याप्त) होता है तो रूहमें शिद्दत और इल्तिहाब (हृदयमें तीव्रता-तेज़ी और ज्वाला-सी धधक) पाता हूँ और जब शेर सुपुर्दे-क़लम कर लेता हूँ तो महसूस होता है कि अल्फ़ाज़ (शब्दों) में मेरी रूह भी दबती चली आ रही है और जब कोई नज़्म पाए-तकमील (पूर्णता) को पहुँच जाती है तो रूहको सुबक और आराम-तलब (मृदुल और विश्राम करनेका अभिलाषी) पाता हूँ[1]।"

एह्सानको सम्भवतः १९३४ ई० में देखने और सुननेका संयोग प्राप्त हुआ। वे दिल्लीमें विक्टोरिया पार्क स्थित एक क्लबके तत्त्वावधानमें हुए मुशाअ़रेमें तशरीफ़ लाये थे।

रूप और वेष

चूड़ीदार पायजामा और मामूली-सी शेरवानी पहने, बालोंदार टोपी लगाये, २०-२१ सालका साँवला, छरेरा नौजवान जब माइकके सामने आया तो लोग आश्चर्य-चकितसे हुए कि जिस मुशाअ़रेमें जिगर

१. जादए-नौ पृ० १०।

मुरादाबादी, साग़र निज़ामी, सीमाब अकबराबादी, ताजवर नजीबाबादी-जैसे अनेक अखाड़िये उस्ताद रौनक़ अफ़रोज़ हैं। जिस मुशाअ़रेमें अच्छे-अच्छे तरन्नुमी और मुशाअ़रेबाज़ शाइर उखड़ गये हैं। 'वहाँ ऐसे नौसिखुएको किस बिरतेपर मंचपर बुलाया गया है। जिसकी शक्लो-शबाहत भी शाइ-राना मालूम नहीं होती। लेकिन जब उस साँवले नौजवाँने अपने मख़सूस तरन्नुमसे बुलन्द आवाज़में 'मज़दूरकी मौत' शीर्षक नज़्म सुनानी शुरू की तो मुशाअ़रेमें एक सकतेका-सा आलम छा गया। अभी तक जो मुशाअ़रा हुस्नो-इश्क़के नग़मोंसे गूँज रहा था, वह इस व्यथापूर्ण नज़्मसे कराह उठा। लोगोंके मुँहसे वाह-वाहके बजाय, हाय, उफ़, कितना दर्दनाक सीन है, जैसे शोकोच्छ्वास निकलने लगे। एहसान नज़्म क्या पढ़ रहे थे, श्रोताओंके कलेजोंको छलनी किये दे रहे थे। इतनी लम्बी नज़्म सुननेके बाद भी लोगोंकी फ़र्माइश थी कि एहसान और दूसरी नज़्म भी सुनायें।'

एहसान भारत और पाकिस्तानके अच्छे मुशाअ़रोंमें निमन्त्रित किये जाते हैं। उनका अपना प्रकाशन व्यवसाय है। अच्छी-ख़ासी आमदनी है।

साधारण जीवन-स्तर

दरिद्रताके अभिशापसे छुटकारा पा गये हैं। उनका कहना है कि मेरी आँखें बोरियेपर खुलीं, मगर दम क़ालीनपर निकलेगा' उनके हितैषी और इष्टमित्रोंकी आकांक्षा रहती है कि एहसान अब अपने मर्तबेके अनुरूप अच्छा खायें-पियें। अच्छा लिबास पहनें, रहन-सहनका स्तर भी बढ़ायें, परन्तु एहसान चाहते हुए भी अपने जीवन-स्तरको लोगोंकी आशाके अनुरूप नहीं बना पाते, वे अपने पुराने दिनोंको नहीं भूल पाते।

एहसानने एक बार अल्लामा ताजवर नजीबाबादीको चायपर निमंत्रित किया। जब उनके सामने बेढंगे, बेमेल-से चायके बर्तन आये तो तेवर चढ़ गये, लेकिन एहसान मुसकराते रहे। इससे ताजवर और क्रुद्ध हो गये और आवेशपूर्ण स्वरमें बोले—"तू अब भी अपनेको शाइरे-मज़दूर ही समझता है। तुझे इस बातका मुतलक़ एहसास (कुछ भी ज्ञान) नहीं कि दुनियाए-अदब (साहित्यिक संसार) में तेरा क्या मुक़ाम है? ऐसी भी

क्या कोरज़ौक़ी (कुरुचि) कि रोज़मर्राके इस्तेमालकी चीज़ें भी तेरे घरमें नहीं। यह पिरचें, यह प्यालियाँ क्या इस क़ाबिल थीं कि उनमें किसी मेहमानको चाय पिलाई जाय ? भोंडी और भद्दी प्यालियाँ, टेढ़ी-तिर्च्छी पिरचें (प्लेट) बेडौल चीनक ये हैं तेरे ज़ौक़की कायनात (सुरुचिकी द्योतक) ? शर्म कर, मैं तुझे उजले कपड़ोंमें देखना चाहता हूँ और इस ठाट-के साथ कि तेरे घरमें हर चीज़ सलीक़ेकी और हर शै क़रीनेकी हो। जा अभी नया सैट ला"।[1]

एहसानके खान-पानका स्तर मुहम्मद वारिस साहब कामिलकी ज़बाने-मुबारकसे सुनिए—'एहसान साहब अगर किसीकी दावत करते हैं तो मेहमानकी शामत आ जाती है। उसके लिए दस्तरख़्वानपर इस क़िस्मके खाने चुने जाते हैं कि एक हफ़्तेका भी भूका हो तो उसकी भूक उड़ जाती है। सन् १९४४ में एक दफ़ा मुझे इफ़्तार (रोज़ा खोलने) की दावत दी। मैं मंज़िलें मारता हुआ उनके मकानपर पहुँचा। इफ़्तारीका नक़्क़ारा पिटा तो मिट्टीके एक लोटेमें ग़ैर मबरूफ़ (बिना बर्फ़का) पानी और एक मिट्टीका सकोरा लिये हुए एहसान साहब बरामद हुए और बोले—'लीजिए मौलाना ! रोज़ा इफ़्तार कीजिए।' मेरे तन-बदनमें आग लग गई। मैंने सब्र किया और दिलको यह दिलासा दी कि शायद नमाज़े-मग़रिबके बाद पुरतकल्लुफ़ ख़्वान बिछे। लेकिन हुआ यह कि चगेरमें दो बगड़की रोटियाँ इतनी सख़्त और ऐंठी हुई कि चबाते ही मुँहसे दान्त बाहर आजाएँ। और चनेके सागमें इतनी मिर्चें कि अल्लामानुलहफ़ीज़ (ख़ुदा ही ख़ैर करे) खाना तो मैंने खा लिया, लेकिन साथ ही दिलमें यह अहद भी किया कि एहसान साहबकी दावत कभी क़बूल नहीं करूँगा। चुनांचे आज (१९५६ ई०) तक अपने अहदपर क़ायम हूँ।"[2]

एहसान इतने सादगीपसन्द हैं कि फ़र्श या तख़्तपर सोते हैं। केवल दिनमें एक बार खाना खाते हैं और वह भी बहुत साधारण ढंगका। उन्हें

१. नक़ूश शख़्सियात नं० २ पृ० १४४१। २. नक़ूश शख़्सियात नं० २ पृ० १४७५।

कभी क़र्ज़ लेनेकी ज़रूरत नहीं पड़ी। नींदपर कंट्रोल है। जब जी चाहे सो लेते हैं। कुर्सीपर बैठे-बैठे, बातें करते-करते सो जाते हैं और जब शेर कहते हैं तो रात भर भी जाग सकते हैं।

एहसानने अपनी शक्लो-शबाहतके बारेमें एक प्रकाशकको लिखा था—"मेरी तसवीरसे मेरा अन्दाज़ा लगाना बहुत मुश्किल है। दसियों-बीसियों तसवीरें बनवाईं मगर सही तसवीर अभी तक नहीं बनी। जो बनती है मुझसे अच्छी बनती है।

तकल्लुफ़बर तरफ़ मुझसे मेरी तसवीर अच्छी है

मालूम होना चाहिए कि मुझे कारकुनाने क़ज़ा-ओ-क़द्रने ठेके पर बनाया है और इस क़दर बदसूरत वाक़अ़ हुआ हूँ कि अक्सर लोग मुझे अछूत समझते हैं।"

एहसानके पास अपने कलामकी कोई फ़ाइल नहीं। अपनी नज़्में गाव तकियेके खोलमें डालते रहते हैं)। उनके कलामका संकलन 'दर्दे-ज़िन्दगी' जब छपने लगा तो वे सफ़रमें थे। वहींसे प्रकाशकको पत्रोत्तर देते हुए १९ मई १९३४ ई० को लिखा—"मेरी तमाम नज़्में और ग़ज़लें मेरे पास नहीं, और न यह याद है कि कहाँ-कहाँ छपी हैं? क्योंकि कोई बाक़ायदा ब्याज़ (डायरी) कभी बनाई ही नहीं। वही एक गावतकिया है, जिसमें नज़्मों और ग़ज़लोंके काग़ज़ भरे हुए हैं। घरसे ज़ीशानको आवाज़ देकर मँगा लेना और उसीमें-से पुर्ज़े निकाल-निकालकर कातिबको दिये जाना।"[1]

लापरवाही

एहसान शाइर होनेके अतिरिक्त गद्य-लेखक और साहित्यिक भी हैं। संगीत, चित्रकला, बाग़बानीसे भी रुचि रखते हैं। बिन्नोटके भी अच्छे उस्ताद हैं। कबूतरबाज़ीका भी शौक़ रखते हैं। दाम्पत्य जीवन, यूनानी चिकित्सा, तसव्वुफ़ दार्शनिक, इस्लामी, इन्द्रिय-विज्ञान, साइन्स आदि विषयोंमें भी दिलचस्पी रखते हैं। सौन्दर्य्य-उपासक भी हैं, किन्तु कामुक नहीं।

शाइरीके अतिरिक्त

१. दर्दे-ज़िन्दगी पृ० ३।

एहसानके यहाँ मुलाक़ातियोंका सुबहसे लेकर काफ़ी रात तक ताँता लगा रहता है। उनमें इष्टमित्र, शिष्य, परिचयाभिलाषी, साहित्यिक, शाइर ग़रज़मन्द सभी क़िस्मके लोग होते हैं। वे सभीसे बेतकल्लुफ़ और खन्दाँ पेशानीमें मिलते-जुलते हैं। प्रसंगानुसार शाइरी, अदब, साहित्य, मज़हब आदि सभी विषयोंपर वार्तालाप करते हैं, किन्तु अपना कलाम हरगिज़ नहीं सुनाते। फ़र्माइश करनेवाला या सिफ़ारिश करनेवाला कौन है, कितना बड़ा मर्तबा रखता है, इसकी तनिक भी परवाह नहीं करते और स्पष्ट शब्दोंमें मना कर देते हैं। हाँ स्वयं ही उमंगमें हों तो तरन्नुममें भी पढ़ने लगते हैं।

एहसानके शिष्योंकी संख्या काफ़ी है, वे उनके साथ मित्रवत् व्यवहार करते हैं। शिष्योंके अतिरिक्त जिन अनेक शाइरोंके कलामपर संशोधन किया है और करते रहते हैं, उसको प्रकट नहीं करते।

ख्याति प्राप्त शाइर होते हुए भी अपने काँधले इलाक़ेकी बोलीमें बात करनेके आदी हैं। बात-बातमें गालियाँ देना उनका स्वभाव बन गया है। एहसान सन्तोषी और स्वाभिमानी हैं।

१ जनवरी १९६० ई०]

मज़दूरकी मौत

नीम शब[1] .जुल्फ़े-सियह[2] खोले हुए है दोशपर[3]
हैं सितारोंकी निगाहें .जुल्मते-ख़ामोशपर[4]
कोहसे ता-कोह[5] दुनिया सो रही है बेख़बर
जर्रे-जर्रे[6] पर है गोया मिसमरीज़मका असर
बस रहा है ज़र्रे-ज़र्रेमें अँधेरेका जहाँ
तंग गलियोंमें है ज़ुल्मत[7] कारवाँ-दर-कारवाँ[8]
हर तरफ़ दुनियामें है बेनूर[9] ख़ामोशीका राज
आसमाँ पर है अँधेरेकी जवानीका मज़ाज
हैं शिवाले बन्द नाक़ूसोंके[10] नाले सो गये
थैलियोंमें जाके सिक्कोंके उजाले सो गये
तीरगी[11] फैली हुई है हर दरो-दीवारपर
शबने[12] डाला है अँधेरेका कफ़न गुलज़ारपर[13]
लग चुका है क़ुफ़्ले-ख़ामोशी[14] दरे-गुफ़्तारपर[15]
सनसनाहटका तसल्लुत[16] है भरे संसारपर
ज़मज़मोंकी दिलनवाज़ी[17] हसरतोंमें दफ़्न[18] है
आईनोंकी जल्वासाज़ी हैरतोंमें दफ़्न है

---

१. आधीरात, २. काली ज़ुल्फ़ें, ३. कन्धेपर, ४. सन्नाटेपर, ५. इस सिरेसे उस सिरे तक ६. कण-कणपर, ७. अँधेरा, ८. बढ़ रहा है, ९. प्रकाश-रहित, १०. शंखोंके, ११. अँधियारी, १२. रातने, १३. उद्यानपर, १४. ख़ामोशीका ताला, १५. वार्तालाप रूपी द्वारपर, १६. राज्य, १७. मोहक संगीत, १८. इच्छाओंमें बन्द,

कोई टहनी ख़ौफ़से गर्दन उठा सकती नहीं
ताइरोंकी[1] साँस पत्तोंको हिला सकती नहीं
अब नहीं राहे-समाअतमें[2] सफ़र आवाज़का
ख़ून ठंडा हो चुका है मुतरिबोंके[3] साज़का
तुन्द झोंके तीरा मैदानोंमें हैं सिमटे हुए
सो रहे हैं टहनियोंसे ज़मज़मे चिमटे हुए
सर्द हैं ज़र्रे, नमीके बारसे बोझल है ख़ाक
आ रही है बर्गज़ारोंसे[4] शमीमे-ख़्वाबनाक[5]
नींदके सोते[6] हैं बन्द आँखोंमें लहराये हुए
ख़्वाबमें दिनके तख़ैय्युल[7] हैं नमू[8] पाये हुए

अब सहरसे[9] पेश्तर यह रंग कट सकता नहीं
यक-ब-यक यह सुर्मई आँचल उलट सकता नहीं

अहले-ज़रके रौशनो-पुरकैफ़ ईवानोंसे[10] दूर
शहरकी सरहद पै बाज़ारोंके दामानोंसे दूर
एक टूटा-सा मकाँ है यासो-हिरमा[11] दर किनार
बामो-दर[12] सहमे हुए ख़स्ता मुँडेरें सोगवार[13]
सुर्मई छप्पर धुएँसे, सहन ना-हमवार[14]-सा
जर्रा-जर्रा सर-ब-सर नासाज़-सा[15] बीमार-सा

१. पक्षियोंकी, २. श्रवण-मार्गमें, ३. गायकोंके, ४. पत्तोंसे, ५. स्वप्निल वायु, ६. स्रोत, चश्मे, ७. विचार, ८. विकास, ९. सुबहसे, १० धनिकोंके प्रकाशवान् और आनन्दभवनोंसे, ११. निराशापूर्ण, १२. छत और दरवाज़े, १३. शोकपूर्ण, १४. आबड़खाबड़-सा, १५. अस्वस्थ-सा ।

आग चूल्हेमें नहीं यह शिद्दते-इफ़लास[1] है
घरका घर ओढ़े हुए गोया रदाए-यास[2] है
ताक़[3] हैं काले धुएँ-से और घड़ोंपर काई है
नीम-जाँ ज़र्रातकी[4] डूबी हुई बीनाई[5] है
घरके इक कोनेमें चक्की मुफ़लिसीकी राज़दाँ[6]
छतमें जालोंकी चटें, जालोंके अन्दर मकड़ियाँ
इक तरफ़को ज़ंग-आलूदा[7] तवा रक्खा हुआ
खस्ता दीवटपर सिसकता-सा दिया रक्खा हुआ
रौशनी बेरंग दीवारों पै थर्राती हुई
पपड़ियोंमें झींगुरोंको ख़्वाब[8] दिखलाती हुई
सर्द दिल चूल्हेकी कालिक[9] मुज़महल[10] दीवारपर
टकटकी तारोंकी इस ख़ामोश मातम ज़ार पर[11]

घर है क्या, अक्से-अलम[12] ज़ुल्मतके आईनेमें है
इक सुलगता दाग़ आधी रातके सीनेमें है

मशरिक़ी[13] हिस्सेमें इक मज़दूर बीमारो-ज़ईफ़[14]
नामुरादो[15]-नातवाँ[16] मजबूरो-मअज़ूरो[17]-नहीफ़[18]
हैं अरक़में तरबतर[19] उलझी हुई दाढ़ीके बाल
डूबती नब्ज़ें, उलझती हिचकियाँ, चेहरा निढाल

१. दरिद्रताकी हद, २. निराशाकी चादर, ३. आलेमें, ४. अर्द्ध मृतकसे कणोंकी, ५. दृष्टि, ६. ग़रीबीका भेद जाननेवाली, ७. ज़ंग लगा हुआ, ८. स्वप्न, ९. विना जले चूल्हेकी स्याही, १०. जीर्ण, ११. शोक-पूर्ण घरपर, १२. दु:खोंका नक़्शा, १३. पूर्वी भागमें, १४. वृद्ध, १५. असफल, १६. निर्बल, १७. मजबूर, १८. दूर्बल, पतला, १९. पसीनेसे भीगी हुई।

जाँकनीसे[1] जिस्मपर ठण्डे पसीनेकी नमी
आरज़ूए-दीदमें बेशी[2], बिसारतमें कमी[3]
हल्का-हल्का है वरम पाये-बयाबाँ गर्दपर
सलवटें पड़-पड़के खुलती है जबीने-सर्दपर[4]
ज़िन्दगीपर मौत है तेग़ो-तबर तोले हुए
नीम वा[5] आँखोंमें मायूसीके दर खोले हुए
ख़ामुशीके बोझसे बैठी हुई आवाज़ है
साज़े-दिल उतरा हुआ है हर सदा नासाज़ है
क़ब्रकी तारीकियाँ[6] ताबिन्दगीकी[7] घातमें
मौतका ख़ूनी सिपाही ज़िन्दगीकी घातमें

पास बीवी गोदमें बच्चा लिये ख़ामोश है
जिसकी ख़ातिर बेवगी खोले हुए आग़ोश[8] है
लब पै लोरी, गर्म आँसू चश्मे-हसरत[9] नाकमें
नर्म मौसीक़ीकी धारी नालए-शब चाकमें
देगची ख़ाली है चूल्हे पर दिखानेके लिए
मुज़तरिब[10] बच्चोंको बहलाकर सुलानेके लिए
कहती है बेताब हैं, बच्चे इलाही क्या करूँ
यह सियह बख़्तीकी[11] रातें! यह तबाही! क्या करूँ!

१. मौतकी सख़्तीसे, २. अभिलाषा रूपी आँखोंमें तेजी, ३. किन्तु दृष्टि कमज़ोर, ४. ठंडे माथेपर, ५. अधखुली, ६. क़ब्रकी अँधेरी, ७. प्रकाशकी, ८. गोद, ९. निराशापूर्ण आँखोंमें, १०. बेचैन, ११. भाग्य फटनेकी।

फ़िक्रमें बच्चोंकी लेकिन रंजो-ग़म बेकार है
यह तेरी बख़्शी हुई दौलत है तू मुख़्तार है
रूह फ़रसा ग़म[1] है यह मुझ ख़स्ता तनके वास्ते
क़र्ज़ किससे लाऊँगी गोरो-कफ़नके वास्ते

तिफ़्ले-कमसिन[2] झुकता है रह-रहके माँकी गोदसे
बापके सूजे हुए क़दमोंको छूनेके लिए

छोटे-छोटे और दो मासूम फ़ाक़ोंसे निढाल
पाँयती पकड़े खड़े हैं बेहिसो-बे-क़ीलो-क़ाल[3]
शशदरो-हैराँ हैं, घरपर ग़मका क़ाबू देखकर
बापकी गहरी ख़मोशी, माँके आँसू देखकर
धज्जियाँ कपड़ोंकी और बुझती हुई-सी सूरतें
जैसे नीलामी पै दो चीनीकी मैली मूरतें

क्या ख़बर उनको यतीमी गोदमें लेनेको है
बापको तुरबतकी[4] ख़ामोशी सदा[5] देनेको है

जिस तरह लेकर सँभाला शमअ़ होती है ख़मोश
यूँ ही जब दम तोड़ते मजदूरको आता है होश
कहता है बीवीसे ख़ालिकका[6] बड़ा एहसान है
सो भी जा अब तो मुझे तस्कीन-ओ-इत्मीनान[7] है

जानिबे-गर्दूं[8] उठाता है वह फिर दस्ते-दुआ[9]
और कहता है कि "सुन ऐ मालिके हरदोसरा !

१. आत्माको कुचलनेवाला दुःख, २. गोदका बालक, ३. चुपचाप, ४. क़ब्रकी, ५. आवाज़, ६. ख़ुदाका, ७. चैन-आराम, ८. आस्मानकी तरफ़, ९. दुआके लिए हाथ।

साँसका नाज़ुक सफ़ीना[१] कर्बके धारेपै[२] है
मौतके बादलका टुकड़ा रूहके तारेपै है
जिन्दगानी तेरे हुक्मे-ख़ासकी तामील है
मौत क्या शै है, इसी तामीलकी तकमील है
गर्चे कुछ सामा नहीं है अहतमामे-मर्गका[३]
ख़ैर मकदम[४] दिलसे करता हूँ पयामे-मर्गका[५]

जाँकनीमें[६] मुझको चाहे जिस क़दर हलकान कर
लेकिन इस बेवा पै,इन बच्चों पै यह एहसान कर

मेरे बाद इन ख़स्ताजानोंको परेशानी न हो
लरज़ा बर अन्दाम इनकी शमअ ईमानी[७] न हो
यह न हो यह जाके फैलायें कहीं दस्ते-सवाल[८]
यह न हो उतरे हुए चेहरे हों तसवीरे-मलाल
यह न हो इनका ग़रूरे-मुफ़लिसी[९] बरबाद हो
यह न हो इनके लबोंपर नाला-ओ फ़रियाद हो
यह न हो यह फूल हमसायोंकी[१०] ठोकरमें रहें
यह न हो यह ज़ालिमोंके जोरे-बे पायाँ सहें
यह न हो, कर दे उन्हें तू अपनी दुनियाके सुपुर्द
यह न हो, यह लाल हों बज़्मे-तमाशाके सुपुर्द

यह न हो इन ज़िद्दियोंकी कोई ज़िद पूरी न हो
यानी पाये शौक़में ज़ंजीरे-मजबूरी न हो

१. नौका, २. वेदनाकी धारमें, ३. मृत्युके स्वागतके लिए, ४. स्वागत ५. मृत्यु-सन्देशका, ६. मरनेमें, ७. ईमानरूपी दीपक झिलमिलाये नहीं, ८. हाथ फैलायें, ९. दरिद्रताका अभिमान, १०. पड़ोसियोंकी ।

यह न हो इस नेक दिल बेवाको दुनिया हो वबाल
यह न हो जीना इसे मरनेसे हो जाये महाल
मुफ़लिसी[1] बढ़कर कहीं इस्मतकी[2] दुश्मन हो न जाय
मामता औलादकी, ईमाँकी रहज़न[3] हो न जाय
यह न हो सरमायए-आहो-फ़ुग़ाँ हो[4] ज़िन्दगी
यह न हो दोशे-अनासिर पर गराँ[5] हो ज़िन्दगी
मेरे मासूमोंकी जानेज़ारका वाली[6] है तू
इन ज़बूँ हालोंका[7] हमदर्दे-ज़बूँ हाली[8] है तू"

कहते-कहते यक-ब-यक ख़ामोश हो जाता है वह
मौतके दामनमें गहरी नींद सो जाता है वह

क्या यही इन्साफ़े-यज़दानी[9] है ऐ परवर्दिगार !
क्या तेरे बन्दे यूँही रहते हैं आफ़तका शिकार ?
क्या तेरी ताअ़त-गुज़ारीका[10] यही इनआ़म है
चाहनेवालोंका तेरे क्या यही अंजाम[11] है
क्या नहीं तुझतक रसाई[12] नातवाँ[13] आवाज़की
क्या तुझे भाती नहीं लै आँसुओंके साज़की

यह तेरी ग़ैरतमें जज़्बे-बे-नियाज़ी[14] हाय-हाय
क्या इसीका नाम है मुफ़लिस-नवाज़ी[15] हाय-हाय ?

—नवाए-कारगरसे

१. ग़रीबी, २. शीलकी, ३. लुटेरी, ४. जीवनकी सम्पत्ति, आह और रुदन, ५. पंचतत्त्वके बने कन्धोंपर भार न हो, ६. रक्षक, ७. मन-हूसोंका, ८. दुखियोंका हमदर्द, ९. ईश्वरीय न्याय, १०. आराधना करनेका, ११. फल, परिणाम, १२. पहुँच, १३. कमज़ोर, १४. उपेक्षा भाव, १५. दीनबन्धत्व।

मज़दूरकी ईद

[५५ में-से १३]

हर तरफ़ गूँजा हुआ शोरे-मुबारक बाद है
दिलका हर गोशा[1] मुनव्वर[2] है नज़र आबाद है
लेकिन इक मज़दूर परदेसीका है यह हालेज़ार[3]
है अभी नौवारिदाने-शहरमें[4] जिसका शुमार
ईदका दिन है अज़ाबे-ज़िन्दगी इसके लिए
हर नफ़स[5] है इक नई शरमिन्दगी इसके लिए
अपना ख़ुद धोया हुआ इक पैरहन[6] पहने हुए
जिसके दामन जा-बजा सुकड़े हुए, सिमटे हुए
धज्जियोंको हमनशीनोंसे[7] छुपानेके लिए
आस्तीनें लौट रक्खी हैं बहानेके लिए
पिंडलियोंके बाल ख़ाके-रहसे[8] गर्द-आलूद[9] हैं
ठोकरोंके ज़ख़्म दोनों पाँवमें मौजूद हैं,

इसी दयनीय स्थितिमें पत्नीका पत्र मिलता है, जिसमें अन्य परेशानियों-के उल्लेखके बाद अपने फटे हाल बच्चोंके बारेमें लिखती है—

"जब गलीमें कोई शै बिकती हुई पाते हैं यह
अश्क[10] आँखोंमें लिये चुपके चले आते हैं यह
जब यहाँ हमसायोंके[11] बच्चे बदलते हैं लिबास
लोटते हैं आके मिट्टीमें यह मुझ दुखियाके पास

१. कोना, २. प्रकाशमान, ३. बुरा हाल, ४. शहरमें नवागन्तुकोंमें, ५. श्वास, ६. कपड़ा, ७. पड़ोसियोंसे, ८. रास्तेकी धूलसे, ९. मिट्टीमे लथपथ, १०. आँसू, ११. पड़ोसियोंके ।

लेकिन उफ़ परदेसमें तुम जाने किस आलममें हो
यह न हो मेरी शिकायतसे इज़ाफ़ा[1] ग़ममें हो
मुतअईन[2] रहना मुसीबतमें न डालूँगी इन्हें
कातते-सीते जो मिट भी जाऊँ पालूँगी इन्हें
यह न हो ख़त पढ़के खो बैठो मताए-अक़्लो-होश[3]
यह न हो दुनिया तुम्हें कहने लगे ईमाँ-फ़रोश[4]
ले न जाये जोशे-ख़ूँ[5] तारीक[6] राहोंकी तरफ़
रासतीका रुख़ न फिर जाये गुनाहोंकी तरफ़
शमए-ईमाँ[7] गुल[8] न हो जाये कि मंज़िल दूर है
हों अगर होते हैं, फ़ाक़े यह हमें मंज़ूर है"

—आतिशे-ख़ामोश

हस्पताल

'एहसान' अपने एक बीमार दोस्तको देखने हस्पताल गये तो वहाँके अनेक प्रकारके रोगियों और उनके रोगोंका उल्लेख करते हुए फ़र्माते हैं—

[१६ मै-से १०]

फ़लकसे[9] नसोंकी मार्फ़त आ रहे थे पैग़ामे-ज़िंदगानी
दिली-नज़रके लिए था उनका जमाल[10] नआमे-ज़िंदगानी

---

१. वृद्धि, २. निश्चिन्त, ३. अक़्ल और होशकी दौलत, ४. ईमान बेचनेवाला, ५. अपने रक्तका उबाल, सन्तानका प्रेम, ६. अँधेरी, ७. ईमान रूपी दीपक, ८. बुझना, ९. आकाशसे, १०. रूप-यौवन ।

वह उनके गुलगूँ जमील चहरे[1], वह उनका जौबारे[2] मुसकराना
मरीज़ सौ बार बे मज़ा हो तो आके सौबार मुसकराना
तरीक़े-महबूबियतमें यकता[3], इलाजे-रूहे-हज़ींमें[4] कामिल
लबे-शकर रेज़पर तबस्सुम[5] अदाए-जाँ आफ़रींमें कामिल[6]
मगर वे मुफ़लिस कि जिनका कोई जहानमें आसरा नहीं था
तमाम हस्तीका[7] जिनकी सरमाया ग़ैरज़ाते-ख़ुदा[8] नहीं था
थे तंग बे-इल्फ़ातियोंसे[9] दवाएँ बेवक़्त पी रहे थे
क़ज़ाकी चश्मे-करमके तालिब[10] न मर रहे थे न जी रहे थे
दवाएँ बासी, ख़राब पोशिशें[11], न ताज़ा खाना, न साफ़ पानी
न ख़ूनमें ज़िन्दगीकी गर्मी, न साँसमें जाँ फ़ज़ा रवानी[12]
न कोई आसारे-तन्दुरुस्ती, न कोई ख़िदमत गुज़ार[13] उनका
न इनपै नर्सोंकी महरबानी, न पासबाँ ग़मगुसार[14] उनका
वह नौजवाँ ख़ुद-पसन्द लड़के[15] अभी जो तालीम पा रहे थे,
ग़रीब फ़ाक़ा-कशोंकी जानोंको तजरुबोंमें गँवा रहे थे,

---

१. फूल जैसे सुन्दर मुख, २. बिजली जैसी मुसकान, शोभायुक्त हँसी, ३. माशूक़ाना तौर-तरीक़ोंमें कमाल हासिल, ४. दुखी लोगोंकी सेवामें दत्त-चित्त, ५. मिसरी घुले हुए ओठोंपर मुसकान, मधुरवाणीके साथ खिला हुआ चेहरा, ६. जीवन-दान देनेकी अदाओंसे परिपूर्ण, ७. सम्पूर्ण जीवनमें, ८. ख़ुदाके अतिरिक्त दूसरा सहायक, ९. नामहर्बानियोंसे, १०. मृत्युकी कृपा-दृष्टिके इच्छुक, ११. बिछौना, लिबास, १२. जीवन-प्रवाह, १३. सेवा करनेवाला, १४. चौकीदार ही दुःख समझनेवाला, १५. हाउस सर्जन ।

थे दीदए-ज़र पसन्द उनके ज़लील तर भीकके प्याले[1]
जो कुछ ख़मोशीसे नज़्र कर दे उसीका हक़ है, वही दवा ले
सितम-सितम हस्पतालमें भी ज़रो-जवाहरकी आबरू हो
हों जेबमें जिसकी चन्द सिक्के उसीसे नर्सोंकी गुफ़्तगू हो

—आतिशे-ख़ामोश

दो माएँ

अपने-अपने बेटोंको विदा करनेके लिए दो माएँ स्टेशन पहुँचती हैं। धनिक पुत्रकी शानोशौकतका बयान करते हुए उसकी माँको यूँ हमकलाम होते हुए देखते हैं—

[३० में-से २३]

कह रही है माँ कि "ऐ लख़्तेजिगर, नूरे-नज़र !
ख़र्च चाहे जिस क़दर हो जाये अन्देशा न कर
तू सनद बैरिस्टरीकी लेके जिस दिन आयगा
सारा कुनबा अपनी मुँह माँगी मुरादें पायगा
फ़र्श-पा अन्दाज़[2] होगा आस्माँ तेरे लिए
कर रहा है जमअ सरमाया जहाँ तेरे लिए
तेरी ठोकरसे ज़रो-गौहर[3] उगल देगी ज़मीं
इक इशारेपर तेरे महवर बदल देगी ज़मीं

१. उन हाउस-सर्जनोंकी उन्हीं रोगियोंकी तरफ़ ख़ास तवज्जह थी जो उनको भेंट-पूजा चढ़ाते रहते थे, वही रोगी नज़रोंमें थे, जो उनके भीकके प्यालोंमें कुछ डाल सकें, २. आस्मान तेरे क़दमोंमें बिछ जायगा, ३. धन और मोती।

फ़ैसलोंसे तेरे जेलोंमें भरे जायेंगे लोग
नाम भी तेरा जो सुन पायेंगे थर्रायेंगे लोग
राहतें भेजेगा मजबूरन ख़ुदा तेरे लिए
तख़्ते-शाही तक है सीधा रास्ता तेरे लिए"
इससे थोड़ी दूर इक बेवाका इकलौता पिसर
तीसरे दर्जेके आगे है खड़ा बाँधे कमर
जा रहा है जंगके मैदाँमें सीना तानकर
नौजवानीको मताए-बे-हक़ीक़त[1] जानकर
कह रही है माँ कि "ऐ मेरी तमन्नाके चराग़ !
कुछ न पूछ इस वक्त है, कितना मेरा दिल बाग़-बाग़
बहरे-ग़ममें[2] गर्चे किश्ती हिज्रकी[3] खेती हूँ मैं
तू अमानत क़ौमकी है, क़ौमको देती हूँ मैं
हो तुझे वाज़ह[4] कि तेरे सफ़ शिकन अजदादके[5]
बर्छियोंकी बारिशोंमें गूँजते थे क़हक़हे
है तेरी रग-रगमें उनका ख़ून ऐ नूरे-बसर !
रखके जो सोते थे शबको लाशए-दुश्मन पै सर
उनके हाथोंमें रही है, तेरी तिफ़्लीकी ज़माम[6]
जिनकी तलवारोंने झाँके भी नहीं बरसों नियाम[7]
तेरी शिरयानोंमें[8] उन[9] ज़ीग़म-शिकारोंका है ख़ून
जिनको ख़ूनी नद्दियोंमें था नहानेका जनून

१. व्यर्थ-सी सम्पत्ति, २. दुःखसमुद्रमें, ३. वियोगकी, ४. मालूम, ५. शत्रुकी मोर्चेबन्दी तोड़ने वाले पूर्वजोंके, ६. बाल्यावस्थाकी डोर, ७. मियान, ८. रगोंमें, ९. शेरोंके शिकारियोंका ।

तेरी पेशानी उन्हींका आईना है हू-ब-हू
नूरके तड़के[1] चटाते थे जो बर्छोंको लहू
आग तोपोंके दहाने बे तरह बरसायेंगे
सनसनाते तीर पेशानीको छूने आयेंगे
बिजलियाँ तेग़ोंकी कौंदेंगी निगाहोंमें तेरी
ख़ूनके सैलाब लहरायेंगे राहोंमें तेरी
आयेंगे रेले तुझे पीछे हटानेके लिए
बर्छियाँ लपकेंगी पहलू गुदगुदानेके लिए
लेकिन ऐ लख़्ते-जिगर! नूरे-नज़र! जाने-हयात!
याद रखना अपनी बेवा माँकी सिर्फ़ इतनी-सी बात
पुश्त[2] जो मैदाँमें दिखलाता है, मर्दे-ख़ाम[3] है
गोलियाँ सीने पै खाना शूरमाका काम है
शोलाहाए जंगमें जौहर दिखानेके लिए
जमके लड़ना क़ौमकी इज़्ज़त बचानेके लिए
पुश्तपर खाया जो तूने ज़ख़्म ऐ नूरे-निगाह!
दूध बख़्शूँगी न हरगिज़ ज़ाते-बारी[4] है गवाह
ख़ूनमें लिथड़ा हुआ जब फ़तह पाकर आयेगा
अपनी बेवा माँकी आँखोंमें तबस्सुम[5] पायेगा

—आतिशे-ख़ामोश

१. प्रातः समय, २. पीठ, ३. नामर्द, ४. ख़ुदा, ५. मुसकान।

निकाहे-सानी [पुनर्विवाह]

[८८ में-से ४६]

[आँखों देखी एक घटना]

एक बेवा बेवगीके ग़मसे तंग आई हुई
कसरते-आलामकी[1] सख़्तीसे घबराई हुई

आँखमें रंगे-हया चहरे पै आसारे-मलाल[2]
मुज़महल बरगिश्ता क़िस्मत[3], नातवाँ[4] ग़मसे निढाल
साथ दो मासूम बच्चे ख़स्ता जानो-दिल-फ़िगार[5]
जिनकी मासूमीके चेहरेपर यतीमीका ग़ुबार[6]

आ गई मैकेमें अपना ग़म भुलानेके लिए
भाइयों-बहनोंको दाग़े-दिल दिखानेके लिए

कुछ दिनों तो घर-का-घर ख़ामोश बे चूनो-चरा
मज़हबो - तहज़ीबके क़ानूनपर चलता रहा
यानी उसकी हर तरह ग़मख़्वारियाँ होती रहीं
फ़र्ज़के पर्देमें दुनियादारियाँ होती रहीं

रफ़्ता-रफ़्ता फिर मुरव्वतमें कमी होने लगी
लुत्फ़के दामनसे पैदा दुश्मनी होने लगी

१. दुःखोंकी अधिकतासे, २. व्यथाके चिह्न, ३. उदास और फिरी हुई तक़दीर, ४. कमज़ोर, ५. भग्न हृदय, ६. अनाथावस्थाका मैल ।

गुफ़्तगू पर क़ैंचियाँ चलने लगीं तरदीदकी[1]
बारिशें हर बातपर होने लगीं ताक़ीदकी[2]
कोई साअ़त थी न ऐसी जिसमें फ़हमाइश न थी
उफ़ भरे कुनबेमें उस बेवाकी गुंजाइश न थी
भावजें मनहूस कह-कह कर बुलाती थीं उसे
तानाहाए-तल्ख़से[3] पहरों रुलाती थीं उसे
उसका दिल था पारा-पारा उसकी आँखें अश्करेज़[4]
हर सुहागन उसके साये तकसे करती थी गुरेज़

बार[5] था हर-इकको यह तसवीरे-इबरत[6] देखना
बद-शगूनी था सहरको[7] उसकी सूरत देखना

भावजोंके दिलका अक्सर यूँ निकलता था ग़ुबार
उसके मासूमों पै उसके सामने पड़ती थी मार
उँगलियाँ उठती थीं बच्चोंपर कि भूके चोर हैं
खा गये यह बापको कम्बख़्त आदम-ख़ोर[8] हैं
गरचे कह सकती न थीं कुछ खुलके उसके रू-बरू
औरतोंमें इस तरह होती थी पहरों गुफ़्तगू
"पीर जी कहते हैं सच इसका क़दम मनहूस है
जबसे यह आई है इस घरकी फ़ज़ा मायूस है

१. बात काटी जाने लगीं, २. कटु आलोचनाओंकी, ३. कड़वे तानोंसे, ४. अश्रु-पूर्ण, ५. असह्य बोझ, ६. पाठ लेने योग्य स्थिति, ७. सुबहको, ८. मनष्य खाने वाले।

इसके ईमाँमें ख़लल है, इसकी नीयतमें फ़तूर
यह जहाँ होगी वहाँ इदबार[1] आयेगा ज़रूर
बद-नज़र ऐसी है जो बच्चा इसे कुछ भा गया
पड़ गया बीमार हँसता-खेलता कुम्हला गया
कौन कहता है निगाहोंमें नहीं होता असर
टुकड़े कर देती है पत्थरको नदीदोंकी नज़र
वर्ना आख़िर बात क्या थी कौन-सी उफ़्ताद[2] थी
वह भरा घर क्यों उजड़ता यह जहाँ आबाद थी"

अलग़रज़ क़िस्मतन की वह सख़्त गीरी इख़्तियार
भाइयोंके दिलसे भी जाता रहा उसका वक़ार

वे वफ़ाई भाइयों की ख़ूमें[3] दाख़िल हो गई
बद गुमानी ख़ूनके रिश्तेमें हाइल हो गई
ख़ादिमाएँ[4] भी उसे कहने लगीं सब बदतमीज़
बन गई मामाओंकी मामा कनीज़ों की कनीज़[5]
घरके बर्तन माँजती थी तौलिए धोती थी वह
काममें रहती थी दिनभर रातभर रोती थी वह
भावजोंने भाइयोंको ऐसा बरहम[6] कर दिया
सबने इस बेवा बहनसे बोलना कम कर दिया
फिर भी लेकिन इसने कुछ ख़िदमतमें कोताही[7] न की
इख़्तियार इसके किसी जज़्बेने गुमराही न की

१. दुर्भाग्य, मनहूसियत, २. आफ़त, ३. स्वभावमें, ४. नौकरानियाँ, ५. नौकरानियोंकी नौकरानी, ६. बरगला दिया, भर दिया, ७. कमी।

भाई आये और बहनसे यूँ हुए गर्म-कलाम
"है तुम्हारे वास्ते आज इक मुअज़्ज़िज़[1] का पयाम[2]
देखकर मौक़ेको, तेवर वक़्तके पहचानकर
कर लिया इक़रार हम सबने मुनसिब जानकर"

भाइयोंकी जब सुनी उस तीरा क़िस्मतने[3] यह बात
होंट दाँतोंसे चबाये रख लिये कानों पै हात

रूह घबराई पसीनेसे जबीं[4] तर हो गई
होंट तो लरज़े मगर गुफ़्तार दूभर हो गई
ज़ब्तका दामन न उसने हाथसे जाने दिया
एक भी आँसू न दिलसे आँख तक आने दिया
सिर्फ़ इतना कह सकी डूबी हुई आवाज़से
"भाई क्यों तंग आ गये मुझ हस्तिए-नासाज़से ?
कम नहीं थे भावजोंके ताना हाए-दिल ख़राश[5]
तुम भी अब करने लगे मेरा कलेजा पाश-पाश[6]
अच्छा कपड़ा और न मुझको अच्छा खाना चाहिए
इन यतीमोंकी यतीमीको ठिकाना चाहिए
है हिफ़ाज़त फ़र्ज़ इन बच्चोंकी नन्हीं जानकी
यादगारें हैं यह इक गुज़रे हुए इन्सानकी
मैं यह कब कहती हूँ तुम अपनी बहन जानो मुझे
अपने बच्चोंकी कनीज़े-ख़ास[7] गरदानो मुझे

---

१. भले आदमीका, २. शादीका सन्देश, ३. अभागीने, ४. माथा, ५. दिल चीरनेवाले ताने, ६. टुकड़े-टुकड़े, ७. नौकरानी, धाय।

जब बुरी क़िस्मत है फिर क्यों तालिबे-तौक़ीर[1] हूँ
आजसे यह भूल जाऊँगी कि मैं हमशीर[2] हूँ
ख़ूनका रिश्ता न ज़ाहिर हो सकेगा ज़ीनहार[3]
कोई पूछेगी तो कह दूँगी कि हूँ ख़िदमत गुज़ार"

कहते-कहते दिल घुटा आवाज़ भारी हो गई
जिस्म लरज़ा नीम बेहोशी-सी तारी हो गई

....

भाइयोंने यक ज़बाँ होकर किया उससे ख़िताब
"दूसरे घरके लिए तैयार हो जाओ शिताब[4]
अब इजाज़तके लिए हरगिज़ नहीं आये हैं हम
ज़ाब्तेकी इत्तलाएँ - आख़िरी लाये हैं हम"

सुनके उस क़िस्मतकी मारीको हुआ बेहद मलाल
मिल गये जब ग़ुस्स-ओ-ग़म हो गई आँखें भी लाल
और हुई तपते हुए लहजेमें यूँ गर्मे-कलाम
"मेरी ख़ुद्दारी[5] न होगी जब्रसे हरगिज़ ग़ुलाम
मेरी ग़ैरत इस तहक्कुमको[6] उठा सकती नहीं
मैं नज़रमें दूसरे शौहरको ला सकती नहीं
मेरा ईमाँ अपनी ताबानीको[7] खो सकता नहीं
कोई तूफ़ाँ मेरी किश्तीको डुबो सकता नहीं

१. आदरकी इच्छुक, २. एक माँका दूध पीनेवाली बहन, ३. कदापि, ४. शीघ्र, ५. स्वाभिमान, ६. ज़बर्दस्तीके हुक्मको, निठुर आदेशको, ७. चमकको, शीलको।

लीजिए दौलतकदा ख़ाली किये जाती हूँ मैं
साथ अपने दिलके टुकड़ोंको लिये जाती हूँ मैं"

—नवाए-कारगर

तूफ़ानी नग़मा

[३८ में-से २२]

ज़माना हो गया गंगामें इक आई थी तुग़यानी[1]
जिलौमें[2] जिसके दामन थाम कर चलती थी वीरानी
था जल-थल एक, कोसों तक मुसाफ़िर थे न राहें थीं
यह आलम था हवाए-शामके लबपर भी आहें थीं
जो रेला हड़बड़ाकर नागहाँ करवट बदलता था
बयाबानोंकी प्यासी रेतका दम-सा निकलता था
दरख़्तोंके क़दम जमते न थे सैलाबके[3] आगे
फ़लककी गर्दिशें[4] बेकार थीं गरदाबके[5] आगे
अजब बिफ़री हुई मौजोंका नक़्शा था रवानीमें
कि जैसे बुनती हों जलदेवियाँ क़ालीन पानीमें
हर-इक रेलेमें ख़ूनी मौतके क़दमोंकी आहट थी
फ़िज़ाए-बहरमें[6] सैले-बलाकी सनसनाहट थी
जिधर पानीका रुख़ होता था साहिल[7] गिरता जाता था
किसानोंकी अरक़रेज़ी पै[8] पानी फिरता जाता था

१. बाढ़, २. बहावरूपी घोड़ेकी बागडोर, ३. बहावके, ४. आकाशके चक्कर, ५. भँवरके, ६. दरियाके बहावमें, ७. किनारा, ८. पसीनेकी कमाईपर।

न बेड़ोंका पता था और न कोसों घाट मिलता था
जहाँ तक काम करती थीं निगाहें, पाट मिलता था
मवेशी नीम जाँ थे, होश परां थे, दरिन्दोंके
बहे जाते थे बच्चे आशियानोंसे परिन्दोंके
न किश्तीका, न साहिलपर पता था नाख़ुदाओंका
तसल्लुत था फ़क़त तूफ़ाँके ख़ूनी देवताओंका

इसी नाज़ुक समयमें जब थे दोनों वक़्त मिलनेको
ज़मींपर ग़श था तारी, चर्ख़पर थे फूल खिलनेको

बहा आता था इक छप्पर पै इक अन्धा पुजारी भी
जिसे क़िस्मतसे हासिल था कमाले-नग़मा-बारी[1] भी
भजन गाता हुआ आता था इकतारेकी तानोंपर
हवाएँ लेके तानें जा रही थीं आसमानोंपर
बदनपर जोगिया बाना, लटें शानों पै[2] आवारा
हर-इक मौजे-नफ़स[3] मेराजे-रूहानीका हरकारा[4]
न बेसबरी, न बेहोशी, न बेचैनी, न बेताबी
वही मिज़राबकी ज़र्बत, वही चेहरेकी शादाबी

फ़सूने-कुमरवी फ़ितरतने फूँका तेज़ धारेपर
वह छप्पर रफ़्ता-रफ़्ता आ लगा आख़िर किनारेपर

निकाला खींचकर देहातियोंने उस पुजारीको
कि वह पहला फ़रीज़ा जानते हैं, ग़मगुसारीको

---

१. संगीतोंमें प्रवीणता, २. कन्धोंपर, ३. श्वास, ४. आत्मशक्तिका दूत।

कहा मैंने पुजारीसे "यह आख़िर माजरा क्या था
कि यह कफ़ दरदहाँ तूफ़ान और तू नग़मापैरा था"

जवाब उसने दिया मुझको कि "सुन ऐ शाइरे दाना !
फ़नाको[1] तूने क्या समझा ? बक़ाको[2] तूने क्या जाना ?

क़ज़ा आती है जब देती नहीं इक पल भी जीनेको
डुबो देती है ज़ालिम रेगज़ारोंमें[3] सफ़ीनेको[4]
तो फिर हम मौतको इक लमहा क्यों दें ज़िन्दगानीका
करें क्यों फ़िक्र करके रंग फीका शादमानीका

जो मौत आती है आये मर्दको मरनेका ग़म कैसा ?
इमारतमें ख़ुशीकी दफ़्तरे-रंजो - अलम कैसा ?

—नवाए-कारगर

देहाती दोशीज़ा

[ग्रामीण कुमारी]

[५७ में-से ३०]

दहलीसे बादलीकी[5] तरफ़ जा रहा था मैं
दामे-निगाह दश्तमें[6] फैला रहा था मैं
कुम्हला गया था झूमते पौदोंका रंग रूप
पगडण्डियोंसे रोके गले मिल रही थी धूप
ताबन्दगीका ताज था ज़ुल्मतके पाँवपर
जादू-सा हो रहा था दरख़्तोंकी छाँवपर

१. मृत्युको, २. ज़िन्दगीको, ३. रेगिस्तानोंमें, ४. बेड़ोंको, ५. एक क़सबेका नाम, ६. नज़ररूपी जाल रास्तेमें।

कजला रही थी जैसे यतीमोंकी ज़िन्दगी
पेड़ोंकी चोटियों पै गुलाबी-सी रोशनी
करवट-सी ले रहा था हवाओं पै अब्रवार
रेवड़का रास्तम उड़ाया हुआ ग़ुबार
काजल फ़लककी आँखमें फैला हुआ-सा था
दामाने-शाम ओसमें भीगा हुआ-सा था
उट्ठी जो इक तरफ़ मेरी मचली हुई नज़र
क्या देखता हूँ धानकी क्यारीके मोड़पर
जाती है इक हसीनए-नौ - उम्रो - इश्क़साज़[1]
रुख़ गाँवकी तरफ़ है ब-ईं नाज़े - दिल - नवाज़
रुख़सार[2] थे कि अर्शसे[3] उतरी हुई किताब
मख़मूर अँखड़ियोंमें[4] लहकता हुआ गुलाब
तिफ़्ली बग़लमें साज़े-जवानी लिये[5] हुए
कश्मीरे - दिलबरीकी कहानी लिये हुए
खेतोंको देखती निगहे - चुस्तो - चाक़से
नाथे हुए शबाबको ज़रा बुलाक़से
शोख़ीकी वादियोंमें[6] मतानतका आफ़ताब[7]
बचपनके मदरसेसे निकलता हुआ शबाब
शिद्दतसे जोशे - हुस्नकी[8] दहका हुआ बदन
महका हुआ शबाबकी ख़ुशबूसे पैरहन[9]

१. युवती, २. कपोल, ३. आकाशसे, ४. नशीली आँखोंमें, ५. बाला-वस्था बगलमें जवानीका साज़ लिये हुई थी, ६. चंचल घाटियोंमें, ७. गम्भीरतारूपी सूर्य, ८. सौन्दर्य्य-तेजकी गर्मीसे, ९. लिबास ।

ख़ुश ख़ुल्क़ो-ख़ुश अदा-ओ-ख़ुश अन्दाज़ो-ख़ुश कलाम
इलहाम हर निगाहमें हर साँसमें पयाम
'एहसान' हुस्ने - शहर निगाहोंसे गिर गया
हर आफ़ताबरू मेरे दिलसे उतर गया
एहसासने यह बढ़के सदा दी कि ग़ौरकर
ऐ शाइरे लतीफ़ - ख़यालो - हज़ीं जिगर !

यह लड़की उस किसानकी आँखोंका नूर है
जिसका ज़मीर[1] ग़ैरते - तक़दीसे - तूर[2] है
लाखों मुक़ामे - मर्ग हैं जिसकी हयात[3] में
पानीको काटता है जो सर्दीकी रातमें
तल्वोंमें जिसके रहता है, मसरूफ़[4] - पेचोताब
गर्मीकी दोपहरका भबकता हुआ शबाब
होती है, बे - हिजाब[5] ज़मीं जिसके सामने
झुकती है, मौसिमोंकी जबीं जिसके सामने
जो आशना[6] है, अब्रके[7] हर रंगो-रूपसे
जो कौंदता है, बर्फ़में, लड़ता है धूपसे
रातोंको फेंकता है जो अफ़लाक[8] पर कमन्द
होती है जिसके सामने सर-सरकी साँस बन्द

१. अन्तःकरण, ईमान, २. तूर पर्वतकी तरह पवित्र, ३. जिसकी ज़िन्दगीमें मृत्यु जैसे कष्ट अनेक हैं, ४. व्यस्त, ५. बे-पर्दा, ६. परिचित, ७. बादलोंके ८. आस्मानपर।

हैबतसे[1] जिसकी तुन्द बगोलोंका सर झुके
झुकनेसे जिसके चर्ख़ेबरींकी[2] कमर झुके
आबे-हयात[3] जिसके पसीने पै जान दे
जिसकी ज़मींको नज़्रे-शफ़क़[4] आस्मान दे
लेकिन यह आज उसका ज़मानेमें हाल है
मरना ब-ईदे-फ़हम[5] है, जीना मुहाल है
कपड़ा इसे नसीब क़बाके[6] लिए नहीं
पैसेका इन्तज़ाम ग़िज़ाके[7] लिए नहीं
इस पैकरे-वफ़ाको बिछौना नहीं नसीब
इस ग़मज़दाको चैनसे सोना नहीं नसीब
घर ऐसा तंगो-तार[8] कि रहना जहाँ अज़ाब[9]
कतराके जाय जिसकी मुंडेरोंसे आफ़ताब
चूल्हेके पास रात मवेशी करें बसर
अमराज़[10] बामों-दरपै जमाये हुए नज़र

ग़म है फ़क़त ग़रीबके खानेके वास्ते
जीता है, ज़िन्दगीको घटानेके वास्ते

ऐ काश यह किसान भी अब राह पै लगें
ऐ काश इनके ज़ुहदो-रियाज़तको[11] पर लगें

—नवाए-कारगर

१. भयसे, २. आस्मानकी, ३. अमरत्व, ४. उषाकी भेंट, ५. अलग बात है, अक़्लसे अलग है, ६. लिबासके, ७. भोजनके, ८. संकीर्ण और रोशनी रहित, ९. बदतर, १०. रोग, ११. उपासना, धर्म-ध्यानको ।

इलहामे-सहर

[२७ में-से ११]

रातको फ़ाक़ेसे सोते हैं, वह मर्दाने-ख़ुदा
परवरिश पाती है, जिनकी गोदमें महरो-वफ़ा
काँपती रहती है जिनके नामसे तर दामनी
खेलती है, जिनकी आँखोंमें सफ़ाकी रोशनी
दी जिन्हें हक़ने तड़प बिजलीकी, दम शमशीरका
ज़र्ब हैदरकी, वफ़ा हुरकी, गला शब्बीरका

क्या यह किश्ती यूँही हर तिनक पै थमती जायगी
क्या यूँही शर्मो-हयापर बर्फ़ जमती जायगी ?

मुफ़लिसी रोकर उठेगी सर ज़मीने-हिन्दसे
दूर हो जायेगी यह कालिक जबीने-हिन्दसे[1]
वर्ना इक दिन ज़ब्ते-ग़मसे तंग आ जायेंगे यह
जब न खानेको मिलेगा तुमको खा जायेंगे यह

इनकी फ़रियादोंसे लग जाती है, कुहसारोंमें[2] आग
इनके आँसू लूट लेते हैं सितारोंका सुहाग
मौतके तेवर हैं इनकी गोदके पाले हुए
आसमाँ है इनके क़दमोंपर सिपर डाले हुए

१. भारतके मस्तकसे, २. पर्वतोंमें ।

इनकी जुरअत तोड़ देती है तिलस्मे-इन्तज़ाम
है बग़ावत इनकी बाँदी इंक़िलाब इनका ग़ुलाम
बिजलियोंकी बाग है इनकी दुआके हाथमें
हाथ है, इन फ़ाक़ामस्तोंका ख़ुदाके हाथमें
मर्द आमादा नहीं होते गदाईके लिए
होते हैं, पैदा यह ख़ंजर आज़माईके लिए

—आतिशे-ख़ामोश

नामए-बे-नाम

[४० में-से २१]

[भारतीय कुँवारी लड़कीका अपने मँगेतरके नाम पहला पत्र]

ख़त यह लिखती हूँ कि जुर्मे-नासज़ा[१] करती हूँ मैं ?
ऐसी जुरअत ? इतनी बेबाकी[२] ? यह क्या करती हूँ मैं ?
आये दिन रंगीं लिफ़ाफ़े एक दोशीज़ाके[३] नाम
देखिए क्या-क्या दिखाता है. यह दुनियाका निज़ाम[४]
ग़ालिबन[५] यह ख़त तुम्हीं इरसाल[६] करते हो मुझे
आशनाए-जौरे-इस्तक़बाल[७] करते हो मुझे
....
नाज़े-मासूमीका[८] होता है तक़ाज़ा बार-बार
इन ख़तोंको नज़रे आतिश[९] कर! यह कैसा ख़लफ़िशार

१. क्षमा न करने योग्य अपराध, २. स्वच्छन्दता, ३. कुमारीके, ४. संसारका फ़ैशन, ५. शायद, सम्भवतः, ६. रवाना, ७. बलात् परिचय बढ़ा रहे हो, ८. कुँवारेपनका कर्त्तव्य कहता है कि, ९. आगमें इन पत्रोंको जला डाल ।

मैं उन्हें लेकिन न जाने क्यों जला सकती नहीं
वजह दिलमें है, मगर होंटों पै आ सकती नहीं

मेरे कुनबेमें अभी तक है क़दामतका निज़ाम[1]
बूढ़ी बूढ़ी औरतें लेती नहीं शौहरका[2] नाम
शामको ऊद और अगर[3] कमरोंमें जलते हैं वही
माएँ हैं, बच्चोंकी और घूँगट निकलते हैं वही

जितने भी ख़त आये हैं, वह ज्यूँ-के-त्यूँ सरबन्द[4] है
किस तरह देखूँ मेरे जज़्बात ग़ैरतमन्द हैं
डर यह लगता है कहीं छुपकर न 'उज़रा' देख ले
शोख़ 'ज़ुहरा' राज़[5] पा जाये 'सुरैय्या' देख ले
फ़ब्तियाँ कस-कसके चंचल 'शाहिदा' जीने न दे
हँसके यूँ लिपटे कि अश्के-शर्म भी पीने न दे

जिसमें यह नादीदा[6] नामे हैं मुक़फ़्फ़ल[7] है वह बक्स
फिर भी लेकिन थरथराता है मेरे सीनेमें अक्स

....

दिलमें लेकिन एक मुबहम-से शरारेका गुदाज़
छेड़ता है सोज़की मिज़राबसे वहशतका साज़

....

आह शायद यह वही शै है इसे समझे ख़ुदा
नाम भी लेना है, दोशीज़ाको जिसका नारवा

१. पुरानी सभ्यताका प्रचलन, २. पतिका, ३. सुगन्धित बत्ती अगर आदि, ४. बिना खोले हुए, मुहरबन्द, ५. भेद, ६. अनदेखे यंत्र, ७. ताला लगा हुआ ।

याद है, मुझको कि जब अब्बा पढ़ाते थे मुझे
नुक्ता नुक्ता इल्मो-दानिशका सिखाते थे मुझे

थी मगर ताकीद अम्मीको कि यह लिखने न पाय
देखना ऐसा न हो यह ख़त-नवीसी[1] सीख जाय
मैंने लेकिन उनसे छुप-छुपकर किताबत सीख ली
जिस क़दर बन्दिश थी इतनी ही ब-उजलत[2] सीख ली

अब मैं समझी हूँ कि इस ख़तरे पै थी उनकी नज़र
आह यह ख़तरा ! कि मैं पाती नहीं जिससे मफ़र

बात थी आवाज़े-बे-हंगाम समझी थी जिसे
बापके दिलका ख़याले-ख़ाम समझी थी जिसे
मुझको गर लिखना न आता किस तरह होती यह बात
जिससे लरज़ाँ है मेरी दोशीज़गीकी कायनात
आज मेरी ख़ानदानी आन भी ख़तरे में है
मशरक़ी दोशीज़गीकी शान भी ख़तरेमें है

कर सकूँ ऐ काश यह नामा न मैं तुमको रक़म
खुल सके तुमपर न मेरे ज़ब्ते-पिन्हाँका भरम
काश यह राज़े-तमन्ना तुम तलक जाने न पाय
काश मुझ तक मेरे इस ख़तका जवाब आने न पाय

क्योंकि है खींचे हुए तहज़ीब तलवारें हनूज़
दरमियाँ दोनोंके हैं, मज़हबकी दीवारें हनूज़

— नवाए-कारगर

१. पत्र लिखना, २. शीघ्र।

कश-म-कश

अपनी असमर्थताका उल्लेख करते हुए प्रेयसीसे कहते हैं—

[२४ में-से ६]

तुझे मौक़ा तो मिल जाता है दो आँसू बहानेका
.गुबारे-रूह[१] धोनेका, लगी दिलकी बुझानेका
ख़बर भी है कि मुझसे क्या रवैया है ज़मानेका ?
मुझे है हुक्म बहते आँसुओंमें मुसकरानेका

कहाँ तू शमए-महबूबी[२] कहाँ मैं नंगे-परवाना[३]
उम्मीदें तेरी मतवाली तसव्वुर[४] मेरा दीवाना

तेरे नाज़े-इमारत[५] बेज़री[६] क्योंकर उठायेगी ?
मेरी मजबूरियोंपर तेरी चाहत मुसकरायेगी
तुझे रातोंको जब इफ़लासकी शिद्दत[७] जगायेगी
मेरी मर्दाना ग़ैरत दिल पकड़कर बैठ जायेगी

तराने गाऊँगा या दिलसे ग़मके दाग़ धोऊँगा ?
हँसाऊँगा तुम्हें या मुल्ककी हालतपै रोऊँगा ?
मुझे अब भूल जा शायद सकूँ[८] हो भूल जानेसे
कि हासिल कुछ नहीं इस याद करने, याद आनेसे

१. आत्माका मैल, २. सौन्दर्य रूपी दीपक, ३. तुच्छ कीट-पतंग ४. खयाल, ५. ऐश्वर्यमें पले अन्दाज़, ६. निर्धनताके कष्ट, ७. अभावोंकी अधिकता, ८. चैन ।

समझ लेना कि कोई हो गया रुख़सत ज़मानेसे
सरिश्के - यास[१] पीनेसे ग़मे - दूरी[२] उठानेसे
न जाने वर्ना दोनोंकी शहादत किस तरह होगी ?
मैं हैराँ हूँ कि तकमीले-मुहब्बत[३] किस तरह होगी ?

—नवाए-कारगर

मक़सूदे-कार

[८ में-से ५]

फूँककर छोड़ूँगा हर अन्सरमें[४] रूहे-इत्तहाद[५]
कश-म-कशमें ख़्वाह जाने-मुब्तला देनी पड़े
इस क़दर कर दूँगा माओंकी मुहब्बतको बुलन्द
दिलके टुकड़ोंको शहादतकी[६] दुआ देनी पड़े
क़ीमते-मज़दूर कर दूँगा जहाँपर आशकार[७]
ज़िन्दगीको लाख तश्कीले-क़ज़ा[८] देनी पड़े
ख़ाकसे हिन्दोस्ताँकी वह उठाऊँगा शहीद[९]
जिनके मदफ़नको[१०] ज़मीने-करबला[११] देनी पड़े
ऐ फलक ! मुझको मिटा, लेकिन कहीं ऐसा न कर
ख़ाककी चुटकीके बदले कीमया देनी पड़े

---

१. निराशा रूपी आँसू, २. विरहका दुःख, ३. मुहब्बतकी पूर्णता, ४. पञ्चतत्त्वोंमें, प्रत्येक व्यक्तियोंमें, ५. संगठनकी शक्ति, मेल-मिलापकी भावना, ६. बलिदान हो जानेका आशीर्वाद, ७. ज़ाहिर, ८. मृत्यु-कर, दण्ड, ९. प्राण न्योछावर करनेवाले, १०. क़ब्रोंको, ११. वह प्रसिद्ध रण-क्षेत्र जहाँ हुसैन अपने साथियों सहित शहीद हुए थे ।

ख़ौफ़नाक ख़मोशी

फ़ुग़ाने-बा-असर है बे-ज़बानी फ़ाक़ा-मस्तोंकी[1]
कोई चुपके-से कह दे कानमें सरमायादारोंके
डरो इन पस्तियोंमें रहनेवालोंकी ख़मोशीसे
कि फट जाते हैं सीने ज़लज़लेसे कोहसारोंके[2]

—आतिशे-ख़ामोश

मुहब्बत

[२२ में-से १६]

मुहब्बत हर तरफ़ है, कार फ़र्मा[3] बज़्मे-आलममें[4]
ज़मींपर, आसमाँपर, कहकशाँमें[5], गुलमें, शबनममें[6]
मुहब्बतकी ज़ियासे[7] चाँदका टुकड़ा है, ताबिन्दा[8]
मुहब्बतसे इज़ारे - महरे - आलमताब रख़्शिन्दा[9]
मुहब्बत ही की बू आती है, कलियोंके पसीनेसे
मुहब्बत ही छलकती है, फ़ज़ाके आबगीनेसे[10]
मुहब्बतसे शमीमे-जाँ फ़ज़ाकी[11] नब्ज़ चलती है,
मुहब्बत शबनमी क़ालीनपर[12] करवट बदलती है,
मुहब्बत बनके आया है, ख़ुदा ख़ुद शक्ले-इंसाँमें
मुहब्बत काब-ओ-बुतख़ानाकी शमए-फ़िरोज़ाँमें[13]

१. भूख-प्याससे पीड़ितोंकी मौन आह बहुत प्रभावक होती है, २. पर्वतोंके, ३. प्रभावक, ४. विश्वमें, ५. आकाश-गंगामें, छायामें, ६. ओसमें, ७. चमकसे, ८. प्रकाशमान, ९. सूर्यके कपोल चमक रहे हैं, १०. बहार रूपी मद्य-पात्रसे, ११. प्राण संचारक वायुकी, १२. ग़लीचेपर, १३. काबा-काशीके प्रकाशमान दीपकोंमें।

मुहब्बत गुलरुख़ोंमें[१] हुस्न[२] बनकर जल्वा[३] आरा है,
मुहब्बत ही ने क़ैसो-कोहकनको[४] रूप धारा है,
मुहब्बतके अदमसे[५] ज़िन्दगी बेनूर[६] होती है,
मुहब्बत हो तो चिन्गारी चराग़े-तूर होती है,

मुहब्बत रूहका मज़हब है, ईमाँ है, निगाहोंका
मुहब्बत मुद्दआ पिछले पहरकी सर्द आहोंका
मुहब्बत जादहे - महरो - वफ़ासे[७] हट नहीं सकती
मुहब्बत ज़र्बते - तेग़े - फ़नासे[८], कट नहीं सकती

मुहब्बत ग़ाज़ियोंके वलवलोंमें लहर खाती है,
मुहब्बत बर्छियोंके साज़पर तानें उड़ाती है,
मुहब्बत नाचती है, जंगकी ख़ूनी ज़मीनोंपर
मुहब्बत रोकती है, गोलियाँ बढ़ - बढ़के सीनोंपर

मुहब्बत कश्तिए-जाँ मौतके धारे पै लाती है,
मुहब्बत ख़ंजरोंके बादलोंमें मुसकराती है,
मुहब्बत रागनी गाती है तोपोंके धमाकोंमें
मुहब्बत रंग भरती है, फ़ज़ाके सादा ख़ाकोंमें

मुहब्बत सनसनाते तीर खाती है, जबीनोंपर[९]
मुहब्बत लोटती है, ख़ूनकी प्यासी ज़मीनोंपर

१. फूल जैसी सुन्दरियोंमें, २. रूप, ३. विद्यमान, ४. मजनूँ और फ़रहादका, ५. न होनेसे, ६. अँधेरी, ७. नेकी और प्रत्युपकारके मार्गसे, ८. मृत्यु रूपी तलवारकी काटसे, ९. मस्तकोंपर ।

मुहब्बत खेलती है शूरमाओंकी जवानीसे
मुहब्बत कुल्लियाँ करती है, तलवारोंके पानीसे
मुहब्बतको कोई ताक़त मुसख़्ख़र[1] कर नहीं सकती
मुहब्बत ग़ैर फ़ानी[2] है मुहब्बत मर नहीं सकती

—नवाए-कारगर

शाइरका मसलक

लहूमें है मेरी उम्मीदके गर्मी जहन्नुमकी
मैं आज़ादीका हामी, ख़लफ़िशारे बीम क्या जानूँ ?
मेरा मज़हब मुहब्बत, मशग़ला मेरा फ़िदा कारी
मैं इलहामे-जनूनो-शौक़में तरमीम क्या जानूँ ?
मेरे सिजदे बहिश्तोंकी हदोंसे बचके रहते हैं,
भला मैं ताजिराना ताअतो-ताज़ीम क्या जानूँ ?
मुझे शम्सो-क़मर देते हैं, दर्से-राज़े - ताबानी
मैं यह लफ़्ज़ोंमें कफ़नाई हुई तालीम क्या जानूँ ?
मेरे मेयारे-इंसानी पै सर धुनते हैं सैय्यारे
मैं यह दैरो-हरमकी नारवा तक़्सीम क्या जानूँ ?
जुनूँ पढ़वा रहा है, मुझसे कितने आस्मानोंके
मैं ओछी अक़्लकी गुमराह कुन तालीम क्या जानूँ ?
मेरी हर साँसमें सूरतगरी करवट बदलती है
मेरी तख़यील इलहामातके साँचोंमें ढलती है

—नवाए कारगर

१. विजित, वशीभूत, २. अमर।

मुआमलात

[१६ में-से ३]

काबेको अगर काबा समझा तो ग़रज़ यह थी
शायद कि तेरे दर तक ले जाये ख़ुदा मुझको

....

हूरोंकी निगाहें हैं, ईवाने-मुहब्बत[१] पर
आँसू हैं, फ़रिश्तोंके दामाने-मुहब्बतपर
जितने भी सहाइफ़[२] हैं अबवाबे-मुहब्बत[३] हैं
ईमान है, ख़ालिकका[४] कुरआने-मुहब्बतपर[५]

—**नवाए कारगर**

महराब

[४ में-से २]

जुनूँ[६] है, ख़िदमते-इंसाँका मुझको
कमाले ख़ाम-ओ-शमशीर[७] दे दे
ज़बाँको रास्तीकी भीक देकर
मेरे हर लफ़्ज़में तासीर दे दे

१. प्रेम-भवनपर, २. ग्रन्थ, ३. प्रेमके परिच्छेद हैं, ४. ख़ुदाका, ५. मुहब्बतरूपी क़ुरआनपर, ६. जोश, उत्साह, ७. क़लम और तलवारका कमाल ।

तजरुबा

[५ में-से १]

क़फ़सकी तामीरमें[1] मुआविन[2] ! तेरी नशेमन-पसन्दियाँ[3] हैं
वगर्ना परवाज़के[4] लिए तो बुलन्दियाँ ही बुलन्दियाँ हैं

चराग़े-रहगुज़र[5]

[४ में-से १]

वह नक़्श[6] छोड़ ज़मानेका तरबियतके[7] लिए
फ़नाके[8] बाद न हो जिससे रूह[9] शर्मिन्दा

एहसासे-मजरूह[10]

[३ में-से १]

बिक रहा है तुलके काँटोंमें ग़रीबोंका लहू
क्या जहाँसे अहले-दिल, अहले-नज़र जाते रहे?

अक़ीदा

[७ में-से १]

कम नज़र आने लगे जिससे मेरी चादरका तूल[11]
मेरे अरमानोंने इतने पाँव फैलाये नहीं

---

१. पिंजरेके निर्माणका कारण, २. सहयोगी, ३. नीड़ बनानेके प्रयास, ४. उड़ानको, ५. मार्गका दीप, ६. प्रभाव, ७. शिक्षाके लिए, ८. मृत्युको, ९. आत्मा, १०. घायलकी चेतना, ११. लम्बाई।

शिकवए-तक़दीर[१]

[६ में-से ५]

ख़ुद बदीका मुर्तकब[२] और तुहमतें इबलीसपर[३]
मेरी ग़ैरतको है ऐसी ज़िन्दग़ीसे इन्हिराफ़[४]
लूटते हैं, ग़ाफ़िलोंकी नींदपर रहज़न[५] ज़रूर
गर्दिशे-अफ़लाक[६] बुज़दिलको नहीं करती मुआफ़
मस्जिदें बेरूह सिजदोंकी दुकानें बन गईं
इश्क़के इसरारसे[७] ख़ाली हैं, काबेके तवाफ़[८]
रूहके शोलेसे[९] जब होती है रौशन शमए-दिल[१०]
डाल देती है नज़र इंसाँकी पत्थरमें शिगाफ़[११]
बहरावर[१२] है लुत्फ़े-यज़दाँसे[१३] फ़क़त अहले हमम[१४]
शिकवए-तक़दीर[१५] यकसर[१६] ख़ामियोंका एतराफ़[१७]

एक अमीर दोस्तकी गर्म मिज़ाजीसे मुतास्सिर होकर

[११ में-से २]

क्या जाने वह इश्तहाकी[१८] तकलीफ़
फ़ाक़ोंसे जिसे नहीं सरोकार
मुनअ़मको[१९] यह क्या ख़बर कि कैसे
मर जाते हैं बे दवाके बीमार

१. भाग्यकी शिकायत, २. कर्त्ता-ज़िम्मेदार, ३. मनुष्यको कुमार्ग-रत करनेवाले शैतानपर, ४. उपेक्षा, विमुखता, ५. लुटेरे, ६. संसार-चक्र, ७. प्रभावसे, ८. परिक्रमाएँ; यात्राएँ, ९. आत्माके प्रकाशसे, १०. हृदय-दीप, ११. दरार, १२. परिपूर्ण, भाग्यशाली, १३. ईश्वरीय कृपासे, १४. साहसी, १५. भाग्यकी शिकायत, १६. साधारणतः, १७. अकर्मण्यताकी स्वीकृति, १८. भूखकी, १९. धनिकको ।

अमीरे-मंज़िल

[१३ में-से ८]

है ज़र्रा-ज़र्रा गवाही तेरी शक़ावतकी[1]
तेरी जबीं पै[2] शहादत-सी[3] दे रहे हैं गुनाह
गुँधा है कितने ग़रीबोंका ख़ून गारेमें ?
इस इक महलके लिए कितने घर हुए हैं तबाह ?
ज़मीरो-रूहके ऐबोंकी पर्दादारीको[4]
रहा है कितने रियाकार[5] अफ़सरोंसे निबाह ?
दिलोंके कितने चराग़ों पै हाथ मारा है ?
किया है कितने सुहागोंकी रौशनीको सियाह ?
चला दिये हैं मक़ाबिर पै[6] कितने हल तूने ?
किया है कितनी मसाजिदकी ज़ीनतोंको[7] तबाह ?
शरीक इसमें कहाँ तक है दौलते-औक़ाफ़[8] ?
किया है कितने सवाबोंमें[9] इर्तक़ाबे-गुनाह[10] ?
तेरे ज़मीरके मरहूम[11] वलवलोंकी क़सम
तेरा मकान तो वह है जहाँ न महर न माह[12]
अभी है वक़्त दुआ माँग, हो लहद[13] रौशन
अगर्चे नामए-एमाल[14] हो चुका है सियाह[15]

१. निर्दयता, बेरहमीकी, २. माथेपै, ३. गवाही-सी, ४. अन्त:करण और आत्मा-द्वारा किये गये पापोंको ढकनेके लिए, ५ प्रपंची, ६. क़ब्रोंपर, ७. मस्जिदोंकी रौनकोंको, ८. उत्सर्ग की निधि. समर्पित धन; ९. पुण्य कार्योंमें, १०. पापकर्म, ११. अन्त:करणके मृतक, १२. सूर्य और चाँद, १३. क़ब्र, १४. कर्मलेख, १५. काला ।

सरमायादारकी मौत

दौलतने ज़ईफ़ीमें[1] भी इसियाँसे[2] न रोका
ढारस ही बँधाते रहे नापाक निवाले
अब नज़अ़का आलम[3] है कई दिनसे मगर कौन
उखड़ी हुई साँसोंके तसलसुलको[4] सम्भाले
यह काम न ताक़तका, न दौलतका कि इस वक़्त
तामीरे-तनो-तोशको[5] गिरनेसे बचाले
यह हाल है रह-रहके जो खुल जाती हैं आँखें
करता है गड़ा माल इशारोंसे हवाले
जैसे किसी मुफ़लिसके टपकते हुए घरमें
मिट्टीका दिया रातको लेता हो सँभाले

फ़िक्रे-परेशाँ

[५ में-से ३]

चलाचल यूँ ही रौंदता राहे-ग़मको
विरासतमें[6] ग़म छोड़ता है मसर्रत[7]
ख़ुशीमें न आमेज़[8] कर ग़मके आँसू
मुसीबतसे बढ़कर है ख़ौफ़े-मुसीबत
मुसलसल उम्मीदोंमें[9] है जि़न्दगानी
न दे दिलको मायूसियोंकी[10] इजाज़त

१. बुढ़ापेमें, २. पापोंसे, ३. मृत्युकी स्थिति, ४. उखड़ी हुई साँसको, मृत्यु समय आनेवाले क्रमबद्ध लम्बे-लम्बे साँसोंको, ५. शरीरकी इमारतको, ६. उत्तराधिकारमें, ७. खुशी, ८. सम्मिलित, ९. लगातार आशाओंमें, १०. निराश होनेको।

जवाबी गुफ़्तगू

[६ में-से ४]

मैं कहाँ था इसके क़ाबिल जो अता[1] हुआ है मुझको
मुझे रास आ गई है मेरी ज़िन्दगीकी ख़ामी[2]
मेरे इश्क़को मुबारक यह ख़तर पसन्द फ़ितरत[3]
मुझे लेके बढ़ रही है, मेरे ग़मकी नातमामी[4]
न सही अगर नहीं थी मेरी इब्तदाकी क़ीमत[5]
मगर आज है ग़नीमत मेरा लुत्फ़े-ख़ुश-कलामी[6]
मेरे सामने नहीं था कोई पुर शिकोह आक़ा
मेरी मुफ़लिसीने की है, मेरे वक़्तकी ग़ुलामी

एहसासे-नातमाम

मैं ख़ुदाके आसरेपर ज़ोरे-बाज़ूके तुफ़ैल[7]
दुश्मनोंमें रहके मक़बूले-ज़माना हो चुका
दीदए - अंजामे - बींसे माँगकर बाराने-अश्क
उम्रके दामनसे गुमनामीका धब्बा धो चुका
नुत्क़ आमादा नहीं हरगिज़ शिकायतके लिए
दर्दे-नाचारी मुझे बेदार पाकर सो चुका

—मुक़ामातसे

१. प्रदान, २. कमी, ३. ख़तरा मोल लेनेका स्वभाव, ४. अपूर्णता, ५. जीवनके प्रारम्भमें पूछ-ताछ, ६. शाइरी, ७. बाहुबलकी कृपासे ।

क़ते

[१२८ में-से २८]

दोपहर नज़दीक है, जंगलके लब[१] पर है सकूत[२]
इक किरन शाख़ोंसे छनकर आ रही है फूलपर
जैसे इक दोशीज़ए - मासूमपर[३] देहातमें
शहरके बे-ग़ैरतो - बे - [४]महर - इन्साँकी नज़र

चाँदसे कुछ दूर इक तारा चमकता है मुदाम[५]
दोनों अपने-अपने मरकज़से[६] मगर हिलते नहीं
जिस तरह दो तालिबो-मतलूब[७] नाराज़ीके बाद
तन्ह-तन्हा[८] राहमें चलते हैं और मिलते नहीं

दो पहरका वक़्त, हल्का अब्र[९], रुकी साँस बन्द
हौंकते जंगलके हर ज़र्रेसे[१०] ज़ाहिर है मलाल
जिस तरह देहातमें जब हो वबा[११] फैली हुई
मौतके बीमारको उम्रे-गुज़िश्ताका[१२] ख़याल

१. ओठपर, २. शान्ति, सन्नाटा, ३. भोली कुँवारी लड़कीपर, ४. निर्लज्ज, दुष्ट, ५. सदैव, ६. स्थानसे, ७. आशिक़ और माशूक़, अभिलाषी और अभिलषित, ८. अलग-अलग, ९. बादल, घटा, १०. कणसे, ११. बीमारी, १२. बीती हुई उम्रका।

जब किसीकी याद आकर तिलमिला जाता है दिल
जगमगा उठती है कुछ इस शानसे बज़्मे-दमाग़[१]
जैसे सावनकी बरसती रातमें इक नाज़नीं[२]
सहनमें ज़ीनेसे उतरे हाथमें लेकर चराग़

चाँदनीपर अब्रकी यूरिश[३] है और पिछला पहर
रेंगते फिरते हैं, यूँ वीराँ गली - कूचोंमें साये
जिस तरह सुनते ही, इक महबूब[४] महमाँकी ख़बर
छुपके कुनबे भरसे कोई नाज़नीं चिलमनमें[५] आये

दहलीका इक रईस ब-हंगामे-जाँ-कनी[६]
सर धुन रहा था चारागरोंमें[७] घिरा हुआ
जैसे फ़सूँगरोंके[८] झमेलेमें नीम शब[९]
खेले सियाह नागका ताज़ा डसा हुआ

सुबहसे ता-शाम भँवरा लाख कलियोंमें रहे
आ नहीं सकता मगर उसकी सियह सूईमें[१०] फ़र्क़
यूँ ही वह नेकोंमें रहकर नेक हो सकता नहीं
हो चुका हो सर-बसर जो ज़ुल्मते-इसयाँमें ग़र्क़[११]

---

१. मस्तिष्करूपी महफ़िल, २. कोमलाङ्गी, ३. बादलोंका आक्रमण, वर्षा, ४. प्रेमी अतिथिकी, ५. पर्देके पीछे, ६. मृत्युकी छटपटाहटमें, ७. चिकित्सकोंमें, ८. मंत्रोच्चारण करनेवालोंके, ९. आधी रातमें, १०. श्यामवर्णमें, ११. पापरूपी अँधेरेमें डूबा हुआ।

घास हालाकी ख़ुशीमें चार दिन लाया नहीं
आ गया है, इसलिए जग-जीतके खुरपेपै ज़ंग
यूँ ही जब इंसानको दौलतसे मिलता है सकूँ[१]
रूहसे मादूम[२] हो जाता है मुतलक़ आबो-रंग[३]

बे-ज़री[४] और उसमें उनका ख़्याल !
इक तजल्ली-सी[५] है, निगाहोंमें
दिलपै ऐसा समाँ मुसल्लत[६] है,
चाँदनी जैसे ख़ानक़ाहोंमें[७]

क़मरका अक़्स[८] है, तालाबके शफ़्फ़ाफ़[९] पानीमें
नसीमे-सर्दसे[१०] कम उम्र मौजें मुसकराती हैं
बयाबाँ फ़िक्रमें डूबा हुआ है चर्ख़ हैरतमें[११]
मुझे तो उनकी पेशानीकी शिकनें[१२] याद आती हैं

सहरके वक़्त[१३] जब शबनमपै[१४] नंगे पाँव फिरता हूँ
तो अक्सर इस तरह ख़ुशक़ल्बे-पुर-अरमान[१५] होता है
परेशानीमें जैसे दोस्तोंकी बज़्मसे[१६] उठकर
कहीं तनहाईमें रोनेसे इतमीनान होता है

१. चैन, २. आत्मारहित, ३. मानव शरीर (भोग-विलासमें मनुष्यकी आत्मापर ज़ंग लग जाता है), ४. निर्धनतामें, ५. रोशनी-सी, ६. आच्छादित, छाया हुआ, ७. दरगाहोंपर, ८. चाँदका प्रतिबिम्ब, ९. निर्मल, १०. ठण्डी हवाओंसे, ११. आकाश आश्चर्यमें, १२. माथेकी त्योरी, १३. प्रातःकाल, १४. ओस भरी घासपर, १५. अभिलाषाओंसे परिपूर्ण हृदय, १६. महफ़िलसे ।

मैं जब दिन भरके हंगामेको[1] दुहराता हूँ फ़ुर्सतमें
तो हर - इक साँस पैग़ामे-नदामत[2] लेके आती है
इरादा नेकियोंका जिस तरह अह्दे-जवानीमें
मुहब्बत जब रियाकी[3] चोट खाकर बैठ जाती है

मैं हूँ और कोहे-सुलेमाँकी बहुत ऊँची चट्टान
ख़ौफ़-सा तारी है, नीचे देखनेसे रूहपर
यह समाँ कुछ इस तरह महसूस होता है मुझे
मिल रही हो ज़िन्दगीसे मौतकी जैसे नज़र

बाग़में छूई-मूई वक़्ते-सहर[4]
नर्म झोंकोंसे लहलहाती है
जैसे इकलौते लालको लेकर
माँ निगाहोंसे मुसकराती है

जब कोई देता है, नफ़रतसे मुहब्बतका जवाब
इस तरह एहसासके मतलेपै[5] खिंचता है समाँ
दिन ढले जैसे किसी छोटे-से स्टेशनके पास
ज़र्दरू[6] खेतोंपै चलती रेलगाड़ीका धुआँ

१. व्यस्तताको, दौड़-धूपको, २. शर्मिन्दगीका सन्देश, आत्म-ग्लानिकी सूचना, ३. बनावटकी, धोकेकी, ४. प्रातःकाल, ५. चेतना-पटलपर, ६. पीले।

मुफ़लिसी और उसमें घरपर हमनशीनोंका[१] हुजूम
लबपै भीगा-सा तबस्सुम[२] दिलमें अन्दोहे-शदीद[३]
रूहपर[४] हैं इस तरह अफ़सुर्दगीकी यूरिशें[५]
जिस तरह परदेशमें बेकार[६] परदेशीकी ईद

मेंह बरसकर थम गया है, छट गये अब्रे-सियाह[७]
टहनियाँ हिलनेसे गिरती हैं, टपा-टप बूँदियाँ
जिस तरह यादे-वतनमें डूबते सूरजके वक़्त
क़ैदख़ानेमें नये क़ैदीके अश्कोंका समाँ

यासमें[८] बेदारिए-एहसासका[९] आलम[१०] न पूछ
ठेस यूँ लगती है दिलपर तानए-हमराज़से[११]
जिस तरह सर्दीकी अफ़सुर्दा अँधेरी रातमें
नींद उचट जाती है चौकीदारकी आवाज़से

रात है, बरसात है, मसजिदमें रौशन है चराग़
पड़ रही है रौशनी भीगी हुई दीवारपर
जैसे इक बेवाके आँसू डूबते सूरजके वक़्त
थम गये हों बहते-बहते चम्पई रुख़सारपर[१२]

१. मित्रोंका, मेहमानोंका, २, ओठोंपै मुसकान, ३. परेशानी, चिन्ता, ४. मनपर, प्राणोंपर, ५. मुर्झाहटका हमला, चिन्ताओंका आक्रमण, ६. बेरोज़गार, ७. काले बादल, ८. निराशामें, ९. चेतनाके जागरणका, १०. हाल, ११. मित्रके ताना देनेसे, १२. कपोलोंपर ।

जब कोई जुगुनू चमकता है अँधेरी रातमें
इस तरह ज़ुल्मतमें[1] लहराती है नूरानी[2] लकीर
जैसे नादारीमें[3] अक्सर दोस्तोंकी छेड़से
जाग-जाग उठता है इक ख़ुद्दार इंसाँका ज़मीर[4]

शामके बेनूर सन्नाटोंमें आबादीसे दूर
जा रहा है एक पत्ता नहरमें बहता हुआ
जैसे इक मज़दूर मज़दूरीसे घबराते हुए
मुश्किलोंकी दास्ताँ तक़दीरसे कहता हुआ

आस्माँपर हैं ख़रामाँ अब्रपारोंके हुजूम[5]
इस तरह खुल-खुलके छुपती है जबीने-आफ़ताब[6]
जिस तरह हमसायोंकी[7] आमदसे हंगामे-सहर[8]
घरमें शरमीली नई दुल्हनका अन्दाज़े-नक़ाब[9]

ले गई वह साथ सारी ज़िन्दगीकी रौनक़ें
घरका यह आलम[10] है उनके रूठकर जानेके बाद
जिस तरह देहातके स्टेशनोंपर दिन ढले
इक सकूते-मुज़महल गाड़ी गुज़र जानेके बाद

१. अँधेरीमें, २. प्रकाशमान, ३. ग़रीबीमें, ४. स्वाभिमानी मनुष्यकी अन्तरात्मा, ५. बादल समूह धीमे-धीमे चलते हुए, ६. सूर्य बादलोंमेंसे कभी झाँकता है, कभी छिपता है, ७. पड़ोसियोंकी, ८. सुबहके वक़्त, ९. घूँघटका अन्दाज़, १०. हाल ।

जिस तरह कुत्तेके मरजानेसे ज़ुल्फ़ी[१] है मलूल[२]
हम-नशीनोंपर[३] मगर कोई असर होता नहीं
यूँही जब इक ख़ुदग़रज़ इन्सानकी आती है मौत
अह्ले-ख़ानाके[४] सिवा कोई उसे रोता नहीं

सकूँकी जुस्तजू[५] इन्सानकी फ़ितरतमें[६] है लेकिन
हक़ीक़तमें ब-इतमीनान जीता है न मरता है
कोई शहरी फ़ज़ामें जैसे रस्ता भूलकर शबको[७]
यक़ीनो-बे-यक़ीनीकी मनाज़िलसे[८] गुज़रता है

अमलकी क़ूवतें[९] सोई हुई हैं नौए-इन्साँमें[१०]
इज़ाफ़ा[११] हो रहा है लेकिन इख़लाक़ी[१२] किताबोंका
यूँ ही जब उम्र ढलनेसे क़वा[१३] कमज़ोर होते हैं
ज़ईफ़ी[१४] रोज़ दुहराती है अफ़साना शबाबोंका[१५]

यह चमनका दौरे-नासाज़ी[१६] यह शाख़ें सोगवार[१७]
पेश्तर पतझड़से फ़स्ले-गुल गुज़र जानेके बाद
दीदनी[१८] है जा-बजा बिकसे हुए फूलोंका रंग
जिस तरह महबूब[१९], नज़रोंसे उतर जानेके बाद

१. एहसानके एक परिचितका नाम; २. उदास, ३. इष्ट-मित्रोंपर, ४. घरवालोंके, ५. शान्ति-चैनकी तलाश; ६. स्वभावमें, ७. रातको, ८. मार्गोंसे, ९. सदाचरण-शक्ति, १०. नवीन मानव पीढ़ीमें, ११. बढ़ोतरी, १२. सदाचारी, १३. इन्द्रियाँ, १४. वृद्धावस्था, १५. यौवन कहानी, १६. पतझड़का मौसम, १७. शोक संतप्त, १८. देखने योग्य, १९. माशूक़।

रूख़े-ख़ुर्शीद[1] पर हैं, ज़र्द[2] बादल
नहीं अब जरफ़िशाँ किरनोंका सहरा[3]
युँहीं ग़ल्ला गराँ[4] होनेसे 'एहसान!'
उतर जाता है इक मुफ़लिसका चहरा

—जादए-नौ

[३७ में-से ३]

दोपहर, मैदान, गर्मी, हब्स[5], अब्रे-बेमताअ्[6]
सरनगूँ[7] है ख़ारो-ख़सपर[8] इक गुले-फ़ीरोज़ाफ़ाम[9]
नादिमो-बेमायः[10], महज़ूँ[11], मुज़महल[12], अन्दोहगीं[13]
जैसे इक बेरहमो-बे-इंसाफ़ आक़ाका[14] ग़ुलाम

मुफ़लिसी और उसमें घरपर हमनशीनोंका[15] हुजूम
तीरगीमें यासकी[16], धुँदला गया हुस्ने-उमीद[17]
इस तरह है दिलपै इक अफ़सुर्दगी[18] छाई हुई
जिस तरह परदेशमें बेकार मज़दूरोंकी ईद

---

१. सूर्य्यके मुखपर, २. पीले, ३. किरनोंका सुनेहरा सेहरा, ४. अन्न महगा, ५. ऊमस, ६. पानी रहित बादल, ७. मस्तक झुकाये हुए, ८. काटों और घासपर, ९. नीलमणि जैसा फूल, १०. शर्मिन्दा और दरिद्र, ११. रंजीदा, ग़मगीन, १२. उदास, सुस्त, १३. दुःखी, १४. मालिकका, स्वामीका, १५. इष्ट-मित्रोंका, १६. निराशाकी अँधेरीमें, १७. आशा-का सौन्दर्य, १८. उदासी।

रो रहा था गोदमें अम्माँकी इक तिफ़्ले-हसीं[1]
इस तरह पलकोंपै आँसू हो रहे थे बे-क़रार
जैसे दीवालीकी शब[2], हल्की हवाके सामने
गाँवकी नीची मुँडेरोंपर चराग़ोंकी क़तार

—दर्दे-ज़िन्दगीसे

●

१. सुन्दर बालक, २. रात ।

जुर्म और गुनाह

अल्लाह-अल्लाह मुक़ामे-जुर्मो-गुनाह
हम जब उसपर निगाह करते हैं
जुर्म मिलते हैं फ़ाक़ा-मस्तोंमें[1]
अहले-दौलत[2] गुनाह करते हैं

देहातीसे

दिये जा सूदख़ोरोंको कमाई
यूँही दिलका लहू पानी कियेजा
पिलाएजा युँही साँपोंको अमृत
युँही चीतोंकी निगरानी कियेजा

ख़ुशामद

है ज़बानोंके फ़सूँका[3] रूहपर दारोमदार[4]
गर ज़मीं हो शोर[5] पौदा फूलता-फलता नहीं
इसमें क्या शक है, ख़ुशामद भी है, कारआमद, मगर
यह वह सिक्का है जो हर बाज़ारमें चलता नहीं

सवालचा

सुनते आये हैं कि इंसाँ अशरफ़ुल मख़लूक़[6] है,
और दुनियाका ख़ुदा ख़ालिक़[7] है, यह बातिल[8] नहीं !

१. भूकोंमें, २. धनिक, ३. वाणीका जादू, ४. आत्माको प्रभावित करता है, ५. नमकीनी लौनी, ६. विश्वके सर्व प्राणियोंमें श्रेष्ठ, ७-८. सृष्टि-का निर्माता ईश्वर है यह बात झूठ नहीं।

अब सवाल इतना-सा बाक़ी है कि आख़िर किस लिए
आदमीको लज़्ज़ते-दुनियाका हक़ हासिल नहीं ?

एक मुशाहिदेका तास्सुर

इस तरह कचेहरीमें नज़र आती है दुनिया
जिस तरह समन्दरमें तमव्वुज[1] हो गजरदम[2]
'एहसान' समझमें नहीं आता कि यह हलचल
क़ानूनकी पूजा है कि नौरोज़े-जराइम[3]

मुअज़्ज़िन[4] और मजज़ूब[5]

है यह तेरी पस्ती कि तू नाज़ाँ है दुआपर
उसकी यह बुलन्दी कि है, सिज्दा भी ग़ुलामी
माइल ब-दुआ होता है, इंसान उसी वक़्त
जब रूहकी नेकीमें नज़र आती है ख़ामी

इन्तक़ाम

तैश खाकर सरहदे-इदराकसे[6] आगे न बढ़
दरहमो-बरहम[7] न कर तस्कीनो-राहतका निज़ाम[8]
खौलने लगता है ख़ुद अपने लहूमें आदमी
दिलमें जब बेदार[9] हो जाता है, जोशे-इन्तक़ाम[10]

१-२. सूर्यकी किरणें लहरें मारती हों, ३. पापोंका मेला, ४. मस्जिद-में नमाजके समय अज़ान देने वाला, ५. तन्मय; तल्लीन, ६. अक़्लकी मीमासे, ७. छिन्न-भिन्न, ८. सुख-चैनकी व्यवस्था, ९. जागृत, १०. प्रतिशोधका भाव।

अमली यकसूई

हवादससे[1] उलझकर मुसकराना मेरी फ़ितरत[2] है
मुझे दुश्वारियोंपर अश्क[3] बरसाना नहीं आता
नज़र जिसकी जमी रहती है मुस्तक़बिलके[4] चेहरेपर
उसे माज़ीकी सफ़्फ़ाकी[5] को दुहराना नहीं आता

मेरी फ़ितरत

मेरे उस्तादे-शरीअ़तने[6] बताया है मुझे
सिर्फ़ तेशा[7] ही नहीं है आदमी आरी भी है
दोस्तोंमें नर्म दिल हो, दुश्मनोंमें सख़्तगीर
मेरी फ़ितरतमें ललकके साथ ख़ुद्दारी[8] भी है

सरे-राह एक मौत

सुबह इक ऊँचे महलके सामने फ़ुटपाथपर
वह समाँ देखा कि ख़ूँ आँसूमें भरकर रह गया
मख़मली गद्दोंपै कुत्ते रात भर सोते रहे
और इक मज़दूर परदेसी ठिठुर कर मर गया

—मुक़ामातसे

मातम

शौक़े-मातम ख़ूब शै है, कारे-मातम कुछ नहीं
सर्द पड़ जाते हैं, इससे सीनए-सोज़ाँके दाग़
आँसुओंके वास्ते आँखोंके दरवाज़े न खोल
दिलमें क्यों जलने नहीं देता मुहब्बतका चिराग़?

—नवाए-कारगरसे

१. मुसीबतोंसे, २. स्वभाव, ३. आँसू, ४. भविष्यके, ५. भूतकालीन अत्याचारोंको, ६. धार्मिक गुरुने, ७. कुदाल, ८. स्वाभिमान ।

गज़लोंसे चुने गये शेर

दिलोंके दौलत कदे हैं[1] ख़ाली, वफ़ाके जौहर[2] नहीं किसीमें
दुहाई ऐ दुश्मनो दुहाई, फ़रेब ख़ुर्दा[3] हूँ दोस्तीका
हर-एक सज्दा हुआ नुमायाँ,[4] ख़ुदीके[5] दामन पै दाग़ बनकर
ख़ुदासे भी मुनहरिफ़[6] हूँ जबसे मआल[7] देखा है बन्दगीका

न जाने मुहब्बतका अंजाम[8] क्या है
मैं अब हर तसल्लीसे घबरा रहा हूँ

हर-एक शै में[9] तुम मुसकराते हो गोया
हजारों हिजाबोंमें यह बेहिजाबी[10]
रहा गर्चे 'एहसान' दुश्मन ज़माना
मिटे इस तरह उनपै हस्ती मिटादी

थी आर्ज़ू कभी कि जबीं[11] आस्ताँ पै हो
अब तो यह है जबीं न रहे, आस्ताँ[12] रहे

जो करना था तेरे दीवानगाने-इश्क़ कर गुज़रे
सहर[13] अब हश्र तक हँसती रहे चाके-गरेबाँपर

तुम्हारी याद है मेरी किताबे-ग़मका दीबाचा[14]
ख़ुदा रक्खे यही टूटे हुए दिलका सहारा है

---

१. हृदय-मन्दिर, २. प्रत्युपकार या भलाईकी भावना, ३. धोखा खाया हुआ, ४. नमाज़में नतमस्तक होना प्रकट हो गया, ५. अहम्‌भावके, ६. मुँह फेरे हुए, विमुख, ७. परिणाम, ८. फल, ९. वस्तुमें, १०. बेपर्दगी, ११. मस्तक, १२. मस्तक टेकनेका स्थान, १३. सुबह, १४. भूमिका।

वह इश्क़ ख़ाक इश्क़ है, वह हुस्न ख़ाक हुस्न
जो क़ैद हो फ़सानए - हिज़्रो - विसालमें[1]

आज़ू[2] इक जुर्म है, जिसकी सज़ा है ज़िन्दगी
ज़िन्दगी भर आज़ूओंको पशेमाँ[3] कीजिए

हुस्नको दुनियाकी आँखोंसे न देख
अपनी इक तर्ज़े-नज़र ईजाद कर

—निगार जनवरी १९४१ ई०

है हुस्नो-इश्क़की फ़ितरतमें[4] फ़र्क़ बस इतना
वह हँस रहे हैं, हम आँसू बहाये जाते हैं

मैं उस मुक़ाम पै गुम हो गया जहाँ दिन-रात
मसीहो-ख़िज्रको रस्ते बताये जाते हैं

फ़ुग़ाँ-फ़ुग़ाँ[5]! कि जिन्हें मारे-आस्तीं[6] कहिए
वह लोग मेरे रफ़ीक़ोंमें[7] पाये जाते हैं,

वस्लका ख़्वाब[8] कुजा लज़्ज़ते-दीदार कुजा[9]
है ग़नीमत जो तेरा दर्द भी हासिल हो जाय

मंसूर बोल उठा रसनो-दार[10] देखकर
नाज़ाँ[11] हूँ अपने इश्क़का मेयार[12] देखकर

---

१. विरह और मिलनकी कहानीमें, २. अभिलाषा, ३. शर्मिन्दा, ४. सौन्दर्य्य और प्रेमके स्वभावमें, ५. हाय, ६. आस्तीनके साँप, ७. हितैषियोंमें, ८. मिलनका स्वप्न, ९. देखनेका आनन्द किसे प्राप्त, १०. सूली, ११. गर्वित, १२. उच्च लक्ष्य।

ख़ुर्शीद[१] हो कि गुल[२] हो क़मर[३] हो कि कहकशाँ[४]
देखेंगे और कुछ न रुख़े-यार[५] देख कर

ऐसा निगाहे-पीरे-मुग़ाँमें[६] असर है आज
शैख़े-हरम-नशींका[७] भी क़दमों पै सर है आज

यह सावन, यह घटा, यह बिजलियाँ, यह टूटती रातें
भला ऐसेमें दिलवालोंको कब आराम आता है

अदब ऐ जज़्बए-बेबाक ! यह आहो-फ़ुग़ाँ कैसी ?
कि ऐसी ज़िन्दगीसे मौतपर इलज़ाम आता है

मदद ऐ मर्गे-नाकामी[८] ! नक़ाहतका[९] यह आलम है,
बड़ी मुश्किलसे होंटों तक किसीका नाम आता है,

ख़ुदा रक्खे तुझे ऐ सरज़मीने-शहरे-ख़ामोशाँ[१०]
यहीं आकर हर इक बेचैनको आराम आता है

चाँद क्या शै है तेरा धुन्धला-सा इक नक़्शे-क़दम
चाँदनी क्या है तेरी गर्दे-ख़रामे-नाज़[११] है

मैं नाज़े-ना-ख़ुदा 'एहसान' आख़िर क्यों उठाऊँगा ?
भरोसा है, मेरी ग़रक़ाबियोंको ज़ोरे-तूफ़ाँ पर

तुम जिस घड़ी मिले थे बिछुड़नेके वास्ते
अब उस घड़ीको ढूँढके लायें कहाँसे हम ?

—नवाए-कारगर

१. सूर्य्य, २. फूल, ३. चन्द्रमा, ४. आकाश गंगा, ५. प्रियतमाका मुख, ६. मदिरालयके स्वामीकी आँखोंमें आकर्षण, ७. मस्जिदके धर्माचार्यका। ८. असफलताकी मृत्यु, ९. दुर्बलताका, १०. क़ब्रिस्तान, ११. नज़ाकत भरी चालकी धल।

याद तुम आये जहाँ, झुक गये सिज्देमें वहीं
हमने काबा कभी देखा न कलीसा देखा

दीदके क़ाबिल तमाशा था यह हंगामे-सहर
शमअ़का हर साँस महवे - मातमे - परवाना था

है फूल-फूल पै सिज्दा कली-कली पै सलाम
यह हाल है मेरा इक बन्दए - ख़ुदाके लिए

कहाँ करामत यह वाइज़ोंमें गदाए-मैख़ाना अल्ला अल्ला
निगाह जर्फ़े-वज़ू पै डालें तो दममें जामे-शराब कर दें

ऐ बर्क़े-हुस्न ! क्या मुझे मूसा समझ लिया ?
मुद्दत हुई कि फूँक चुका अपने घरको मैं

—आतिशे-ख़ामोश

आओ मिलकर तसफ़ीर[1] करलें मुक़द्दम[2] कौन है
हासिले-मैख़ाना[3] तुम हो, रौनक़े-मैख़ाना[4] हम

एक अफ़सानेके[5] दो उनवान[6] हैं मर्गो-हयात[7]
एक उनमें ख़्वाब[8] है, इक ख़्वाबकी ताबीर[9] है

दोस्ती और वज़अ़दारीमें[10] है वह नाज़ुक-सा[11] फ़र्क़
दिलकी दुनिया लुटती रहती है, ख़बर होती नहीं

१. निर्णय, २. प्रमुख, विशेष, ३. मदिरालयकी जान, ४. मदिरालय-की शोभा, ५. कहानीके, ६. शीर्षक, ७. मृत्यु और जिन्दगी, ८. स्वप्न, ९. स्वप्नका फल, १०. किसी बातको मृत्यु पर्यन्त निभाना, ११.तनिक-सा।

मुतमईन[1] मर्दोंको कर सकते नहीं चंगो-रुबाब[2]
गुलशनोंमें शाहबाजोंकी[3] बसर होती नहीं
ग़ममें लज़्ज़त[4] दर्दमें राहत[5] नहीं बच्चोंका खेल
आँसूओंमें दिलके टुकड़ोंका इज़ाफ़ा[6] कीजिए
रूहका पिन्दार[7] टूटे सरसे पहिले दिल झुके
सिज्दा करना है तो फिर इस तरह सिज्दा कीजिए
ज़िन्दगी हर मोड़पर मुझको यह देती है सदा[8]
फ़िक्रे-फ़र्दा[9] छोड़िए तामीरे-फ़र्दा[10] कीजिए

—मुक़ामातसे

१५ जनवरी, १९६० ई०]

•

१. सन्तुष्ट, २. ढफ और वायलियन, ३. बाज पक्षियोंकी, ४. आनन्द, ५. चैन, ६. वृद्धि, ७. आत्माका अभिमान, ८. आवाज़, ९. परलोककी चिन्ता, भविष्यकी फ़िक्र, १०. भविष्यके निर्माणका कार्य।

उर्दू-शाइरीका प्रामाणिक

इतिहास, तुलनात्मक अध्ययन, साहित्यिक-विवेचन

और

प्रारम्भसे वर्त्तमान कालीन तकके शाइरोंका

सर्वश्रेष्ठ कलाम और परिचय

शेर-ओ-शाइरी पृ० ६३९ ८)
[सर्वश्रेष्ठ ३१ शाइरोंका कलाम]

शेर-ओ-सुख़न पाँच भाग पृ० १८८२ २०)
[प्रारम्भसे १९५९ तककी ग़ज़लपर अनुसन्धान]

शाइरीके नये दौर चार भाग पृ० १०५४ १२)
[१९२० से १९५९ तककी नवीन शाइरी]

शाइरीके नये मोड़ चार भाग पृ० १०५४ १२)
[प्रगतिशील और प्रयोगवादी शाइरी]

उक्त ग्रन्थोंके ४६२९ पृष्ठोंमें जिन ख्यातिप्राप्त १८२ शाइरोंका परिचय एवं कलाम दिया गया है, उनकी वर्णानुक्रम सूची आगेके पृष्ठोंमें दी गई है।

शाइरोंकी वर्णानुक्रम सूची

नाम शाइर	शेरो-शाइरी पृ०	शेरो-सुख़न भाग	शाइरीके दौर	शाइरीके मोड़
[अ]				
अकबर इलाहाबादी	२९४			
अकबर हैदरी		चौथा		
अख़्तर		पहला		
अख़्तर वाजिद अलीशाह		पहला		दूसरा
अख़्तर अन्सारी				
अख़्तर शीरानी	५०३		चौथा	तीसरा
अख़्तर जाँनिसार				
अख़्तर हरीचन्द			दूसरा	
अज़ीज़ लखनवी		दूसरा		
अदम			चौथा	
अनवर		पहला		
अफ़सोस		पहला		
अब्दुल्ला क़ुतुबशाह		पहला		
अब्दुल हसन तानाशाह		पहला		
अमजद अलीशाह		पहला		
अमजद हैदराबादी		तीसरा		
अम्न लखनवी			दूसरा	

नाम शाइर	शेरो-शाइरी पृष्ठ	शेरो-सुख़न भाग	शाइरीके दौर	शाइरीके मोड़
आसफ़, आसफ़ुद्दौला		पहला		
आसी ग़ाज़ीपुरी		तीसरा		
आसी उदनी		चौथा		
[इ]				
इक़बाल	३०७			
इब्राहिम आदिलशाह		पहला		
इंशा		,,		
इशरत महल		,,		
इस्माइल मेरठी			दूसरा	
[उ]				
उमराव महल		पहला		
उम्मीद उमेठवी		दूसरा		
[ए]				
एहसान दानिश	४१७		चौथा	
[क]				
क़ायम चाँदपुरी		पहला		
क़ल्क़		,,		
कैफ़ी दत्तात्रय		तीसरा		
[ख]				
ख़लील		पहला		
[ग]				
ग़ाज़ीउद्दीन हैदर		पहला		
ग़ालिब	२०६	,,		
[च]				
चकबस्त	३४७			

नाम शाइर	शेरो-शाइरी पृष्ठ	शेरो-सुख़न भाग	शाइरीके दौर	शाइरीके मोड़
सालिक क़ुरबान अली		पहला		
माहिर लुधियानवी	५५७			चौथा
माहिर अमरनाथ		तीसरा		
सिराज		पहला		
सीमाब अकबराबादी	४०५	चौथा		
सोज़		पहला		
सौदा		,,		
[ह]				
हफ़ीज़ जालन्धरी	४५६		दूसरा	
हफ़ीज़ जौनपुरी		दूसरा		
हविस		पहला		
हसन देहलवी		,,		
हसन बरेलवी		चौथा		
हसरत		पहला		
हसरत मोहानी	५८४	तीसरा		
हातिम		पहला		
हाली	२७४	,,		
हिजाब बेगम		,,		
हिदायत		,,		
हूर बेगम		,,		
हैदरी बेगम		,,		

●

विषय-सूची

शेरो-शाइरी, शेरो-सुख़नके पाँचों भागोंमें, शाइरीके नये दौर और नये मोड़में जिन महत्त्वपूर्ण-आवश्यक विषयोंपर विवेचन हुआ है, उनकी संक्षिप्त सूची यहाँ दी जा रही है। इस सूचीके अतिरिक्त बहुत-से उपयोगी अंगोंपर शाइरोंके परिचय एवं कलाममें भी व्याख्याएँ की गई हैं, उनकी सूची विस्तार-भयसे यहाँ नहीं दी जा रही है। वह प्रत्येक पुस्तकके प्रारम्भकी विषय-सूचीमें देखी जा सकती है।

शेरो-शाइरी

शेरो-सुख़न

शाइरीके नये दौर

पहला दौर

दूसरा दौर

प्राथमिक

[नज़्मका इतिहास]

तीसरा दौर

चौथा दौर

शाइरीके नये मोड़

पहला मोड़

नई-लहर

नवीन धारा

बज़्मे-अदब

दूसरा मोड़

तीसरा और चौथा मोड़

[प्रेसमें]